Hindi Saber Mantat

वुडू प्रयोग ,पुतली विद्या और काला जादू

[Vudoo spell ,Putli Vidya and Black Magic]

==================================== [[भाग -१]]

वूडू एक ऐसी विद्या है जो एक धर्म का रूप ले चुकी है |यह जादूगरों के धर्म के रूप में जानी जाती है और मूल रूप से इसका नाम अफ्रीका के आदिवासियों से सम्बन्ध रखता है |वुडू नाम ही अफ्रीका से सम्बंधित होता है ,जबकि इस तरह के जादू से समबन्धित प्रायोगिक धर्म दुनिया के हर हिस्से में भिन्न रूप से आदिम जनजातियों में पाए जाते हैं |हर देश और क्षेत्र में इसका नाम और प्रायोगिक तरीका थोड़े बहुत फेरबदल के साथ अलग हो सकता है लेकिन मूलतः यह जादू -टोने ,झाड़ -फूंक ,स्थानीय देवता और स्थानीय परंपरा से सम्बंधित होता है |

इसे पूरे अफ्रीका का धर्म माना जा सकता है, लेकिन केरीबी द्वीप समूह में आज भी यह जादू की धार्मिक परंपरा जिंदा है और यहाँ इसे वास्तविक माना जाता है । इसे यहां वूडू कहा जाता है।इसी के नाम पर पुतली विद्या को लोग वुडू के नाम से जानने लगे | हाल-फिलहाल बनीन देश का उइदा गांव वूडू बहुल क्षेत्र है। यहां सबसे बड़ा वूडू मंदिर है, जहां विचित्र देवताओं के साथ रखी है जादू-टोने की वस्तुएं। धन-धान्य, व्यापार और प्रेम में सफलता की कामना लिए अफ्रीका के कोने-कोने से यहां लोग आते हैं। कई गांवों में वूडू को देवता माना जाता है. देवता से मनोकामना पूरी करने की मांग की जाती है. एक वूडू देवता का नाम जपाटा है यानि पृथ्वी का देवता.देवताओं की पूजा के दौरान एल्कोहल, बीयर और सिगरेट भी चढ़ाई जाती है. कुछ जगहों पर मुर्गी या बकरे की बलि भी दी जाती है. लोग मानते हैं कि हर देवता का खुश होने का अपना स्टाइल है.जो लोग भविष्य जानना चाहते हैं, वे फा कहे जाने वाले ओझाओं से मिलते है. कोई भी सवाल नहीं किया जा सकता. अपनी मृत्यु के बारे में सवाल करना वर्जित है..

वूडू प्रकृति के पंचतत्वों पर विश्वास करते हैं। जैसा की भारत के आदिवासियों में समूह में गाने और नाचने की परंपरा है वैसा ही वूडू नर्तक परंपरागत ढोल-डमरूओं की ताल पर नाच कर देवताओं का आह्वान करते हैं। ये प्रार्थनागत नाच गाना कई घंटों तक चलता है। इस तरह की परंपरा को अंग्रेजी में टेबू कह सकते हैं। यह आज भी दुनिया भर में जिंदा है। नाम कुछ भी हो पर इसे आप आदिम धर्म कह सकते हैं। इसे लगभग 6000 वर्ष से भी ज्यादा पुराना धर्म माना जाता है। ईसाई और इस्लाम धर्म के प्रचार-प्रसार के बाद इसके मानने वालों की संख्या घटती गई और आज यह पश्चिम अफ्रीका के कुछ इलाकों में ही सिमट कर रह गया है। हालांकि वूडू को आप बंजारों, आदिवासियों, जंगल में रहने वालों का काल्पनिक या पिछड़ों का धर्म मानते हैं, लेकिन गहराई से अध्ययन करने पर पता चलता है कि वूडू की परंपरा आज के आधुनिक धर्म में भी न्यू लुक के साथ मौजूद है। भारत में तांत्रिकों और शाक्तों का धर्म कुछ-कुछ ऐसा ही माना जा सकता है। क्या चर्च में भूत भगाने के उपक्रम नहीं किए जाते? मंदिर में भूत -प्रेत का निवारण नहीं होता ,तांत्रिकों में आदिम मन्त्रों का प्रयोग और आदिम पद्धतियों का प्रयोग नहीं होता |यह सब प्राचीन इन्ही परम्पराओं से स्थान विशेष के साथ थोडा थोडा बदलते हुए सूदूर क्षेत्र तक जाकर अलग रूप ले लेता है |

वुडू की मुख्य विशेषता इसमें इस्तेमाल होने वाले जानवरों के शरीर के हिस्से व पुतले हैं | इसमें जानवरों के अंगों से समस्या समाधान का दावा किया जाता है। इस जादू से पूर्वजों की आत्मा किसी शरीर में बुलाकर भी अपना काम करवा सकते हैं। इसके अलावा दूर बैठे इंसान के रोग व परेशानी के इलाज के लिए पुतले का भी उपयोग किया जाता है। वूडू जानने वालों का मानना है कि इस धरती पर मौजूद हर जीव शक्ति से परिपूर्ण है। इसलिए उनकी ऊर्जा का उपयोग करके बीमारियों को ठीक किया जा सकता है। काला जादू के विशेषज्ञों के अनुसार यह वो ऊर्जा (शक्ति) है जिसका इस्तेमान नहीं होता।भारतीय वैदिक परंपरा और तंत्र शास्त्र दोनों में पुतली निर्माण की अवधारणा रही है और इसका भिन्न रूपों में उपयोग भी वैदिक काल से ही रहा है जबकि वैदिक काल लाखों वर्ष पूर्व का माना जाता है ,यद्यपि प्रक्रिया और पदार्थ भिन्न हो जाते हैं |एशिया की आदिम जनजातियों में यही प्रक्रिया अलग रूप में पाने जाती है और अलग धर्म में अलग रूप में |इसे यहाँ वुडू की तरह धर्म का रूप तो नहीं प्राप्त किन्तु इसका प्रयोग हमेशा से होता आया है |जैसे किसी खोये व्यक्ति के न मिलने पर उसे मृतक मान उसका पुतला बनाकर आह्वान कर उसका शव दाह करना |पूजन में विभिन्न खाद्य वस्तुओं से विभिन्न जंतु अथवा शरीर की आकृति का निर्माण कर विविध उपयोग करना |मिटटी के पुतले आदि का निर्माण कर

उसपर विभिन्न क्रियाएं करना ,धातु के पुतलों का उपयोग आदि |यह वैदिक और पुरातन काल से हो रहा अर्थात वुडू से भी प्राचीन विद्या यह हमारे संस्कृति में हैं |[Tantra Marg ब्लॉग के लिए लिखित लेख -क्रमशः]

वुडू को लोग काला जादू मानते हैं ,पुतली विद्या को लोग काला जादू मानते हैं जबकि ऐसा बिलकुल भी नहीं है |दोनों में ही मूल अवधारणा लोगों की भलाई ही थी किन्तु जिस प्रकार तंत्र का उपयोग स्वार्थ हेतु करने से वह दुरुपयोग हो गया वैसा ही वुडू के साथ हुआ और हर प्रकार की ऐसी क्रियाओं के साथ हुआ |कारण यह की यह विद्या ऊर्जा उपयोग और ऊर्जा प्रक्षेपण की है जिसको इच्छानुसार प्रयोग किया जाता है |जब यह इच्छा स्वार्थ हो तो दुरुपयोग हो जाती है और जब यह इच्छा लोगो की भलाई की हो तो सदुपयोग हो जाती है |वास्तव में वुडू ,पुतली निर्माण अथवा ऐसी समस्त विद्याएँ तंत्र विज्ञान के अंतर्गत आती हैं जिनका अपना निश्चित विज्ञान होता है जो आज के विज्ञान से भी बहुत आगे हैं |यह एक बहुत ही दुर्लभ प्रक्रिया है जिसे बहुत ही विशेष परिस्थितियों में अंजाम दिया जाता है। इसे करने के लिए उच्च स्तर की विशेषज्ञता की जरूरत होती है।कुछ ही लोग इसे करने में सक्षम होते हैं। इस प्रक्रिया में गुड़िया जैसी मूर्ति का इस्तेमाल होगा है। यह गुड़िया कई तरह की खाने की चीजों जैसे बेसन, उड़द के आटे ,कपडे ,धातु ,लकड़ी ,बाल ,वनस्पति ,पौधे अथवा उनके अवयव आदि से बनाया जाता है ,जैसी क्षेत्र विशेष अथवा समुदाय विशेष की परंपरा हो अथवा जैसी जरुरत हो । इसमें विशेष मंत्रों से जान डाली जाती है। उसके बाद जिस व्यक्ति पर जादू करना होता है उसका नाम लेकर पुतले को जागृत किया जाता है। इस प्रक्रया को सीखने के लिए व्यक्ति को विशेष प्रार्थना और पूजा पाठ करनी पड़ती है। कड़ी तपस्या के बाद ही यह सिद्धि प्राप्त होती है |

काला जादू हो या सफ़ेद जादू अथवा कोई भी व्यक्ति विशेष पर आधारित तांत्रिक क्रिया यह और कुछ नहीं बस एक संगृहित ऊर्जा है। जो एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजा जाता है या कहें एक इंसान के द्वारा दूसरे इंसान पर भेजा जाता है। विज्ञान की भाषा में ऊर्जा को न तो बनाया जा सकता है, न खत्म किया जा सकता है, उसे सिर्फ एक रूप से दूसरे रूप में बदला जा सकता है। यदि ऊर्जा का सकारात्मक इस्तेमाल है, तो नकारात्मक इस्तेमाल भी है। ऊर्जा सिर्फ ऊर्जा होती है, वह न तो पॉजीटिव होती है, न नेगेटिव। आप उससे कुछ भी कर सकते हैं।वुडू अथवा पुतली विद्या व्यक्ति विशेष अथवा किसी एक मूल व्यक्ति पर ही मूल रूप से आधारित विद्या है जबकि भारतीय मूल तंत्र आदि बहु आयामी प्रयोग पर आधारित हैं |वुडू आदि जैसी विद्याओं में स्थानीय मन्त्रों ,स्थानीय वस्तुओं का उपयोग होता है जैसे हमारे यहाँ मूलतः व्यक्ति आधारित ग्रामीण क्रियाओं में शाबर मन्त्रों का उपयोग होता है |ऐसा ही हर जाती ,जनजाति ,धर्म ,क्षेत्र में होता है और इसमें मुख्य शक्ति भी स्थानीय देवता ही होता है | पुतले से किसी इंसान को तकलीफ पहुंचाना इस जादू का उद्देश्य नहीं है। इसे भगवान शिव ने अपने भक्तों को दिया था भारिय परंपरा और तंत्र में ,जबकि अन्य जगह इसे वहां का स्थानीय देवता अपने लोगों की भलाई के लिए दिया अथवा बताया होता है । पुराने समय में इस तरह का पुतला बनाकर उस पर प्रयोग सिर्फ कहीं दूर बैठे रोगी के उपचार व परेशानियां दूर करने के लिए किया जाता था। कुछ समय तक ऐसा करने पर तकलीफ खत्म हो जाती थी। मगर समय के साथ-साथ इसका दुरुपयोग होने लगा।वुडू में भी यही परम्परा रही और हर प्रकार के पुतला निर्माण में भी |वैदिक पुतला निर्माण बिलकुल अलग प्रक्रिया थी जिसमे इसे मुक्ति और मोक्ष तक जोड़ा गया है |

कुछ स्वार्थी लोगों ने इस प्राचीन विधा को समाज के सामने गलत रूप में स्थापित किया। तभी से इसे काला जादू नाम दिया जाने लगा। दरअसल, उन्होंने अपनी ऊर्जा का उपयोग समाज को नुकसान पहुंचाने के लिए किया। गौरतलब है जिस तरह जादू की सहायता से सकारात्मक या धनात्मक ऊर्जा पहुंचाकर किसी के रोग व परेशानी को दूर किया जा सकता है। ठीक उसी तरह सुई के माध्यम से किसी तक अपनी नकारात्मक ऊर्जा पहुंचाकर। उसे तकलीफ भी दी जा सकती है। जब यह किसी को कष्ट देती है अथवा हानि पन्हुचाती है तब यह काला जादू कहलाती है ,और जब लाभ पहुचाती है तो सफ़ेद जादू ,यद्यपि यह दोनों ही नाम बस भ्रम हैं ,जादू कोई भी न काला होता है न सफ़ेद |यह तो बस ऊर्जा का उपयोग और उसका एक स्थान से दुसरे स्थान तक स्थानान्तरण और स्वरुप परिवर्तन मात्र है |सदुपयोग -दुरुपयोग दोनों उसी प्रक्रिया से हो सकता है जो करता की इच्छा पर निर्भर करता है |..........[क्रमशः][[अगला अंक -पुतली विद्या अथवा वुडू कैसे कार्य करता है]]..हर -हर महादेव

शरीर की कमजोरी,चक्कर आना,B P हाई या low होना ::

★दिमाग में Blood पर्याप्त मात्रा में न पहुंचने पाने पर या फिर ब्लड प्रेशर कम या अधिक हो जाने पर चक्कर आने लगते है, जिसे vertigo कहते है चक्कर आने के कारण शरीर में खून की कमी, कान में संक्रमण होना, माईग्रेन, धूप में रहना, आंखों की समस्या, गर्मी, सिर की ताजा चोट, हृदय के रोग, अधिक संभोग करना, अर्बुद, खून में कैल्शियम का स्तर बिगड जाना और महिलओं में मासिक धर्म की खराबी हो जाना ये आम बात हो गई है।
इसके लिए ये उपाय करे::

★ 10 ग्राम गेहूं,

★ 5 ग्राम पोस्तदाना,

★ 7 बादाम,

★ 7कद्दू के बीज

---इन सबको लेकर थोडे से पानी के साथ पीसकर इनका पेस्ट बनालें। अब कढाई में थोडा सा गाय का घी गरम करें और इसमें 2-3 लोंग पीसकर डाल दें। अब बनाया हुआ पेस्ट इसमें डालकर एक मिनट आंच दें। इस मिश्रण को एक गिलास दूध में घोलकर पियें। चक्कर आने में असरदार स्वादिष्ट नुस्खा है।

★ हमेशा करे,,

(1) नारियल का पानी रोज पीने से चक्कर आना बंद हो जाते हैं।
(2) खरबूजे के बीज की गिरी गाय के घी में भुन लें। इसे पीसकर रख लें। 5 ग्राम की मात्रा में सुबह शाम लेने से चक्कर आने की समस्या से मुक्ति मिल जाती है।
(3) 15 ग्राम मुनक्का देशी घी में भुनकर उस पर सैंधा नमक बुरककर सोते समय खाने से चक्कर आने का रोग मिट जाता है।
(4) सूखा आंवला पीस लें। दस ग्राम आंवला चूर्ण और 10 ग्राम धनिया का पावडर एक गिलास पानी में डालकर रात को रख दें। सुबह अच्छी तरह मिलाकर छानकर पी जाएं। चक्कर आने में आशातीत लाभ होगा।
(5) अदरक लगभग 20 ग्राम की मात्रा में बारीक काटकर पानी में उबालें आधा रह जाने पर छानकर पीयें। अदरक का रस भी इतना ही उपकारी है।सब्जी बनाने में भी अदरक का भरपूर उपयोग करें। चाय बनाने में अदरक का प्रयोग करें।अदरक किसी भी तरह खाएं चक्कर आने के रोग में आशातीत लाभकारी है।

(6) तुलसी के 20 पत्ते पीसकर शहद मिलाकर चाटने से चक्कर आने की समस्या काफ़ी हद तक नियंत्रण में आ जाती है।
(7) काली-मिर्च चबाने से जी नहीं मिचलाता और चक्कर नहीं आते।

परहेज करे::

★★. चाय,काफ़ी और तली गली मसालेदार चीजों से परहेज करना आवश्यक है ।

आइये समाज में फैले कुछ षड्यंत्रों पर प्रकाश डालें :-

अर्धसत्य ---फलां फलां तेल में कोलेस्ट्रोल नहीं होता है!

पूर्णसत्य --- किसी भी तेल में कोलेस्ट्रोल नहीं होता ये केवल यकृत में बनता है । ✅

अर्धसत्य ---सोयाबीन में भरपूर प्रोटीन होता है !

पूर्णसत्य---सोयाबीन सूअर का आहार है मनुष्य के खाने लायक नहीं है! भारत में अन्न की कमी नहीं है, इसे सूअर आसानी से पचा सकता है, मनुष्य नही ! जिन देशों में 8 -9 महीने ठण्ड रहती है वहां सोयाबीन जैसे आहार चलते है । ✅

अर्धसत्य---घी पचने में भारी होता है

पूर्णसत्य---बुढ़ापे में मस्तिष्क, आँतों और संधियों (joints) में रूखापन आने लगता है, इसलिए घी खाना बहुत जरुरी होता है !और भारत में घी का अर्थ देशी गाय के घी से ही होता है । ✅

अर्धसत्य---घी खाने से मोटापा बढ़ता है !

पूर्णसत्य---(षड्यंत्र प्रचार) ताकि लोग घी खाना बंद कर दें और अधिक से अधिक गाय मांस की मंडियों तक पहुंचे, जो व्यक्ति पहले पतला हो और बाद में मोटा हो जाये वह घी खाने से पतला हो जाता है✅

अर्धसत्य---घी हृदय के लिए हानिकारक है !

पूर्णसत्य---देशी गाय का घी हृदय के लिए अमृत है, पंचगव्य में इसका स्थान है । ✅

अर्धसत्य---डेयरी उद्योग दुग्ध उद्योग है !

पूर्णसत्य---डेयरी उद्योग -मांस उद्योग है! यंहा बछड़ो और बैलों को, कमजोर और बीमार गायों को, और दूध देना बंद करने पर स्वस्थ गायों को कत्लखानों में भेज दिया जाता है! दूध डेयरी का गौण उत्पाद है । ✅

अर्धसत्य---आयोडाईज नमक से आयोडीन की कमी पूरी होती है !

पूर्णसत्य--- आयोडाइज नमक का कोई इतिहास नहीं है, ये पश्चिम का कंपनी षड्यंत्र है आयडाइज आयोडीन नहीं पोटेशियम आयोडेट होता है जो भोजन पकाने पर गर्म करते समय उड़ जाता है स्वदेशी जागरण मंच के विरोध के फलस्वरूप
सन्2000 में भाजपा सरकार ने ये प्रतिबन्ध हटा लिया था, लेकिन कांग्रेस ने सत्ता में आते ही इसे फिर से लगा दिया ताकि लूट तंत्र चलता रहे और विदेशी कम्पनियाँ पनपती रहे । ✅

अर्धसत्य--- शक्कर (चीनी) का कारखाना !

पूर्णसत्य--- शक्कर (चीनी) का कारखाना इस नाम की आड़ में चलने वाला शराब का कारखाना शक्कर इसका गौण उत्पाद है । ✅

अर्धसत्य---शक्कर (चीनी) सफ़ेद जहर है !

पूर्णसत्य--- रासायनिक प्रक्रिया के कारण कारखानों में बनी सफ़ेद शक्कर(चीनी) जहर है ! पम्परागत शक्कर एकदम सफ़ेद नहीं होती ! थोडा हल्का भूरा रंग लिए होती है ! ✅

अर्धसत्य--- फ्रिज में आहार ताज़ा होता है !

पूर्णसत्य--- फ्रिज में आहार ताज़ा दिखता है पर होता नहीं है जब फ्रिज का अविष्कार नहीं हुआ था तो इतनी देर रखे हुए खाने को बासा / सडा हुआ खाना कहते थे । ✅

अर्धसत्य--- चाय से ताजगी आती है!

पूर्णसत्य--- ताजगी गरम पानी से आती है! चाय तो केवल नशा(निकोटिन) है । ✅

अर्धसत्य---एलोपैथी स्वास्थ्य विज्ञान है !

पूर्णसत्य---एलोपैथी स्वास्थ्य विज्ञानं नहीं चिकित्सा विज्ञान है!

अर्धसत्य---एलोपैथी विज्ञानं ने बहुत तरक्की की है !

पूर्णसत्य--- दवाई कंपनियों ने बहुत तरक्की की है! एलोपैथी में मूल दवाइयां 480-520 है जबकि बाज़ार में 1 लाख से अधिक दवाइयां बिक रही है । ✅

अर्धसत्य--- बैक्टीरिया वायरस के कारण रोग होते हैं !

पूर्णसत्य--- शरीर में बैक्टीरिया वायरस के लायक वातावरण तैयार होने पर रोग होते हैं ! ✅

अर्धसत्य--- आज के युग में मार्केटिंग का बहुत विकास हो गया है !

पूर्णसत्य--- मार्केटिंग का नहीं ठगी का विकास हो गया है ! माल गुणवत्ता के आधार पर नहीं विभिन्न प्रलोभनों व जुए के द्वारा बेचा जाता है !
जैसे क्रीम गोरा बनाती है!भाई कोई भैंस को गोरा बना के दिखाओ ! ✅

अर्धसत्य--- टीवी मनोरंजन के लिए घर घर तक पहुँचाया गया है !

पूर्णसत्य--- जब टी वी नहीं था तब लोगों का जीवन देखो और आज देखो जो आज इन्टरनेट पर बैठे सुलभता से जीवन जी रहे हैं !उन्हें अहसास नहीं होगा कंपनियों का माल बिकवाने और परिवार व्यवस्था को तोड़ने,पहुँचाया जाता है ! ✅

अर्धसत्य--- टूथपेस्ट से दांत साफ होते हैं !

पूर्णसत्य--- टूथपेस्ट करने वाले यूरोप में हर तीन में से एक के दांत ख़राब हैं दंतमंजन करने से दांत साफ होते हैं मंजन -मांजना, क्या बर्तन ब्रश से साफ होते हैं ? मसूड़ों की मालिश करने से दांतों की जड़ें मजबूत भी होती हैं ! ✅

अर्धसत्य--- साबुन मैल साफ कर त्वचा की रक्षा करता है !

पूर्णसत्य--- साबुन में स्थित केमिकल (कास्टिक सोडा, एस. एल. एस.) और चर्बी त्वचा को नुकसान पहुंचाते हैं, और डाक्टर इसीलिए चर्म रोग होने पर साबुन लगाने से मना करते हैं ! साबुन में गौ की चर्बी पाए जाने पर विरोध होने से पहले हिंदुस्तान लीवर हर साबुन में गाय की चर्बी का उपयोग करती थी। ✅

★किडनी को साफ़ करें वह भी सिर्फ 5 रुपये में।
✅ हमारी किडनी एक बेहतरीन फिल्टर हैं जो सालों से हमारे खून की गंदगी को साफ़ करने का काम करती हैं मगर हर फिल्टर की तरह इसको भी साफ़ करने की जरूरत हैं ताकि ये और भी अच्छा काम करें।
आज हम आपको बता रहे हैं इसकी सफाई के बारे में और वह भी सिर्फ 5 रुपये में।
✅ एक मुट्ठी भर धनिया लीजिए इसको छोटे छोटे टुकड़ों में काट लें और अच्छी तरह धुलाई कर ले। फिर एक बर्तन में १ लीटर पानी डाल कर इन टुकड़ों को डाल दे, 10 मिनट तक धीमी आँच पर पकने दे, बस अब इसको छान लें और ठंडा होने दो अब इस ड्रिंक को हर रोज़ एक गिलास खाली पेट पिएँ। आप देखेंगे के आपके पेशाब के साथ सारी गंदगी बाहर आ रही हैं। ✅

NOTE : - इसके साथ थोड़ी से अजवायन डाल लें तो सोने पे सुहागा हो जाए।

अब समझ आया कि हमारी माँ अक्सर धनिये की चटनी क्यों बनाती थी और हम आज उनको old fashion कहते हैं।

POST को share करना न भूलें ।

महाशक्तिशाली बगलामुखी यन्त्र /कवच

========================

सार्वभौम उन्नति ,लाभप्रद ऊर्जा प्रवाह और नकारात्मकता ,भूत -प्रेत के शमन हेतु

भगवती बगलामुखी दस महाविद्याओं में से एक प्रमुख महाविद्या और शक्ति हैं ,जिन्हें ब्रह्मास्त्र विद्या या शक्ति भी कहा जाता है |यह परम तेजोमय शक्ति है जिनकी शक्ति का मूल सूत्र -प्राण सूत्र है |प्राण सूत्र ,प्रत्येक प्राणी में सुप्त अवस्था में होता है जो इनकी साधना से चैतन्य होता है ,इसकी चैतन्यता से समस्त षट्कर्म भी सिद्ध हो सकते है ,,बगलामुखी को सिद्ध विद्या भी कहा जाता है ,मूलतः यह स्तम्भन की देवी है पर समस्त षट्कर्म इनके द्वारा सिद्ध होते है और अंततः यह मोक्ष प्रदान करने में सक्षम है ...

,ताबीज आदि में एक बृहद उर्जा विज्ञानं काम करता है ,जो ब्रहमांडीय उर्जा संरचना ,क्रिया ,तरंगों ,उनसे निर्मित भौतिक इकाइयों की उर्जा संरचना का विज्ञानं है ,,,इस उर्जा संरचना को ही तंत्र कहा जाता है |इसकी तकनीक प्रकृति की स्वाभाविक तकनीक है ,,,यही तकनीक तंत्र ,योग ,सिद्धि ,साधना में प्रयुक्त की जाती है ,-ताबीज में प्राणी के शारीर और प्रकृति की उर्जा संरचना ही कार्य करती है ,,इनका मुख्या आधार मानसिक शक्ति का केंद्रीकरण और भावना होता है ,,,,प्रकृति में उपस्थित वनस्पतियों और जन्तुओ में एक उर्जा परिपथ कार्य करता है ,मृत्यु के बाद भी इनमे तरंगे कार्य करती है ,,,,इनमे विभिन्न तरंगे स्वीकार की जाती है और निष्कासित की जाती है |जब किसी वास्तु या पदार्थ पर मानसिक शक्ति और भावना को केंद्रीकृत करके विशिष्ट क्रिया की जाती है तो उस पदार्थ से तरंगों का उत्सर्जन होने लगता है ,,,,जिस भावना से उनका प्रयोग जिसके लिए किया जाता है ,वह इच्छित स्थान पर वैसा कार्य करने लगता है,,ताबीज बनाने वाला जब अपने ईष्ट में सचमुच डूबता है तो वह अपने ईष्ट के अनुसार भाव को प्राप्त होता है ,,भाव गहन है तो मानसिक शक्ति एकाग्र होती है ,जिससे वह शक्तिशाली होती है ,यह शक्तिशाली हुई तो उसके उर्जा परिपथ का आंतरिक तंत्र शक्तिशाली होता है और शक्तिशाली तरंगे उत्सर्जित करता है |ऐसा व्यक्ति यदि किसी विशेष समय,ऋतू-मॉस में विशेष तरीके से ,विशेष पदार्थो को लेकर अपनी मानसिक शक्ति और मन्त्र से उसे सिद्ध करता है तो वह ताबीज धारक व्यक्ति को उस भाव की तरंगों से लिप्त कर देता है |यह समस्त क्रिया शारीर के उर्जा चक्र को प्रभावित करती है और तदनुसार व्यक्ति को उनका प्रभाव दिखाई देता है ,साथ ही इनका प्रभाव आस पास के वातावरण पर भी पड़ता है क्योकि तरंगों का उत्सर्जन आसपास भी प्रभावित करता है |

बगलामुखी यन्त्र माता बगलामुखी का निवास माना जाता है जिसमे वह अपने अंग विद्याओ ,शक्तियों ,देवों के साथ निवास करती है ,अतः यन्त्र के साथ इन सबका जुड़ाव और सानिध्य प्राप्त होता है ,,यन्त्र के अनेक उपयोग है ,यह धातु अथवा भोजपत्र पर बना हो सकता है ,पूजन में धातु के यन्त्र का ही अधिकतर उपयोग होता है ,पर सिद्ध व्यक्ति से प्राप्त भोजपत्र पर निर्मित यन्त्र बेहद प्रभावकारी होता है ,,धारण हेतु भोजपत्र के यन्त्र को धातु के खोल में बंदकर उपयोग करते है ,,जब व्यक्ति स्वयं साधना करने में सक्षम न हो तो यन्त्र धारण मात्र से उसे समस्त लाभ प्राप्त हो सकते है ,|

यन्त्र /कवच धारण से लाभ

---------------------------------..

१. बगलामुखी की कृपा से व्यक्ति की सार्वभौम उन्नति होती है |,

२. शत्रु पराजित होते है ,सर्वत्र विजय मिलती है |

३. ,मुकदमो में विजय मिलती है ,वाद विवाद में सफलता मिलती है |

४. अधिकारी वर्ग की अनुकूलता प्राप्त होती है ,|

५. विरोधी की वाणी ,गति का स्तम्भन होता है |,

६. शत्रु की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है ,उसका स्वयं विनाश होने लगता है |,,

७. ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है ,|हर कार्य और स्थान पर सफलता बढ़ जाती है |

८. व्यक्ति के आभामंडल में परिवर्तन होने से लोग आकर्षित होते है |,

९. प्रभावशालिता बढ़ जाती है ,वायव्य बाधाओं से सुरक्षा होती है |,

१०. तांत्रिक क्रियाओं के प्रभाव समाप्त हो जाते है ,सम्मान प्राप्त होता है ,|

११. ,परीक्षा ,प्रतियोगिता आदि में सफलता बढ़ जाती है |,

१२. भूत-प्रेत-वायव्य बाधा की शक्ति क्षीण होती है क्योकि इसमें से निकलने वाली सकारात्मक तरंगे उनके नकारात्मक ऊर्जा का ह्रास करते हैं और उन्हें कष्ट होता है |,

१३. मांगलिक और उग्र देवी होने से नकारात्मक शक्तियां इनसे दूर भागती हैं |

१४. मांगलिक ,पारिवारिक कार्यों में आ रही रुकावट दूर होती है |

१५. धारक पर से किसी भी तरह के नकारात्मक दोष दूर होते हैं |

१६. शरीर में सकारात्मक ऊर्जा प्रवाह बढने से आत्मबल और कार्यशीलता में वृद्धि होती है |

१७. आलस्य ,प्रमाद का ह्रास होता है |व्यक्ति की सोच में परिवतन आता है ,उत्साह में वृद्धि होती है |

१८. किसी भी व्यक्ति के सामने जाने पर सामने वाला प्रभावित हो बात मानता है और उसका विरोध क्षीण होता है |,

१९. घर -परिवार में स्थित नकारात्मक ऊर्जा की शक्ति क्षीण होती है |

२०. नौकरी ,व्यवसाय ,कार्य में स्थायित्व प्राप्त होता है |

यह समस्त प्रभाव यन्त्र धारण से भी प्राप्त होते है और साधना से भी ,साधना से व्यक्ति में स्वयं यह शक्ति उत्पन्न होती है |,यन्त्र धारण से यन्त्र के कारण यह उत्पन्न होता है |,यन्त्र में उसे बनाने वाले साधक का मानसिक बल ,उसकी शक्ति से अवतरित और प्रतिष्ठित भगवती की पारलौकिक शक्ति होती है जो वह सम्पूर्ण प्रभाव प्रदान करती है जो साधना में प्राप्त होती है |,अतः आज के समय में यह साधना अथवा यन्त्र धारण बेहद उपयोगी है

|...हर-हर महादेव

:::::::::::बगलामुखी [ब्रह्मास्त्र विद्या]महासाधना और प्रभाव :::::::::::::::

==

..................महाविद्या श्री बगलामुखी दश महाविद्या के अंतर्गत श्री कुल की महाविद्या है ,जिनकी पूजा साधना से सर्वाभीष्ट की प्राप्ति होती है ,,ग्रह दोष ,शत्रु बाधा ,रोग-शोक-दुष्ट प्रभाव ,वायव्य बाधा से मुक्ति मिलती है ,सर्वत्र विजय ,सम्मान ,ऐश्वर्य प्राप्त होता है ,वाद-विवाद ,मुकदमे में विजय मिलती है ,अधिकारी वर्ग वशीभूत होता है ,सामने वाले का वाक् स्तम्भन होता है और साधक को वाक् सिद्धि प्राप्त होती है ,,इनकी साधना से लौकिक और अलौकिक फलो की प्राप्ति होती है ,,

..........महाविद्या श्री बगलामुखी की साधना दक्शिनाम्नाय अथवा उर्ध्वाम्नाय से होती है ,,दक्सिनाम्नाय में इनकी दो भुजाये मानी जाती है और मंत्र में ह्लिम बीज का प्रयोग होता है ,,उर्ध्वाम्नाय में इनकी चार भुजाये मानी जाती है और इनका स्वरुप ब्रह्मास्त्र स्वरूपिणी बगला का हो जाता है ,इस स्वरुप में ह्रीं बीज का प्रयोग होता है ,,.

.........बगलामुखी साधना में इनके मंत्र का सवा लाख जप ,दशांश हवन ,तर्पण ,मार्जन ,ब्राह्मण भोजन का विधान है इनकी साधना में सभी वस्तुए पीली ही उपयोग में लाने का विधान है यथा पीले फुल ,फल ,वस्त्र ,मिष्ठान्न आदि ,जप हल्दी की माला पर किया जाता है ,,.

........साधना के प्रारंभ के लिए सर्वोत्तम मुहूर्त कृष्ण चतुर्दशी और मंगलवार का संयोग होता है ,,किन्तु कृष्ण चतुर्दशी ,नवरात्र ,चतुर्थी ,नवमी [शनि-मंगल-भद्रा योग]अथवा किसी शुभ मुहूर्त में साधना प्रारंभ की जा सकती है ,,अपने सामर्थ्य के अनुसार १५,२१,अथवा ४१ दिन में साधना पूर्ण की जा सकती है ,मंत्र संख्या प्रतिदिन बराबर होनी चाहिए ,साधना में शुचिता ,शुद्धता ,ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है ,.

.....ब्रह्मास्त्र स्वरूपिणी बगला का पूर्ण मंत्र ""ओउम ह्रीं बगलामुखी सर्वदुष्ट|नाम वाचं मुखम पदम स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्रीं ओउम स्वाहा ""होता है ..

......जिस दिन साधना प्रारंभ करे सर्वप्रथम स्नानादि से निवृत्त हो आचमन-प्राणायाम -पवित्री करण के बाद बगलामुखी देवी का चित्र स्थापित करे ,एक २ फीट लंबे-चौड़े लकड़ी के तख्ते या चौकी पर पीला कपडा बिछाकर उस पर रंगे हुए पीले चावलों से बगलामुखी यन्त्र बनाए |बगलामुखी यन्त्र के सामने पीले गंधक की सात ढेरिया बनाकर प्रत्येक पर दो दो लौंग रखे ,,अब गणेश-गौरी,नवग्रह,कलश,अर्ध्यपात्र स्थापित करे ,,शान्ति पाठ, संकल्प के बाद एक अखंड दीप [जो संकल्पित दिनों तक जलता रहेगा]देवी के सामने रखे ,चौकी पर बने यन्त्र के सामने ताम्र-स्वर्ण या रजत पत्र पर बना बगलामुखी यंत्र स्थापित करे ,,अब भोजपत्र पर अपनी आवश्यकतानुसार अष्टगंध से कनेर की कलम से बगला यंत्र बनाकर चौकी पर रखे ,इसके बाद न्यासादीकर गुरु यंत्र , कलश,नवग्रह ,देवी पूजन ,यंत्रो की प्राण प्रतिष्ठा ,यंत्र पूजन ,आदि करे ,,इस प्रक्रिया में किसी जानकार की मदद ले सकते है किन्तु जप आप स्वयं करेगे ,,,पूजनोपरांत जप हल्दी की माला पर निश्चित संख्या में निश्चित दिनों तक होगा ,प्रतिदिन के पूजन में आप पंचोपचार या दशोपचार पूजन अपनी सामर्थ्य के अनुसार कर सकते है ,,प्रतिदिन जप के बाद दशांश जप महामृत्युंजय का करे ,जप रात्री में करे ,प्रथम दिन पूजन षोडशोपचार करे ,,निश्चित दिनों और संख्या तक जप होने पर हवंन प्रक्रिया पूर्ण करे ,हवन के बाद तर्पण-मार्जा-ब्राह्मण भोजन या दान करे,धातु यन्त्र को पूजा स्थान पर स्थापित कर भोजपत्र यंत्र को ताबीज में भर ले ,,अब साधना में त्रुटी के लिए क्षमा माँगते हुए विसर्जन करे ..अब आपकी साधना पूर्ण होती है ,,,कलाशादी को हटाकर शेष सामग्री बहते जल में प्रवाहित कर दे ,,..

.....अतिरिक्त भोजपत्र यंत्रो को ताबीज में भरकर आप जिसे भी प्रदान करेगे उसे बगला कृपा प्राप्त होगी ,उसके काम बनने लगेगे ,विजय -सफलता बढ़ जायेगी ,ग्रह दोष -दुष्प्रभाव समाप्त होगे ,,वायव्य बाधा से मुक्ति,मुकदमे में विजय,शत्रु-विरोधी की पराजय ,अधिकारी वर्ग का समर्थन ,विरोधी का वाक् स्तम्भन होगा ,ऐश्वर्य वृद्धि होगी ,सभी दोष समाप्त हो सुखी होगा, उसका कल्याण होगा ,,आपको उपरोक्त परिणाम स्वयमेव प्राप्त होगे ,,,,,,आप भविष्य में किसी शुभ मुहूर्त में बगला यंत्र भोजपत्र पर बनाकर पूजन कर २१०० जपादि कर ताबीज में भर जिसे भी प्रदान करेगे ,देवी कृपा उसको उपरोक्त फल प्राप्त होगे ,उसका कल्याण होगा ,,.........................

..[यह समस्त प्रक्रिया स्वानुभूत है ,और स्वयं द्वारा पूर्ण की हुई है ,कही से कापी-पेस्ट नहीं की गयी है ,साधना में योग्य व्यक्ति का मार्गदर्शन और पूजनादि हेतु अच्छी पुस्तक की मदद ली जानी चाहिए ,][सिद्ध बगलामुखी यन्त्र के लिए हमसे संपर्क किया जा सकता है मेसेज बॉक्स में]...हर-हर महादेव

अग्नि शक्ति मुद्रा :: सर दर्द -माइग्रेन हटाये

=============================

दोनों हाथों के अंगूठे को बाहर कर अंगूलियों की मुट्ठी बना लें। दोनों हाथों के अंगूठे के शीर्ष आपस में मिला लें। हथेलियाँ नीचे की ओर रखें। अग्नि शक्ति मुद्रा 15 से 45 मिनट तक लगाई जा सकती है।

लाभ :

अग्नि शक्ति मुद्रा सिर दर्द व माईग्रेन में लाभदायक है।

अग्नि शक्ति मुद्रा निम्न रक्त चाप से जुड़ी सभी समस्याओं के लिए लाभकारी है। ....हर हर कहीं आपकी उन्नति रोकी तो नहीं जा रही

============================

आप यथासंभव पूरी मेहनत करते हैं ,पूरी योग्यता है आपमें की आप अच्छी स्थिति में पहुंचें ,आप अच्छी बुद्धि ,क्षमता रखते हैं फिर भी आप उन्नति नहीं कर पा रहे |आप अच्छे पृष्ठभूमि से हैं पर आप उसे भी बरकरार नहीं रख पा रहे |जो बाप-दादाओं ने बनाया उसे भी नहीं संभल पा रहे ,जबकि आपमें सारी क्षमताएं और योग्यताएं हैं |आप अच्छी शिक्षा ,क्षमता ,योग्यता के बावजूद निम्न स्थिति में जीने को विवश हैं ,जबकि आपके आसपास अथवा परिवार में ही कोई अन्य लगातार उन्नति करता जा रहा ,हर तरफ विकास करता जा रहा |अनावश्यक कभी रोग तो कभी हानि ,कभी कलह तो कभी लड़ाई झगड़े ,कभी कर्ज तो कभी दुर्घटनाएं ,कभी बच्चों की समस्याएं तो कभी माता -पिता की ,कभी नौकरी में समस्या तो कभी व्यवसाय में ,कभी पारिवारिक विवाद /मतभेद तो कभी मुकदमे लगातार कुछ न कुछ लगा ही रहता है ,जबकि आप यदि एकाग्र हो कर किसी भी क्षेत्र में जुट जाएँ तो आप सफल हो जायेंगे ,पर आप एकाग्र हो ही नहीं पा रहे ,पूरा समय लक्ष्य पर दे ही नहीं पा रहे |इन सबके पीछे कुछ नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव हो सकता है |आप माने या न माने पर ऐसा होता है | यह नकारात्मक ऊर्जा ग्रह दोष के कारण हो सकती है |वास्तु दोष के कारण हो सकती है |स्थान अथवा भूमि दोष के कारण हो सकती है |आपके यहाँ पित्र दोष के कारण हो सकती है |आपके कुलदेवता /देवी की असंतुष्टि के कारण हो सकती है |कहीं से आये भूत -प्रेत -ब्रह्म -जिन्न के कारण हो सकती है |किसी के द्वारा भेजे गए भूत-प्रेत के कारण हो सकती है |किसी के द्वारा आपके विरुद्ध किसी तांत्रिक से अभिचार कराने के कारण हो सकती है |आपके किसी नजदीकी द्वारा समय समय पर आपके विरुद्ध टोटके किये जाने के कारण हो सकती है |आपके व्यावसायिक प्रतिद्वंदी अथवा दुश्मन या विरोधी द्वारा आपके विरुद्ध अभिचार कराने के कारण हो सकती है |नौकरी के किसी सहकर्मी अथवा किसी परिचित द्वारा आपकी उन्नति न देख पाने से कोई क्रिया कराने के कारण हो सकती है |

इन नकारात्मक या दूषित प्रभावों के कारण ,आपकी उन्नति रुक जाती है ,आपका पतन होने लगता है |स्वभाव में खराबी आ जाती है |व्यवहार व् बर्ताब बिगड़ने लगता है |समय पर कार्य में बाधा आती है |आपके निर्णय गलत होने लगते हैं |आलस्य और प्रमाद घेरने लगता है |निराशा और डिप्रेसन होने लगता है |कभी स्वभाव में उग्रता आती है कभी हीन भावना ,क्षोभ और वितृष्णा रहती है |बुरे स्वप्न आ सकते हैं |अशुभ लक्षण दिख सकते हैं |रात में या सुनसान में भय सा महसूस हो सकता है |कभी ऐसा लग सकता है की कमरे में आपके अतिरिक्त भी कोई है किन्तु आपको दीखता नहीं |कभी सोते समय कोई आपके ऊपर आ सकता है |लग सकता है की कोई आपको दबा रहा है |कभी कोई अदृश्य शक्ति आपसे यौनाचार भी कर सकती है ,यह शक्ति अलग अलग चेहरे भी दिखा सकती है या चेहराविहीन भी हो सकती है |कभी अचानक आग लग सकती है जबकि कोई कारण न समझ आये |बार बार घर परिवार अथवा खुद पर बीमारी आ सकती है |घर या कमरे से दुर्गन्ध महसूस हो सकती है |कभी अदृश्य सी आँखें दिख सकती हैं |सीलन भरा वातावरण बन सकता है |घर में अनायास कलह हो सकता है ,बेवजह मारपीट की नौबत आ सकती है |बिना मतलब मुकदमे ,विवाद शुरू हो सकते हैं |बिना कारण नौकरी जा सकती है |बिना कारण व्यवसाय में हानि हो सकती है |पूरी म्हनत के बाद भी व्यवसाय दिन पर दिन कम हो सकता है |सारे प्रयास के बाद भी नौकरी नहीं लग रही या उपयुक्त नहीं मिल रही |अगर ऐसा कुछ है तो आप नकारात्मक उर्जा से प्रभावित हो रहे हैं |[alaukikshaktiya,com के लिए लिखित लेख]

अगर आपके घर में घुसते समय आपका सर भारी हो जाए अथवा आपके कार्य व्यवसाय की जगह पहुचते ही सर भारी हो जाए अथवा दोनों जगह सर भारी हो |अनायास अशुभ लक्षण बार बार दिखे |कभी कभी किंकर्तव्यविमूढ़ सी स्थिति हो अथवा कभी लगे की दिमाग विचारशून्य हो गया है या सोचने समझने की क्षमता कम हो जाए |कहीं ठीक से मन न लगे |तनाव और मानसिक भारीपन महसूस हो |सर गर्म रहे |अनजाना सा भय महसूस हो |पसीने से बदबू बढ़ जाए |बेवजह त्वचा रोग आदि बार बार हो |अचानक हानि हो |झगड़े हो जाएँ |खुद पर से ही विश्वास कम हो जाए |परिवार में साड़ी व्यवस्था होने पर भी शांति न हो अथवा कलह का वातावरण हो |बेवजह कमजोरी महसूस हो |कुछ करने का मन न करे |आलस्य हो पर नींद भी ठीक से न आये |अनिद्रा अथवा अस्तव्यस्तता हो |साफ़ -सफाई ,पूजा -पाठ का मन न करे तो आप नकारात्मक ऊर्जा से प्रभावित हो सकते हैं और इनके द्वारा आपकी उन्नति रोकी जा रही है |

इस प्रकार की नकारात्मक उर्जाओं का प्रभाव टोटकों से नहीं समाप्त किया जा सकता |इस तरह की समस्याओं को सोसल मीडिया और टोटकों /उपायों की किताबों से पढ़कर अथवा नीम हकीम ज्योतिषी -तांत्रिक से सुनकर करके नहीं हटाया जा सकता ,क्योकि इन्हें तो खुद इनकी तकनिकी ,समय ,मुहूर्त ,पूर्ण क्रिया ,इसके विज्ञानं ,उर्जाओं की समझ नहीं होती न जानकारी होती है |यह खुद यहाँ वहां लिखे अथवा पोस्ट किये हुए उपाय अथवा टोटके उठाकर बता देते हैं |कैसे ,कब ,कहाँ ,किस तरह और क्यों किये जा रहे उपाय अथवा टोटके जानकारी नहीं होती ,इनके पीछे क्या विज्ञान कार्य करता है ,कैसे ऊर्जा समीकरण बनते और बनाये जाते हैं इन्हें खुद नहीं पता |इसीलिए लाखों लोग ऐसे उपाय ,टोटके करके कोई लाभ नहीं पाते और इनका विश्वास ज्योतिष और तंत्र से उठ जाता है ,इन्हें लगता है सब ठग हैं और केवल यह सब ठग विद्या है |वास्तव में यहाँ बस वास्तविक पकड़ की बात होती है |तलवार की जहाँ जरुरत है वहां सुई चुभोने से काम नहीं होता अपितु नकारात्मक ऊर्जा और उग्र हो अधिक नुक्सान करती है |किसी को छेड़कर अथवा लाठी मार के छोड़ दीजिये तो वह और उग्र हो प्रतिक्रिया करता है |ऐसा ही कुछ नकारात्मक उर्जा के साथ होता है |ज्योतिषीय उपाय भी अगर पूर्ण और प्रभावी नहीं किये जाएँ तो कोई प्रभाव नहीं दे पाते |टोटके केवल सामान्य परिस्थिति में ही प्रभाव डालते हैं |नकारात्मक ऊर्जा अगर शक्तिशाली हुई तो टोटकों पर उलटी ही प्रतिक्रिया सामने आती है |यही सब कारण है की यहाँ वहां से लोग उपाय जानकर करते रहते हैं और परेशान के परेशान ही रहते हैं |

नकारात्मक ऊर्जा पर सात्विक और सौम्य शक्तियों का बहुत प्रभाव नहीं पड़ता |हाँ यह घर और व्यक्ति पर सकारात्मक ऊर्जा बढ़ा जरुर देती हैं जिससे नकारात्मकता की मात्रा का बैलेंस जरुर कम हो जाता है पर वह न समाप्त होती है न कम होती है |जो अच्छे या शुभ परिणाम दीखते हैं वह सकारात्मकता बढने के कारण होते हैं |नकारात्मक ऊर्जा तो यथावत बनी ही रहती है और गाहे बगाहे अपना असर दिखाती ही रहती है |

नकारात्मक उर्जाओं को हटाने के लिए उग्र शक्तियों का ही सहारा लेना पड़ता है |इसीलिए तांत्रिक और उग्र महाविद्याओं ,भैरव आदि के साधक इन कार्यों में अधिक सफल होते हैं |नकारात्मकता हटाने के लिए उग्र महाशक्तियों यथा काली ,बगलामुखी ,तारा ,धूमावती ,हनुमान ,काल भैरव ,नृसिंह ,दुर्गा ,छिन्नमस्तिका ,रूद्र आदि की साधना -उपासना और हवन अधिक प्रभावी होते हैं |इन नकारात्मक शक्तियों से किसी भी तरह प्रभावित व्यक्तयों को उपरोक्त उग्र शक्तियों के यन्त्र ,कवच में धारण करने चाहिए और इन शक्तियों की ही उपासना करनी चाहिए |स्पष्ट छाया या वायव्य बाधाओं से ग्रस्त व्यक्तियों को खुद उपाय न करके कवच धारण करना चाहिए और किसी अच्छे तांत्रिक या महाविद्या साधक से संपर्क करना चाहिए |

इस तरह की नकारात्मक ऊर्जा के प्रभाव में प्रत्यंगिरा ,विपरीत प्रत्यंगिरा ,बगला प्रत्यंगिरा ,बजरंग बाण ,काली सहस्त्रनाम ,बगला सहस्त्रनाम ,सुदर्शन कवच ,देवी कवच ,बगला -काली -धूमावती कवच ,गायत्री हवन आदि के लाभदायक प्रभाव पड़ते हैं |घर में प्रकाश की उपयुक्त व्यवस्था के साथ सीलन ,गन्दगी पर विशेष ध्यान देना चाहिए |गुगुल -कपूर -लोबान आदि जलाने चाहिये |व्यवसाय स्थल पर उग्र शक्तियों के प्राण प्रतिष्ठित -अभिमंत्रित यंत्र लगाकर प्रतिदिन धुप -दीप करते रहने चाहिए |खुद भी इन्हें अच्छे और सम्बंधित शक्ति के ही साधक से बनवाकर धारण करना चाहिए | किसी अच्छे जानकार से ही परामर्श करना चाहिए और उसके बताये मार्गों का ही अनुसरण करना चाहिए |यहाँ वहां से उपाय देखकर और सुनकर नहीं करना चाहिए ,क्योकि इनका अपना विज्ञानं होता है और हर वस्तु ऊर्जा स्वरुप है ,जिसका उपयोग उचित ढंग से न होने पर या तो लाभ होगा नहीं अथवा नुकसान भी संभव है |तांत्रिक उपायों में तो और भी विशेष सावधानी बरतनी चाहिए | ....[अधिक जानकारी के लिए हमारे वेबसाईट alaukikshaktiya,com का अवलोकन करें और वहां पोस्ट लेख पढ़ें]..हर-हर महादेव

ईश्वर या शक्ति को बुलाना आसान है ,पर संभालना बेहद मुश्किल है

==

हम रोज पूजा -आराधना -साधना अनुष्ठान करते हैं ,अपने ईष्ट या कामानानुसार देवता को बुलाने के लिए |अक्सर असफलता मिलती है ,कभी कभी पूर्ण सफलता मिल जाती है |कभी कुछ अनुभव तो होता है पर विशेष उपलब्धि सोचने पर दिखती नहीं ,कभी कभी बहुत समय तक यथा स्थिति बनी रहती है कोई नया परिवर्तन महसूस नहीं होता |कभी परिवर्तन न दिखने पर विश्वास भी हिल जाता है की वास्तव में कुछ है या नहीं ,या सब झूठ ही कहा और लिखा गया है |

हम आपसे कहना चाहेंगे की सब सत्य लिखा और कहा गया है ,ईश्वर मिल सकता है ,वह आ सकता है ,उसे बुलाया जा सकता है ,पर सब कुछ मानसिक स्थिति पर निर्भर होता है ,मंत्र-उपाय-कर्मकांड-मुहूर्त-वातावरण सब केवल सहायक मात्र होते हैं |मुख्य भूमिका मानसिक स्थिति की होती है |ईश्वर मानसिक तरंगों और मानसिक ऊर्जा के आकर्षण से जुड़कर आता है ,अन्य सभी कुछ उसकी ऊर्जा को बढ़ाने अथवा उसे रोकने-सग्रहित करने के माध्यम होते हैं |मानसिक तरंगें निश्चित दिशा और निश्चित भाव -गुण में न लिप्त हों तो ईश्वरीय ऊर्जा उससे नहीं जुड़ पाती |फिर चाहे वर्षों तक जप किये जाते रहें कोई परिणाम नहीं मिलने वाला |

ईश्वर को बुलाना आसान है किन्तु सबसे मुश्किल उसके आने पर उसे संभालना ही होता है ,नियंत्रित करना और अपने से जोड़े रखना ही होता है |जब आप किसी निश्चित भाव-गुण-आकृति के ईष्ट में डूबते हैं ,पूर्ण एकाग्रता के साथ उसके मंत्र का जप करते हैं ,सम्बंधित सामग्री का उपयोग करते हैं तो इन सब के संयोग और मानसिक ऊर्जा से उत्पन्न तरंगो का प्रक्षेपण वातावरण में होने लगता है ,जिसके फलस्वरूप सामान प्रकृति की ऊर्जा आकर्षित होने लगती है और उसका संघनन साधक के आसपास होने लगता है ,अर्थात वह ईश्वर आने को उद्यत होने लगता है |अब सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है की क्या साधक की मानसिक-शारीरिक स्थिति उसे सँभालने की है |

साधक बेहद भावुक और भीरु हृदय है ,अपनी आवश्यकतापूर्ती के लिए साधना काली की करने लगा ,काली की ऊर्जा का अवतरण हो गया और साधक अपने स्वभावानुसार डर गया या रोने लगा ,उसकी हिम्मत जबाब दे गयी उनके भयानक ऊर्जा को महसूस करके ,अथवा उसकी शारीरिक स्थिति कमजोर है और वह काली की ऊर्जा को सहन करने लायक ही नहीं है |ऐसे में साधक की हृदय गति रूक सकती है ,शारीरिक ऊर्जा संरचना या पावर सर्किट नष्ट हो सकता है ,मानसिक संतुलन बिगड़ सकता है |अथवा वह भावुकता में बहने लगा ,ऐसे में काली की ऊर्जा उससे जुड़ ही नहीं पाएगी और पुनः बिखर जायेगी ,व्यक्ति असफल हो जायेगा |ऐसा भी होता है की यदि स्वभाव में अति कोमलता है और काली की उग्र साधना कर रहे हों तो वह शक्ति साधक की और आकर्षित ही न हो |काली के लिए तो उग्र ,मजबूत, तामसिक भाव होना चाहिए ,शारीरिक रूप से मजबूती रखनी चाहिए ,हिम्मत होना चाहिए ,भय बिलकुल नहीं होना चाहिए |

इसी प्रकार अगर मानसिक भाव का संतुलन साधित की जाने वाली शक्ति से नहीं बैठता तो वह शक्ति आकर भी साधक से नहीं जुड़ पाती ,क्योकि उसे अपने अनुकूल मानसिक भाव नहीं प्राप्त होता है |जिस शक्ति या ईष्ट की साधना की जा रही हो उसके अनुकूल वातावरण के साथ ही उसके अनुकूल मानसिक भाव भी होना चाहिए ,,तदनुरूप शारीरिक स्थिति और हृदय की स्थिति भी बनानी होती है ,तभी सम्बंधित शक्ति आकर जुड़ पाती है |अक्सर साधना-अनुष्ठान

करने पर सम्बंधित कार्य तो हो सकता है ,पर सम्बंधित शक्ति जुडी रह जाए जरुरी नहीं होता |यह सामान्य काम्य अनुष्ठानों में होता है ,जबकि व्यक्ति यदि ध्यान दे तो यहाँ भी आने वाली शक्ति जुडी रह सकती है |शक्ति विशेष की साधना में भी अक्सर सम्बंधित शक्ति नहीं जुड़ पाती साधक से फलतः असफलता मिलती है या कम सफलता मिलती है |इसका भी कारण आई हुई शक्ति को उसकी प्रकृति -गुण-स्वभाव के अनुसार स्थान न दे पाना या नियंत्रित न कर पाना होता है |

ईष्ट या शक्ति तो साधना प्रारम्भ होते ही आकर्षित होने लगता है ,पर जुड़ता वह भाव और शक्ति के अनुसार ही है |उसे आने पर संभालना और यथायोग्य स्थान देना ही मुश्किल होता है |यही सबसे अधिक गुरु की आवश्यकता होती है |साधना-पूजा-अनुष्ठान तो बहुतेरे करते हैं पर सफलता बहुत कम को ही मिल पाती है ,क्योकि उचित पद्धति-मार्गदर्शन और जानकारी का ही अभाव होता है |दिशा कोई ,शक्ति कोई, भाव कोई होता है |इनमे आपसी तालमेल नहीं होता |फलतः कहते मिल जाते हैं इतना किया कुछ नहीं हुआ |मंत्र-पद्धति-मुहूर्त-सामग्री-कर्मकांड पुस्तकों में मिल जाते हैं ,पर आई शक्ति को संभालें कैसे यह पुस्तक नहीं बता पाते ,इसके लिए योग्य गुरु की आवश्यकता होती है |पुस्तकें तो पुराने शास्त्रों को खोजकर लिख दी जाती है ,पर लिखने वाले साधक हों बहुत मुश्किल होता है ,साधक पुस्तकें नहीं लिखता |लिखने वाला अगर साधक हुआ भी तो विषयवस्तु की गोपनीयता के कारण यह नहीं बता सकता की कैसे आई ऊर्जा या शक्ति को संभालें या नियंत्रित करें |

आज के समय में अधिकतर की असफलता का यही कारण है की ऊर्जा तो पुस्तकों को पढ़कर ,मंत्र जपकर ,अनुष्ठान करके बुला ली जाती है पर उसे संभाले कैसे ,उसे नियंत्रित कैसे करें ,उसे कैसे स्थान दें अधिकतर नहीं जानते |बताने वाला नहीं मिलता |जो मिलते हैं खुद आधे-अधूरे ज्ञान वाले स्वयंभू ज्ञानी होते हैं |फलतः आई ऊर्जा बिखर जाती है |अनुष्ठान -साधना पर भी अपेक्षित परिणाम नहीं दीखता |अतः इस हेतु सद्गुरु खोजना ही सबसे पहले जरुरी होता है |इसीलिए गुरु को सर्वाधिक महत्व दिया गया है साधना क्षेत्र में |वही बताता है की कैसे और कब किस उर्जा को किस प्रकार नियंत्रित किया जाए ,जिससे वह आपके लिए कल्याणकारी हो सके ,आपके साथ जुड़ सके |वही बताता है की आपको किस प्रकार की उर्जा की आवश्यकता है ,आप किसे संभल पाएंगे ,आपकी प्रकृति के अनुकूल कौन है |किससे आपका कल्याण संभव है |.[व्यक्तिगत विचार]...[अधिक जानकारी के लिए हमारी वेबसाईट alaukikshaktiya com का अवलोकन करें]..हर-हर महादेव

तीव्र आकर्षण साधना

=============

आज के दौर में कौन नहीं चाहता आकर्षण से युक्त होना । हर कोई चाहता है कि जब वो बात करे तो दूसरे उसकी बात ध्यान से सुनें । पर क्या ऐसा होता है वो भी हर किसी के साथ नहीं होता? हमारे भीतर अनंत ब्रह्मांड और दिव्य शक्तियों का भंडार है जिन्हे अगर कोई जागृत कर ले तो असंभव को संभव कर सकता है। हमारे भौतिक जीवन की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हमारे अन्दर कितना आकर्षण है और मनुष्य तो क्या आपके अन्दर इतना आकर्षण होना चाहिए कि जब भी आप किसी देवता को प्रत्यक्ष करने के लिए साधना करें तो वो देवता बिना विलंब किए तत्काल आपके सामने उपस्थित हो जाए । कई मेरे भाई बहन ऐसा व्यापार करते हैं जिसमें दूसरे लोगों को अपना सामान खरीदने के लिए प्रेरित करना पढ़ता है और इस काम के लिये वो अथक परिश्रम करते हैं पर उनके अन्दर आकर्षण की कमी के कारण उनसे कोई सामान लेना पसन्द नहीं करता और वो लोग हमेशा घाटे में ही जीते हैं । चाहे फौज में चयन की बात हो, प्रेम संबंध की बात हो, पति - पत्नी में माधुर्य की या फिर Interview में सफलता की अगर आपके अन्दर आकर्षण है तो कामयाबी झक मारकर आपके पीछे आएगी और आप जिन्दगी के उस मुकाम पर होंगे जिसके आप सिर्फ सपने ही देखा करते थे ।

॥ साधना विधि ॥

===========

दिन कोई भी, अवधि – 5 दिन, समय- ब्रहममुहूर्त, आसन एवं वस्त्र – सफेद या पीला, दीपक – गाय के देसी घी का, पुन: साधना करने की अवधि – 1 साल बाद।

साधक को चाहिए कि सर्व प्रथम स्नान करे और इसके बाद सफेद या पीले वस्त्र धारण करे और आसन तथा बाजोट पर भी एक ही रंग के वस्त्र बिछाए । फिर अपने सामने एक घी का दीपक जगाए तथा गुरु पूजन एवं गणेश पूजन सम्पन्न करे । अब साधक को अपनी आँखें बन्द करके अपना ध्यान सहस्रार पे केंद्रित करना चाहिए और पूरे 1 घंटे तक मन ही मन इसी अवस्था में निम्न मन्त्र का जप करे ।

॥ मन्त्र ॥

======

ॐ नमो चैतन्याय हूं

साधक को यह प्रयोग बिना माला के 5 दिन करना चाहिए । साधना के दौरान आपको अपने अन्दर कई अद्भुत दृश्य दिखाई देंगे और साधना के बाद साधक खुद ही अनुभव करेगा कि उसके अन्दर एक प्रचंड आकर्षण शक्ति प्रविष्ट हो चुकी है । अगर आप सफलता के

मायने जानते हैं और जीवन के हर एक क्षेत्र में सफल होना चाहते हैं तो इस साधना को अवश्य सम्पन्न करें और इसे 1 साल में एक बार जरूर करें ताकि आपकी आकर्षण शक्ति क्षीण ना हो और आप सदा सुखी रहें ॥

गुरु गोरक्ष नाथ गायत्री

ॐ गुरु जी
ओंकारे शिव रूपी संध्या ने साध रूपी मध्याने हंस रूपी, हंस-परमहंस द्वि अक्षर गुरु तो गोरक्ष - काया तो गायत्री, ॐ तो ब्रह्म - सोंह तो शक्ति, शून्य तो माता, अवगति पिता, अभय पंथ, अचल पदवी, निरंजन गौत्र, अलील वर्ण, विहंगम जाति, असंख्य प्रवर, अनंत शाखा, सूक्ष्म वेद, आत्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी

" श्री ॐ गो गोरक्षनाथाय विद्माहे शून्य पुत्राय धीमही तन्नो गोरक्ष निरंजन प्रचोदयात "

इतना गोरक्ष गायत्री पाठ्यन्ते हरते पाप श्रुयते सिद्धि निश्चय । जपन्ते परम ज्ञान अमृतानंद मनुष्यते । नाथजी गुरु जी को आदेश आदेश ।

उपरोक्त गोरक्ष गायत्री का जाप सभी पापों से मुक्ति दिलाने मे सर्वश्रेष्ठ शाबर मंत्र है । प्रात:काल में रुद्राक्ष की माला से एक माला जाप करें, गुरु गोरक्ष नाथ जी की एक तस्वीर रखकर देशी घी का दीपक जला कर जाप करें, आपके सभी ताप और पापों का नाश होता है ।

महाकाल भैरव महा मंत्र
==================
साधक मित्रो मैं आज आपको एक ऐसा मन्त्र दे रहा हूँ ..जिसके सिद्ध करने के बाद असफल कुछ भी नहीं रहता ..साधक मित्रो ये एक ऐसा मंत्र है इसे सिद्ध करने के बाद कुछ भी नहीं शेष रहता ....बस आवशकता है तो कठिन अभ्यास और एकाग्रता और द्दढ़ इच्छाशक्ति के साधना की ....इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए आप का दैनिक व्यवहार सात्विक न किसी को गलत बोलना न गलत सुन्ना .और विषय भोग का त्याग ..कुछ ही दिनों में आपको पता चल जायेगा क्या परिवर्तन हो रहा है ...! ये सर्व कार्य सिद्धि मंत्र है ..(ये देहात भाषा में साबर मंत्र है इसके व्याकरण को बदलने का प्रयास न करे) ये मूल भाषा में ही मंत्र है ..!

महाकाल भैरव अमोघ मंत्र माला
=====================

ॐ गुरूजी काला भैरू कपिला केश ,काना मदरा भगवा भेस मार मार काली पुत्र बरह कोस की मार भूता हाथ कलेजी खुहां गेडिया जहाँ जाऊं भेरुं साथ ,बारह कोस की सिद्धि ल्यावो, चौबीस कोस की सिद्धि ल्यावो सूती होय तो जगाय ल्यावो बैठा होय तो उंय ल्यावो अनंत केसर की भारी ल्यावो गौरा पारवती की बिछिया ल्यावो गेल्यां किरस्तान मोह कुवे की पनिहारी मोह बैठा मनिया मोह घर की बैठी बनियानी मोह ,राजा कीरजवाड मोह ,महिला बैठी रानी मोह, डाकिनी को शाकिनी को भूतनी को पलितनी को ओपरी को पराई को, लाग कूं लापत कूं ,धूम कू, धक्का कूं, पलिया कूं, चौड कूं चौगट कूं, काचा कुण, कालवा कूं भूत कूं पालित कूं जिन कूं, राक्षस कूं ,बैरियो से बरी करदे ,नजरा जड़ दे ताला ..इत्ता भैरव नहीं करे तो ..पिता महादेव की जाता तोड़ तागड़ी करे माता पार्वती का चीर फाड़ लंगोट करे ..चल डाकिनी शाकिनी ..चौडूं मैला बकरा देस्युं मद की धार भरी सभा में द्यूं आने में कहाँ लगाईं बार ,खप्पर में खाय मसान में लोटे ऐसे काल भेरू की कुन पूजा मेंटे राजा मेंटे राज से जाय प्रजा मेंटे दूध पूत से जाये जोगी मेंटे ध्यान से जाये ..शब्द साँचा ब्रम्ह वाचा चलो मन्त्र इश्वरो वाचा ...!

विधि :- इस मन्त्र की साधना शुरू करने से पहले इकत्तीस दिन पहले ब्रम्ह चर्य का पालन और सात्विकता बरते फिर अनुष्टान का प्रारंभ करे ..इस साधना को घर में न करे ..ये साधना रात्रि कालीन साधना है ..इसेकृष्ण पक्ष के शनिवार से आरंभ करनी है ..एक त्रिकोनी काला पत्थर ले कर उसे स्वच्छ पानी से धोकर उस पर सिन्दूर और तील के तेल से लेपन कर ले ..पश्चात् पान का बीड़ा, लेवे, सात लॉन्ग का जोड़ा धर. लोबान धुप और सरसों के तेल का दिया जल लेवे चमेली के फूल रख लेवे पूजा के समय ...फिर एकश्रीफल की बलि देकर ...गुरुपूजन करके गणेश पूजन कर .बाबा महाकाल यानि (महादेव से मंत्र सिद्धि के लिए आशीर्वाद मांगे) और अनुष्ठान आरम्भ करे ..इकतालीस दिनों तक नित्य इकतालीस पाठ इस मंत्र की करे .....हर रोज जप समाप्ति पर एक विशेष सामग्री से हवंन करले ये हवंन

रोज मन्त्र समाप्ति के बाद करना है . .(सामग्री है कपूर केशर लवंग)
प्रथम दिन और अंतिम दिन भोग के लिए ..उड़द के पकोड़े और बेसन के लड्डू भोग में रख लेवे ..दूध और थोडा सा गुड भी रख लेवे ..इनका प्रशाद गरीबो में बाट देवे ....सातवे दिन से ही आपको अनुभव होने लगेगा की आप के सामने कोई खड़ा है .....भैरवजी का रूप डरावना है इसलिए सावधान ..कम्जोर दिल वाले इस साधना को न करे ..अंतिम दिन भैरवजी प्रगट हो जायेंगे ...उनसे फिर आप मनचाहा .वर मांगले

|| काली पञ्च वाण ||

आज के इस युग में प्रत्येक व्यक्ति अच्छे रोजगार की प्राप्ति में लगा हुआ है पर बहुत प्रयत्न करने पर भी अच्छी नौकरी नहीं मिलती है ! यह मंत्र प्रयोग करके देखें | छोटा सा प्रयोग है जिसके अनुकूल होगा उसको सफलता मिलेगी.
इस मन्त्र का प्रतिदिन 11बार सुबह और 11बार शाम को जप करे !

प्रथम वाण

ॐ नमः काली कंकाली महाकाली
मुख सुन्दर जिए ब्याली
चार वीर भैरों चौरासी
बीततो पुजू पान ऐ मिठाई
अब बोलो काली की दुहाई !

द्वितीय वाण

ॐ काली कंकाली महाकाली
मुख सुन्दर जिए ज्वाला वीर वीर
भैरू चौरासी बता तो पुजू पान मिठाई !
अब बोलो काली की दुहाई !

तृतीय वाण

ॐ काली कंकाली महाकाली
सकल सुंदरी जीहा बहालो
चार वीर भैरव चौरासी
तदा तो पुजू पान मिठाई
अब बोलो काली की दुहाई !

चतुर्थ वाण

ॐ काली कंकाली महाकाली
सर्व सुंदरी जिए बहाली
चार वीर भैरू चौरासी
तण तो पुजू पान मिठाई
अब राज बोलो काली की दुहाई !

पंचम वाण

ॐ नमः काली कंकाली महाकाली
मख सुन्दर जिए काली
चार वीर भैरू चौरासी

तब राज तो पुजू पान मिठाई
अब बोलो काली की दोहाई !

|| विधि ||
इस मन्त्र को सिद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं है ! यह मन्त्र स्वयं सिद्ध है केवल माँ काली के सामने अगरबती जलाकर 11 बार सुबह और 11 बार शाम को जप कर ले ! मन्त्र एक दम शुद्ध है भाषा के नाम पर हेर फेर न करे !शाबर मन्त्र जैसे लिखे हो वैसे ही पढने पर फल देते है शुद्ध करने पर निष्फल हो जाते है !

विवाह के उपाय (Remedies and Upay to avoide late marriage)----

समय पर अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने की इच्छा के कारण माता-पिता व भावी वर-वधू भी चाहते है कि अनुकुल समय पर ही विवाह हो जायें. कुण्डली में विवाह विलम्ब से होने के योग होने पर विवाह की बात बार-बार प्रयास करने पर भी कहीं बनती नहीं है. इस प्रकार की स्थिति होने पर शीघ्र विवाह के उपाय करने हितकारी रहते है. उपाय करने से शीघ्र विवाह के मार्ग बनते है. तथा विवाह के मार्ग की बाधाएं दूर होती है.

उपाय करते समय ध्यान में रखने योग्य बातें (Precautions while doing Jyotish remedies)

1. किसी भी उपाय को करते समय, व्यक्ति के मन में यही विचार होना चाहिए, कि वह जो भी उपाय कर रहा है, वह ईश्वरीय कृपा से अवश्य ही शुभ फल देगा.

2. सभी उपाय पूर्णत: सात्विक है तथा इनसे किसी के अहित करने का विचार नहीं है.

3. उपाय करते समय उपाय पर होने वाले व्ययों को लेकर चिन्तित नहीं होना चाहिए.

4. उपाय से संबन्धित गोपनीयता रखना हितकारी होता है.

5. यह मान कर चलना चाहिए, कि श्रद्धा व विश्वास से सभी कामनाएं पूर्ण होती है.

आईये शीघ्र विवाह के उपायों को समझने का प्रयास करें (Remedies for a late marriage)------

1. हल्दी के प्रयोग से उपाय - विवाह योग लोगों को शीघ्र विवाह के लिये प्रत्येक गुरुवार को नहाने वाले पानी में एक चुटकी हल्दी डालकर स्नान करना चाहिए. भोजन में केसर का सेवन करने से विवाह शीघ्र होने की संभावनाएं बनती है.

2. पीला वस्त्र धारण करना - ऎसे व्यक्ति को सदैव शरीर पर कोई भी एक पीला वस्त्र धारण करके रखना चाहिए.

3. वृद्धो का सम्मान करना - उपाय करने वाले व्यक्ति को कभी भी अपने से बडों व वृद्धों का अपमान नहीं करना चाहिए.

4. गाय को रोटी देना - जिन व्यक्तियों को शीघ्र विवाह की कामना हों उन्हें गुरुवार को गाय को दो आटे के पेडे पर थोडी हल्दी लगाकर खिलाना चाहिए. तथा इसके साथ ही थोडा सा गुड व चने की पीली दाल का भोग गाय को लगाना शुभ होता है.

5. शीघ्र विवाह प्रयोग - इसके अलावा शीघ्र विवाह के लिये एक प्रयोग भी किया जा सकता है. यह प्रयोग शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार को किया जाता है. इस प्रयोग में गुरुवार की शाम को पांच प्रकार की मिठाई, हरी ईलायची का जोडा तथा शुद्ध घी के दीपक के साथ जल अर्पित करना चाहिये. यह प्रयोग लगातार तीन गुरुवार को करना चाहिए.

6. केले के वृक्ष की पूजा - गुरुवार को केले के वृक्ष के सामने गुरु के 108 नामों का उच्चारण करने के साथ शुद्ध घी का दीपक जलाना चाहिए. अथा जल भी अर्पित करना चाहिए.

7. सूखे नारियल से उपाय - एक अन्य उपाय के रुप में सोमवार की रात्रि के 12 बजे के बाद कुछ भी ग्रहण नहीं किया जाता, इस उपाय के लिये जल भी ग्रहण नहीं किया जाता. इस उपाय को करने के लिये अगले दिन मंगलवार को प्रात: सूर्योदय काल में एक सूखा नारियल लें, सूखे नारियल में चाकू की सहायता से एक इंच लम्बा छेद किया जाता है. अब इस छेद में 300 ग्राम बूरा (चीनी पाऊडर) तथा 11 रुपये का पंचमेवा मिलाकर नारियल को भर दिया जाता है. यह कार्य करने के बाद इस नारियल को पीपल के पेड के नीचे गड्ढा करके दबा देना. इसके बाद गड्डे को मिट्टी से भर देना है. तथा कोई पत्थर भी उसके ऊपर रख देना चाहिए. यह क्रिया लगातार 7 मंगलवार करने से व्यक्ति को लाभ प्राप्त होता है. यह ध्यान रखना है कि सोमवार की रात 12 बजे के बाद कुछ भी ग्रहण नहीं करना है.

8. मांगलिक योग का उपाय (Remedies for Manglik Yoga) - अगर किसी का विवाह कुण्डली के मांगलिक योग के कारण नहीं हो पा रहा है, तो ऎसे व्यक्ति को मंगल वार के दिन चण्डिका स्तोत्र का पाठ मंगलवार के दिन तथा शनिवार के दिन सुन्दर काण्ड का पाठ करना चाहिए. इससे भी विवाह के मार्ग की बाधाओं में कमी होती है.

9. छुआरे सिरहाने रख कर सोना - यह उपाय उन व्यक्तियों को करना चाहिए. जिन व्यक्तियों की विवाह की आयु हो चुकी है. परन्तु विवाह संपन्न होने में बाधा आ रही है. इस उपाय को करने के लिये शुक्रवार की रात्रि में आठ छुआरे जल में उबाल कर जल के साथ ही अपने सोने वाले स्थान पर सिरहाने रख कर सोयें तथा शनिवार को प्रात: स्नान करने के बाद किसी भी बहते जल में इन्हें प्रवाहित कर दें.

कुछ ग्रहों के अशुभ प्रभाव के कारण कन्या के विवाह में विलंब हो तो इस प्रकार के उपाय स्वयं कन्या द्वारा करवाने से विवाह बाधाएं दूर होती है –

किसी भी माह की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी से चांदी की छोटी कटोरी में गाय का दूध लेकर उसमें शक्कर एवंउबलेहुए चांवल मिलाकर चंद्रोदय के समय चंद्रमा को तुलसी की पत्ती डालकर यह नेवैद्य बताएं व प्रदक्षिणा करें, इस प्रकार यह नियम 45 दिनों तक करें ,45 ङ्घह्न दिन पूर्ण होने पर एक कन्या को भोजन करवाकर वस्त्र और मेंहदी दान करें, ऐसाकरने से सुयोग्य वर की प्राप्ति होकर शीघ्र मांगलिक कार्य संपन्न होता है ।ϖ

गुरूवार के दिन प्रात:काल नित्यकर्म से निवतृत होकर हल्दीयुक्त रोटियां बनाकर प्रत्येक रोटी पर गुड़ रखें व उसे गाय को खिलाएं ।7 गुरूवार नियमित रूप से यह विधि करने से शीघ्र विवाह होता है ।ϖ

मंगलवार केदिन देवी -मंदिर में लाल गुलाब का फूल चढ़ाएं पूजन करें एवं मंगलवार का व्रत रखें । यह कार्य नौ मंगलवार तक करे । अंतिम मंगलवार को9 ख़् वर्ष की नौ कन्याओं को भोजन करवाकर लाल वस्त्र, मेंहदी एवं यथाशक्ति दक्षिण दें, शीघ्र फल की प्राप्ति होगी ।ϖ

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि नंद गोपसुतं देविपतिं में कुरू ने नम: । माँ कात्यायनि देवी या पार्वती देवी के फोटो को सामने रखकर जो कन्या पूजन कर इस कात्यायनि मंत्र की 1 माला का जाप प्रतिदिन करती है , उस कन्या की विवाह बधा शीघ्र दूर होती है ।ϖ

यदि कन्या की शादी में कोई रूकावट आ रही हो तो पूजा वाले 5 नारियल लें ! भगवान शिव की मूर्ती या फोटो के आगे रख कर "ऊं श्रीं वर प्रदाय श्री नामः" मंत्र का पांच माला जाप करें फिर वो पांचों नारियल शिव जी के मंदिर में चढा दें ! विवाह की बाधायें अपने आप दूर होती जांयगी !ϖ

प्रत्येक सोमवार को कन्या सुबह नहा-धोकर शिवलिंग पर "ऊं सोमेश्वराय नमः" का जाप करते हुए दूध मिले जल को चढाये और वहीं मंदिर में बैठ कर रूद्राक्ष की माला से इसी मंत्र का एक माला जप करे ! विवाह की सम्भावना शीघ्र बनती नज़र आयेगीϖ

विवाह बाधा दूर करने के लिए-----कन्या को चाहिए कि वह बृहस्पतिवार को व्रत रखे और बृहस्पति की मंत्र के साथ पूजा करे। इसके अतिरिक्त पुखराज या सुनैला धारण करे। छोटे बच्चे को बृहस्पतिवार को पीले वस्त्र दान करϖे। लड़के को चाहिए कि वह हीरा या अमेरिकन जर्कन धारण करे और छोटी बच्ची को शुक्रवार को श्वेत वस्त्र दान करे।

रोजगार प्राप्ति साधना
=============

क्योंकि जीवन के लिए उत्तम होना जरूरी है लेकिन व्यक्ति की काबिलियत होने पर भी अपने कार्य क्षेत्र में उसको योग्य पद नहीं मिल पाता है, कई प्रकार की बाधाएं आती हैं, कहीं योग्य जगह मिलती है तो वेतन नहीं मिलता । इस साधना का मुख्य उद्देश्य है कि उन्हें यथा-योग्य काम मिले जो कि भविष्य में उनकी प्रगति के लिए एक आधार स्तंभ बने । इस साधना से काम मिलने में आने वाली समस्त अड़चनें दूर होती हैं, इस साधना से नौकरी से संबंधित समस्त व्यवधान समस्या दूर होती हैं ।

यह साधना सोमवार से प्रारंभ करनी होती है रात के 10:00 बजे के बाद।
दिशा उत्तर होती है रात्रि में स्नान करके सफेद कपड़े धारण किए जाते हैं और सिर ढका जाता है हाथ में कलावा, माथे पर तिलक लगाया जाता है, आसन लाल रहता हैं ।

इस साधना में किसी भी रक्षा मंत्र की कोई जरूरत नहीं होती है ।

सर्वप्रथम गणेश जी का ध्यान करके उनकी पूजा की जाती है जिनके गुरु हैं वह गुरूमंत्र की 21 जाप करें, जिनके गुरु नहीं है वह शिव जी का पूजन करके "ओम नमः शिवाय:" की एक माला जाप करें माला रुद्राक्ष पांच मुखी होगी ।

इस साधना से 110 पर्सेंट आपको सफलता मिल सकती है अगर यह विधि विधान से की जाती है तो।

हम मंत्र दे रहे है इस मंत्र की पांच माला रात को 10:00 बजे के बाद 21 दिन तक करनी है संकल्प के साथ ।

इन साधना में रात्रि में भोजन करने से पहले थोड़ा खाने का पदार्थ गाय को खिलाना चाहिए ऐसा करने के बाद ही भोजन करें अगर यह संभव नहीं हो तो रात्रि में भोजन ना करें इस साधना को संपन्न करने के बाद माला को विसर्जित नहीं करना चाहिए तथा माला को गले में धारण रखना चाहिए।

मँत्र :--
।।ॐ सोमाबती भगवती बरकत देहि उत्तीर्ण सर्व बाधा स्तंभय रोंशीणी इच्छा पूर्ति कुरु कुरु कुरु सर्व वश्यं कुरु कुरु कुरु हूं तोशीणी नमः।।

आपकी मनोकामना पूर्ण हो इस आशा के साथ हमने आपको इस मंत्र का जाप बताया है, बताई हूई विधि के साथ पूर्ण करने पर आशातीत फल प्राप्त होता है इसमे कोई संदेह नहीं है ।

जय श्री शंभूजति गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज की ।

दुश्मन और भुत प्रेत का असर खत्म करने की विधि और मन्त्र –
==
शाबर मंत्र
=======
“काली काली महाकाली – इन्द्र की बेटी – ब्रह्मा की साली ।
पीती भर-भर रक्त प्याली – उड़ बैठी पीपल की डाली – दोनों हाथ बजाए ताली ।
जहां जाए वज्र की ताली – वहाँ न आए दुश्मन हाली ।
दुहाई कामरू कामाख्या नैना योगिनी की,
ईश्वर महादेव गौरा पार्वती की, दुहाई वीर मसान की ।

विधि : 40 दिन तक 108 बार प्रतिदिन जाप करें – प्रयोग के समय पढ़कर 3 बार ज़ोर से ताली बजाए । जहां तक ताली की आवाज जाएगी, दुश्मन का कोई वार या भूत-प्रेत असर नहीं करेगा ।

इस मंत्र का जाप कोई भी कर सकता है 40 दिन मंत्र जपने की जगह न बदले एक ही स्थान निश्चय करे और लगातार 40 दिन करना है बीच मे रुकावट न डाले । उपरोक्त मंत्र के किए लाल मूंगा या रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करें ।

अशुभ संकेत दर्शाते हैं ये सब

1. अकस्मात घर की चलती हुई घड़ियां बंद हो जाएं तो समझ लीजिए कि आपके बनते हुए काम बिगड़ सकते हैं।

2. घर की छत पर चिड़िया कबूतर आदि पक्षी मरे हुए मिलें तो समझ लीजिए कि आपके बच्चों की तबियत बिगड़ सकती है।

3. घर की दीवारों पर अगर सीलन आने लगे तो समझ लीजिए कि आपके मन की शांति छीनने वाली है।

4. घर में पड़े हुए नमकीन पदार्थों में अगर चींटियां पड़ जाएं तो समझ लीजिए कि आपके व्यवसाय या नौकरी में दिक्कत आने वाली है।

5. सड़क का कुत्ता घर की तरफ मुंह करके रोने लगे तो समझ लीजिए कि दुर्घटना होने के संकेत हैं।

6. तेल के जार में से तेल गर फर्श पर पानी की तरह बह जाए तो समझ लीजिए कि लाभ के रास्ते रुक जाएंगे।

7. घर में से सोने के आभूषण ग़ायब या चोरी हो जाए तो बड़ी धन हानि की ओर इशारा है।

8. घर में लगा हुआ तुलसी का पौधा जल जाए अथवा अकारण सूख जाए तो ये संकेत हैं की कुछ अशुभ होगा।

9. दूध बार-बार उफान करके बहे तो समझ लीजिए के कोई बहुत ज़्यादा बीमार पड़ने वाला है।

10. घर में शादीशुदा बहन, बेटी, बुआ, साली, मौसी अगर बिन बुलाए ठहरने हेतु आ जाए तो समझ लीजिए के दुर्भाग्य दस्तक दे रहा है।

11. सरकारी कागज़ात जैसे की विल, रजिस्ट्री में दीमक लग जाए अथवा गुम हो तो सरकार द्वारा दंडित होने के संकेत हैं।

12. बार-बार कपड़ों का जलना अथवा फट जाना आपकी सामाजिक बदनामी और फ़ज़ीहत की ओर संकेत देता है।

13. कांच अथवा चीनी-मिट्टी के बर्तनों में दरार आना हॉस्पिटल के बिल बढ़ने के संकेत देता है।

रोग नाशक शाबर मंत्र
****

शाबर मंत्र आम ग्रामीण बोलचाल की भाषा में ऐसे स्वयं सिद्ध मंत्र हैं, जिनका प्रभाव अचूक होता है। थोड़े से जाप से भी ये मंत्र सिद्ध हो जाते हैं, तथा अत्यधिक प्रभाव दिखाते हैं। इन मंत्रों का प्रभाव स्थायी होता है तथा किसी भी मंत्र से इनकी काट संभव नहीं है। शाबर मंत्रो का भी एक अलग विज्ञान है कुछ शब्दों का चयन इस प्रकार है जिसका कोई अर्थ नहीं होता मगर देवताओं को उस कार्य को करने को प्रेरित किया जाता है और एक दुहाई या कसम दी जाती है कुछ छिट-पुट रोगों के लिए हमने इसे आज़माया है और बिलकुल सटीक पाया है कई बीमारियों से इससे निजात पाई जा सकती है। तो आपके लिए यह एक सरल साधना पोस्ट कर रहा है।

उदर रोग का एक महत्वपूर्ण प्रयोग

इस साधना को करने से पेट की तमाम बीमारियों से निजात पाई जा सकती है। बदहज्मी, पेट गैस, दर्द और आंव का पूर्ण इलाज हो जाता है। इसे ग्रहण काल, दीपावली और होली आदि शुभ मुहूरतों में कभी भी सिद्ध किया जा सकता है। आप दिन या रात में कभी भी कर सकते हैं। इस मंत्र को १०८ बार जप कर सिद्ध कर लें। प्रयोग के वक़्त ७ बार पानी पर मन्त्र पढ़ फूँक मारे और रोगी को पिला दें, जल्द ही फ़ायदा होगा।

शाबर मन्त्र
=======

|| ॐ नमो आदेश गुरु को शियाम बरत शियाम गुरु पर्वत में बड़ बड़ में कुआ कुआ में तीन सुआ कोन कोन सुआ वाई सुआ छर सुआ पीड़ सुआ भाज भाज रे झरावे यती हनुमंत मार करेगा भसमंत फुरो मन्त्र इश्वरो वाचा ||

नेत्र रोग की महत्वपूर्ण साधना

आंखे मनुष्य के लिए अनमोल रत्न हैं। कई बार व्यक्ति अकारण वश नेत्र रोग से पीड़ित हो जाते हैं। जिससे बहुत परेशानी का सामना करना पड़ता है। यह बहुत ही तीक्ष्ण मन्त्र है, इससे तमाम नेत्र रोग से निजात पाई जा सकती है। इसे भी ग्रहण काल, होली, दीपावली आदि शुभ मुहूरतों में १०८ बार जाप कर सिद्ध कर लें और प्रयोग के वक़्त इसको ७ बार पढ़कर कुषा से झाडा कर दें, तमाम नेत्र दोष दूर हो जाते हैं।

शाबर मन्त्र
=======

||ॐ अन्गाली बंगाली अताल पताल गर्द मर्द आदर ददार फट फट उत्कट ॐ हुं हुं ठा ठा ||

आधा सिर दर्द

आधा सिर दर्द और माईग्रेन एक बहुत बड़ी समस्या है। उसके लिए एक महत्वपूर्ण मन्त्र दे रहे है। इसे भी ग्रहण काल, दीपावली आदि पर उपर वाले तरीके से सिद्ध कर लें। प्रयोग के वक़्त एक छोटी नमक की डली ले कर उस पर ७ बार मन्त्र पढ़ें और पानी में घोल कर माथे पर लगा दें, आधे सिर की दर्द फ़ौरन बंद हो जाएगी।

शाबर मन्त्र
========

|| को करता कुड़ू करता बाट का घाट का हांक देता पवन बंदना योगीराज अचल सचल ||

दाड दर्द का एक महत्व पूर्ण मंत्र

दाड दर्द जिसे हो वही जानता है। कई बार तो दाड निकालने की नौबत आ जाती है। इस दर्द से निजात पाने का एक बहुत ही महत्वपूर्ण मन्त्र दे रहे है। इसे सूर्य ग्रहण, दीपावली आदि में १०८ बार जप कर सिद्ध कर लें। प्रयोग के वक़्त नीम की डाली से झाडा कर दें।

शाबर मन्त्र
========

|| ॐ नमो आदेश गुरु को वन में विहाई अंजनी जिस जाया हनुमंत कीड़ा मकोड़ा माकडा यह तीनो भसमंत गुरु की शक्ति मेरी भगती फुरो मंत्र इश्वरो वाचा ||

यह सभी साधनाएं प्रयोग अजमाए हुए हैं। एक बार सिद्ध कर लेने से जब चाहे काम ले सकते हैं। जप से पहले अगर आप एक माला अपने गुरु मन्त्र का जाप करके सिद्ध करे तो इसका प्रभाव दुगना हो जाता है।

सपनों का मतलब और उनका फल (स्वप्न फल) - Dream Interpretation in Hindi (पार्ट - 6)
+++
सपने कई प्रकार के होते हैं एक वो जो हम खुली आँखों से देखते है , दूसरे वो जो हम बंद आँखों से देखते है | जगती आँखों से देखे गये सपने हमारे मन की अधूरी इच्छाएं होती है जो हमारे अंतर्मन के किसी कोने में दबी होती हैं | उनका सिर्फ एक ही मतलब होता है की हमारी अंतरात्मा क्या चाहती है |
दूसरे सपने वो होते है जो हम बंद आँखों से देखते हैं, ये रात्रि के अलग अलग पहर में आने वाले सपनों का अलग अलग मतलब होता हैं |
उन्हीं सपनों का मतलब पता करना ठीक रहता है जो हमने भोर के समय देखे हो (सुबह ४ बजे से ६-७ बजे तक का समय भोर कहलाता है) और स्वप्न देखने वाला पूर्ण रूप से स्वस्थ हो क्युकी बीमार व्यक्ति को सपने उसके तात्कालिक शारीरिक कष्ट और दवाइयों के असर से आते हैं|

४५० जंगल देखना कष्ट दूर हो
४५१ जटाधारी साधु देखना अच्छे समय की शुरुआत
४५२ जटाधारी साधु देखना शुभ लक्षण
४५३ जड़े देखना शुभ स्वप्न
४५४ जप करना विजय
४५५ जमघट देखना कार्य की प्रशंसा मिलेगी
४५६ जमीन खोदना कठिनाई से लाभ हो
४५७ जमीन पर बिस्तर लगाना दीर्घायु और सुख में वृद्धि
४५८ जयकार सुनना संकट में पड़ना
४५९ जल देखना संकट आएगा
४६० जलता घर देखना बीमारी परेशानी बढे
४६१ जलता मुर्दा देखना शुभ समाचार
४६२ जलता हुआ दीया देखना आयु में वृद्धि
४६३ जलना मान सम्मान की प्राप्ति
४६४ जलूस देखना नौकरी में उन्नति हो
४६५ जलेबी खाना सुख सुविधा बढे
४६६ जवाहरात देखना आशायें पूर्ण हो
४६८ जहाज देखना दूर की यात्रा होगी
४७२ जादू देखना या करना धन हानि
४७३ जामुन खाना कोई समस्या दूर होना
४७४ जामुन खाना या देखना यात्रा पर जाना पड़े

४७५ जाल देखना मुकदमे में हानि
४७६ जाल देखना (मचली का) संकट का संकेत
४७७ जाल देखना (मकडी का) शुभ लक्षण
४७८ जुआ खेलना व्यापार में लाभ
४८० जुगनू देखना बुरे समय की शुरुआत
४८१ जूए देखना या मारना मानसिक चिंता
४८२ जूते से पीटना मान सम्मान बढे
४८३ जूते से स्वयं पीटना मान सम्मान मिलेगा
४८४ जेब काटना व्यापार में घाटा
४८५ जेब खाली देखना अशुभ है
४८६ जेब भरी देखना खर्च अधिक होने का सूचक
४८७ जेल देखना जग हँसी हो
४८८ जेल से छूटना कार्य में सफलता
४८९ जोकर देखना समय बर्बाद हो
४९० ज्योतिष देखना संतान को कष्ट
४९१ ज्वालामुखी देखना स्थान परिवर्तन की पूर्व सूचना
४९२ झंडा देखना धर्म में आस्था बढ़ेगी
४९३ झंडा देखना पीला बीमारी आये
४९४ झंडा देखना सफेद या मंदिर का शुभ समाचार
४९५ झंडा देखना हरा यात्रा में कष्ट
४९६ झगडा देखना शुभ समाचार
४९८ झण्डा देखना धर्म की वृद्धि हो
४९९ झरना देखना दुखों का अंत होना
५०० झरना देखना (गर्म पानी का) बीमारी आये
५०१ झरना देखना (ठंडे पानी का) शुभ है
५०२ झाड़ू लगाना घर में चोरी हो
५०३ झुनझुना देखना परिवार में ख़ुशी हो
५०४ टंकी खाली देखना शुभ लक्षण
५०५ टंकी भरी देखना अशुभ घटना का संकेत
५०६ टाई रंगीन देखना शुभ
५०७ टाई सफेद देखना अशुभ
५०८ टिड्डा दल देखना व्यापार में हानि
५०९ टूटा हूआ छप्पर देखना गड़े धन की प्राप्ति के योग
५१० टेलीफोन करना मित्रों की संख्या में वृद्धि
५११ टोकरी खाली देखना शुभ लक्षण
५१२ टोकरी भरी देखना अशुभ घटना का संकेत
५१३ टोपी उतारना मान सम्मान बढे
५१४ टोपी सिर पर रखना अपमान हो
५१५ ठण्ड में ठिठुरना सुख मिले
५१६ डंडा देखना दुश्मन से सावधान रहे
५१७ डफली बजाना घर में उत्सव की सूचना
५१८ डाक खाना देखना बुरा समाचार मिले
५१९ डाकघर देखना व्यापार में उन्नति

५२० डाकिया देखना दूर के रिश्तेदार से मिलना
५२१ डाकिया देखना शुभ सूचना मिले
५२२ डाकू देखना धन वृद्धि हो
५२३ डॉक्टर को देखना स्वास्थ्य संबंधी समस्या
५२४ डॉक्टर देखना निराशा मिले
५२५ ढोल दिखाई देना किसी दुर्घटना की आशंका
५२६ तकिया देखना मान सम्मान बढे
५२७ तपस्वी दिखाई देना दान करना
५२८ तपस्वी देखना मन शांत हो
५२९ तबला बजाना जीवन सुखपूर्वक गुजरे
५३० तमाचा मारना शत्रु पर विजय
५३२ तरबूज खाते हुए देखना किसी से दुश्मनी होगी
५३३ तरबूज देखना धन लाभ
५३४ तराजू देखना कार्य निष्पक्ष पूर्ण हो
५३५ तराजू में तुलना भयंकर बीमारी हो
५३६ तर्पण करते हुए देखना परिवार में किसी बुजुर्ग की मृत्यु
५३७ तलवार देखना शत्रु पर विजय
५३९ तला पकवान खाना शुभ समाचार मिले
५४० तलाक देना धन वृद्धि हो
५४१ तवा खाली देखना अशुभ लक्षण
५४२ तवे पर रोटी सेंकना संपत्ति बढे
५४३ तहखाना देखना या उमसे प्रवेश करना तीर्थ यात्रा पर जाने का संकेत
५४४ तांगा देखना सुख मिले, सवारी का लाभ हो
५४५ तांबा देखना गुप्त रहस्य पता लगना
५४६ तावीज देखना शुभ समय का आगमन
५४७ तावीज बांधना काम में हानि हो
५४८ ताम्बा देखना सरकार से लाभ मिले
५४९ तारा देखना अशुभ
५५० तारामंडल देखना सौभाग्य की वृद्धि
५५१ ताला देखना चलते काम में रूकावट
५५२ तालाब में तैरना स्वास्थ्य लाभ
५५३ तालाब में नहाना शत्रु से हानि
५५४ ताली देखना बिगडे काम बनेंगे
५५६ ताश देखना मित्र अथवा पडोसी से लडाई हो
५५७ तिजोरी टूटती देखना कारोबार में बढ़ोतरी
५५८ तिजोरी बंद करना धन वृद्धि हो
५५९ तितली उड़ कर दूर जाना दांपत्य जीवन में क्लेश हो
५६० तितली देखना विवाह हो या प्रेमिका मिले
५६१ तितली पकड़ना नई संतान हो
५६२ तिराहा देखना लडाई झगडा हो
५६३ तिल खाना दोष लगना
५६४ तिल देखना कारोबार में लाभ
५६५ तिलक करना व्यापार बढे

५६६ तीतर देखना सम्मान में वृद्धि
५६७ तीर चलाना इच्छा पूर्ण होना
५६८ तीर दिखाई देना लक्ष्य की ओर बढऩा
५६९ तूफान देखना या उमसे फँसना संकट से छुटकारा मिले
५७० तेल पीना किसी भयंकर रोग की आशंका
५७१ तेल या तेली देखना समस्या बढे
५७२ तोंद बढ़ी देखना पेट में परेशानी हो
५७३ तोता दिखाई देना सौभाग्य में वृद्धि
५७४ तोता देखना ख़ुशी मिले
५७५ तोप देखना शत्रु नष्ट होना
५७७ तोलना महंगाई बढे
५७८ तोलिया देखना स्वास्थ्य लाभ हो
५७९ त्रिमूर्ति देखना सरकारी नौकरी मिले
५८१ त्रिशूल देखना अच्छा मार्ग दर्शन मिले
५८२ थक जाना कार्य में सफलता मिले
५८३ थप्पर खाना कार्य में सफलता
५८४ थप्पर मारना झगडे में फँसना
५८५ थर थर कंपना मान सम्मान बढे
५८६ थाली खाली देखना सफलता मिले
५८७ थाली भरी देखना अशुभ
५८८ थूक देखना परेशानी में पडऩा
५८९ थूकना मान सम्मान बढे
५९० थैली खाली देखना जमीन जायदाद में झगडा हो
५९१ थैली भरी देखना जमीन जायदाद में वृद्धि

आगे आपको और भी पोस्ट करंगे अल्फबेट के हिसाब से ज और थ का पहले पोस्ट किया है । थोड़ा थोड़ा रोज पोस्ट करते रहेंगे क्योकि करीबन 2000 के लगभग स्वपन-फल का विवरण है । कृपया जुड़े रहे और दूसरों को भी जोड़े । नीचे हमारा लिंक दिया है बहुत सी जानकारी आपको हमारे जरिये मिलेगी।

कृपया इस जानकारी को ज्यादा से ज्यादा शेयर करें ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इसका लाभ उठा सके । ऐसी बहुत से महत्वपूर्ण जानकारी के लिए हमसे जुड़े रहे और नीचे दी हुई लिंक पर क्लिक करके लाभ उठाए ।

https://www.facebook.com/groups/586117378442706/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/groups/1583682731871010/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/YogiNomiNath/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/groups/717129991797711/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/groups/nathpanth/?ref=bookmarks
(नीचे वाली लिंक मे केवल दीक्षित नाथ जी ही जुड़ सकते है)

ॐ नमः शिवाय
ॐ शिवगोरक्ष नाथाय नमः
भगवान शिव और गुरु गोरक्ष नाथ जी आपका कल्याण करें ।

योगी नौमी नाथ
रामेश्वरम शिव मंदिर,
मिलकड़ा गाँव, मुगलवाली स्कूल के पास,
कपाल मोचन रोड, बिलासपुर,
यमुना नगर, हरियाणा

व्यापार वृद्धि प्रयोग - 2
===============

-: मंत्र :-ω

"धां धीं धूं धूर्जटे पत्नीं वां वीं वुं वागधीश्वरी¬
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देव्ये शां शीं शुं में शुभम कुरु ॥"

विधी :- उपरोक्त मन्त्र सिद्ध कुंजिका स्तोत्र में से हैं । कुछ शुद्ध गुलाब में से बनी अगरबत्ती लेकर उपरोक्त मन्त्र 108 बार जप कर अगरबत्ती अभिमंत्रित कर लीजिए । उसके बाद उन अगरबत्ती में से 5 अगरबत्ती लेकर प्रज्वलित करे । उसके बाद अपने पुरे व्यवसाय स्थल में एंटी क्लोक वाइस (घडी की उलटी दिशा में) घुमाले और एक जगह लगादे और फिर देखे आपका व्यापार कैसे नहीं चलता । यह प्रयोग पूर्ण प्रामाणिक एवं कई बार परिक्षीत हैं । माँ भगवती ने चाहा तो आप व्यापार को लेकर जल्द ही चिंता मुक्त हो जायेंगे !!

महाकाली का शाबर मंत्र

महाकाली का शाबर मंत्र अत्यंत दुर्लभ और तीव्र प्रभावशाली है। इस मंत्र को पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ विधि पूर्वक जपकर सिद्ध कर लिया जाये तो साधक की सभी मनोकामनायें पूर्ण हो जाती है, और साधक संपूर्ण सुख, सौभाग्य, ऐश्वर्य एवं धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाता है। साथ ही साथ समस्त प्रकार की बाधायें भी स्वतः ही दूर हो जाती है।

शाबर मंत्र –

"सात पुनम कालका, बारह बरस क्वांर।
एको देवि जानिए, चौदह भुवन द्वार।।
द्वि-पक्षे निर्मलिए, तेरह देवन देव।
अष्टभुजी परमेश्वरी, ग्यारह रूद्र सेव।।
सोलह कला सम्पुर्णी, तीन नयन भरपुर।
दशों द्वारी तू ही माँ, पांचों बाजे नूर।।
नव-निधि षट्-दर्शनी, पंद्रह तिथि जान।
चारों युग मे काल का कर काली कल्याण।।"

इस मंत्र के द्वारा जन कल्याण तथा परोपकार भी किया जा सकता है। साधक इस मंत्र के द्वारा किसी भी बाधाग्रस्त व्यक्ति जैसे भूत प्रेतबाधा, आर्थिक बाधा, नजर दोष, शारीरिक मानसिक बाधा इत्यादि को आसानी से मिटा सकता है।

प्रयोग विधी:-

किसी भी होली, दीपावली, नवरात्रि, अथवा ग्रहण काल में इस प्रयोग को सिद्ध करना चाहिए। सर्वप्रथम निम्न सामग्रीयाँ जुटा लें। महाकाली यंत्र, महाकाली चित्र, कनेर का पीला फूल, भटकटैया का फूल, लौंग, इलायची, 3 निंबू, सिन्दूर, काले केवाच के 108 बीज धूप, दीप, नारियल, अगरबत्ती इत्यादी।

माता काली के मंदिर में या किसी एकान्त स्थान में इस साधना को सिद्ध किये जा सकते हैं। सर्वप्रथम स्नान आदि से निवृत होकर एक लकड़ी के तख्ते पर लाल वस्त्र बिछाकर महाकाली चित्र तथा यंत्र को स्थापित करें तत्पश्चात घी का चैमुखा दिया जलाकर गुरू गणेश का ध्यान कर गुरू स्थापन मंत्र तथा आत्मरक्षा मंत्र का प्रयोग करें। फिर भोजपत्र पर निम्न चैतीसा यंत्र का निर्माण करें तथा महाकाली यंत्र, महाकाली चित्र सहित चैंतीसा यंत्र का पंचोपचार या षोड़शोपचार से पूजन करे।

पूजन के समय कनेर, भटकटैया के फूल को यंत्र चित्र पर चढ़ायें, नारियल इलायची, पंचमेवा का भोग लगायें, फिर तीनों निम्बूओं को काटकर सिन्दूर का टीका लगाकर अर्पित करें तत्पश्चात हाथ में एक-एक केवाच के बीजों को लेकर उक्त मंत्र को पढ़ते हुए काली के चित्र के सामने चढ़ाते जायें इस तरह 108 बार मंत्र जपते हुए केवाच के बीजों को चढ़ायें। मंत्र जप पुर्ण होने पर उसी मंत्र से 11 बार हवन करें। एक ब्राम्हण को भोजन करायें तथा यथाशक्ति दान दक्षिणा दें। फिर इस मंत्र का प्रयोग किसी भी इच्छित कार्य के लिये कर सकते हैं।

प्रयोग नीचे लिखे अनुसार करें :-
----

1. भूत-प्रेत बधा निवारण:- हवन के राख से किसी भी भूत-प्रेत ग्रस्त रोगी को सात बार मंत्र पढ़ते हुए झाड़ दें तथा हवन के राख का टीका लगा दें फिर भोजपत्र पर चैतिसा यंत्र को अष्टगंध से लिख कर तांबे के ताबीज में भर कर पहना दें तो भूत प्रेत बाधा सदा के लिए दूर हो जाता है।

2. शत्रु बाधा निवारण:- अमावस्या के दिन एक़ निंम्बू लेकर उस पर सिंदुर से शत्रु का नाम लिखकर महाकाली मंत्र का उच्चारण करते हुये 21 बार 7 सुइयां चुभाये फिर उसे श्मशान मे ले जाकर गाड़ दें तथा उस पर शराब की धार चढ़ायें ऐसा करने से 3 दिनों मे शत्रु बाधा समाप्त हो जाती है।

3. आर्थिक बाधा निवारण:- महाकाली यंत्र के सामने घी का दीपक जलाकर महाकाली शाबर मंत्र का 21 बार जाप 21 दिनों तक करने से आर्थिक बाधा समाप्त हो जाता है।

सपनों का मतलब और उनका फल (स्वप्न फल) - Dream Interpretation in Hindi (पार्ट - 3)
++
सपने कई प्रकार के होते हैं एक वो जो हम खुली आँखों से देखते है , दूसरे वो जो हम बंद आँखों से देखते है | जगती आँखों से देखे गये सपने हमारे मन की अधूरी इच्छाएं होती है जो हमारे अंतर्मन के किसी कोने में दबी होती हैं | उनका सिर्फ एक ही मतलब होता है की हमारी अंतरात्मा क्या चाहती है |
दूसरे सपने वो होते है जो हम बंद आँखों से देखते हैं, ये रात्रि के अलग अलग पहर में आने वाले सपनों का अलग अलग मतलब होता हैं |
उन्हीं सपनों का मतलब पता करना ठीक रहता है जो हमने भोर के समय देखे हो (सुबह ४ बजे से ६-७ बजे तक का समय भोर कहलाता है) और स्वप्न देखने वाला पूर्ण रूप से स्वस्थ हो क्युकी बीमार व्यक्ति को सपने उसके तात्कालिक शारीरिक कष्ट और दवाइयों के असर से आते हैं|

१५२ कंगन देखना अपमान हो

१५३ कंघा देखना चोट लगना , दांत या कान में दर्द

१५४ कछुआ देखना धन आशा से अधिक मिलना

१५५ कटा सिर देखना शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी

१५६ कटोरा देखना बनते काम बिगडना

१५७ कत्ल करना स्वयं का अच्छा सपना है , बुरे काम से बचे

१५८ कद अपना छोटा देखना अपमान सहना , परेशानी उठाना

१५९ कद अपना बड़ा देखना भारी संकट आना

१६० कद घटना अपमान हो

१६१ कद लम्बा देखना मृत्यु तुल्य कष्ट हो

१६२ कदू देखना पेट दर्द

१६३ कनस्तर खाली देखना शुभ

१६४ कनस्तर भरा देखना अशुभ

१६५ कन्या को घर में आते देखना मां लक्ष्मी की कृपा मिलना

१६६ कन्या देखना धन वृद्धि हो

१६७ कपडा धोना पहले रूकावट , फिर लाभ

१६८ कपडा बेचते देखना व्यापार में लाभ

१६९ कपडे पर खून के दाग व्यर्थ बदनामी

१७० कपास देखना सुख, समृधि घर आये

१७१ कपूर देखना व्यापार नौकरी में लाभ

१७२ कफन देखना लम्बी उम्र

१७३ कबाडी देखना अच्छे दिनों की शुरूआत
१७४ कबूतर दिखाई देना रोग से छुटकारा
१७५ कबूतर देखना प्रेमिका से मिलना
१७६ कबूतरों का झुंड शुभ समाचार मिले
१७७ कब्र खोदना मकान का निर्माण करना
१७८ कब्रिस्तान देखना समाज में प्रतिष्ठा
१८० कमंडल देखना परिवार के किसी सदस्य से वियोग
१८१ कमल ककडी देखना सात्विक भोजन में आनंद, ख़ुशी मिले
१८२ कमल का फूल ज्ञान की प्राप्ति
१८३ कमल का फूल देखना रोग से छुटकारा
१८४ कम्बल देखना बीमारी आये
१८५ करवा चौथ औरत देखे तो आजीवन सधवा, पुरुष देखे तो धन धान्य संपूर्ण
१८६ करी खाना विधवा से विवाह, विधुर से विवाह
१८७ कर्जा देना खुशहाली आये
१८८ कर्जा लेना व्यापार में हानि
१८९ कलम देखना विद्या धन की प्राप्ति
१९० कलश देखना सफलता
१९१ कला कृतिया देखना मान समान बढे
१९२ कली देखना स्वास्थ्य खराब हो
१९३ कसम खाते देखना संतान का दुःख भोगना
१९४ कसरत बीमारी आने की सूचना
१९५ काउंटर देखना लेन देन में लाभ
१९६ कागज कोरा शुभ
१९७ कागज लिखा देखना अशुभ
१९८ काजू खाना नया व्यापार शुरू हो
१९९ कान कट जाना अपनों से वियोग
२०० कान देखना शुभ समाचार
२०१ कान साफ करना अच्छी बातों का ज्ञान
२०२ काना व्यक्ति देखना अनुकूल समय नहीं
२०३ कारखाना देखना दुर्घटना में फंसने की सूचना
२०४ काला कुत्ता देखना कार्य में सफलता
२०५ काला रंग देखना शुभ फल
२०६ काली आँखें देखना व्यापार में लाभ
२०७ काली बिल्ली देखना लाभ हो
२०८ किला देखना ख़ुशी प्राप्त हो
२०९ किसी ऊंचे स्थान से कूदना असफलता
२१० किसी रिश्तेदार को देखना उत्तम समय की शुरुआत
२११ किसी से लड़ाई करना प्रसन्नता प्राप्त होना
२१२ कीडा देखना शक्ति का प्रतीक
२१३ कील देखना / ठोकना परिवार में बटवारा हो
२१४ कुंडल पहने देखना संकट हो
२१५ कुआं देखना सम्मान बढ़ना
२१६ कुएं में पानी देखना धन लाभ

२१७ कुत्ता झपटे शत्रु की हार
२१८ कुत्ता देखना पुराने मित्र से मिलन
२१९ कुत्ता भौंकना लोगों द्वारा मजाक उड़ना
२२० कुबडा देखना कार्य में विघ्न
२२१ कुमकुम देखना कार्य में सफलता
२२२ कुम्हार देखना शुभ समाचार
२२३ कुरान सुख शांति की भावना बढे
२२४ कुर्सी खाली देखना नौकरी मिले
२२५ कुर्सी पर अन्य को बैठे देखना अपमान
२२६ कुर्सी पर स्वयं को बैठे देखना नया पद, पदोनती
२२७ कुल्हाडी देखना परिश्रम अधिक, लाभ कम
२२८ कूड़े का ढेर देखना कठिनाई के बाद धन मिले
२२९ कृपाण धर्म कार्य पूर्ण होने की सूचना
२३० कृष्ण प्रेम संबंधों में वृद्धि
२३१ केक देखना अच्छी वस्तु मिले
२३२ केतली देखना दांपत्य जीवन में शांति हो
२३३ केला खाना / देखना ख़ुशी हो
२३४ केला देखना या खाना शुभ समाचार
२३५ केश संवारना तीर्थ यात्रा
२३६ कैंची अकारण किसी से वाद
२३७ कैंची देखना घर में कलह होना
२३८ कैमरा देखना अपने भेद छिपा कर रखे
२३९ कोठी देखना दुःख मिले
२४० कोढ़ी देखना धन का लाभ
२४१ कोयल देखना उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति
२४२ कोयल देखना / सुनना शुभ समाचार
२४३ कोयला देखना व्यर्थ विवाद में फंसना
२४४ कोयला देखना प्रेम के जाल में फँस कर दुःख पाए
२४५ कोया देखना शुभ संकेत
२४६ कोर्ट-कचहरी देखना विवाद में पडऩा
२४७ कोहरा संकट समाप्त हो
२४८ कौआ दिखाई देना बुरी सूचना मिलना
२४९ कौआ देखना किसी की मृत्यु का समाचार मिलना

आगे आपको और भी पोस्ट करंगे अल्फबेट के हिसाब से अ और आ का पहले पोस्ट किया है । थोड़ा थोड़ा रोज पोस्ट करते रहेंगे क्योकि करीबन 2000 के लगभग स्वपन-फल का विवरण है । कृपया जुड़े रहे और दूसरों को भी जोड़े । नीचे हमारा लिंक दिया है बहुत सी जानकारी आपको हमारे जरिये मिलेगी।

कृपया इस जानकारी को ज्यादा से ज्यादा शेयर करें ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इसका लाभ उठा सके । ऐसी बहुत से महत्वपूर्ण जानकारी के लिए हमसे जुड़े रहे और नीचे दी हुई लिंक पर क्लिक करके लाभ उठाए ।

https://www.facebook.com/groups/586117378442706/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/groups/1583682731871010/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/YogiNomiNath/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/groups/717129991797711/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/groups/nathpanth/?ref=bookmarks
(नीचे वाली लिंक मे केवल दीक्षित नाथ जी ही जुड़ सकते है)

ॐ नमः शिवाय
ॐ शिवगोरक्ष नाथाय नमः
भगवान शिव और गुरु गोरक्ष नाथ जी आपका कल्याण करें ।
योगी नौमी नाथ
रामेश्वरम शिव मंदिर,
मिलकड़ा गाँव, मुगलवाली स्कूल के पास,
कपाल मोचन रोड, बिलासपुर,
यमुना नगर, हरियाणा ।

सपनों का मतलब और उनका फल (स्वप्न फल) - Dream Interpretation in Hindi (पार्ट - 4)
++
सपने कई प्रकार के होते हैं एक वो जो हम खुली आँखों से देखते है , दूसरे वो जो हम बंद आँखों से देखते है | जगती आँखों से देखे गये सपने हमारे मन की अधूरी इच्छाएं होती है जो हमारे अंतर्मन के किसी कोने में दबी होती हैं | उनका सिर्फ एक ही मतलब होता है की हमारी अंतरात्मा क्या चाहती है |
दूसरे सपने वो होते है जो हम बंद आँखों से देखते हैं, ये रात्रि के अलग अलग पहर में आने वाले सपनों का अलग अलग मतलब होता हैं |
उन्हीं सपनों का मतलब पता करना ठीक रहता है जो हमने भोर के समय देखे हो (सुबह ४ बजे से ६-७ बजे तक का समय भोर कहलाता है) और स्वप्न देखने वाला पूर्ण रूप से स्वस्थ हो क्युकी बीमार व्यक्ति को सपने उसके तात्कालिक शारीरिक कष्ट और दवाइयों के असर से आते हैं|

२५० खच्चर दिखाई देना धन संबंधी समस्या
२५१ खटमल देखना जीवन में संघर्ष
२५२ खटमल मारना कठिनाई से छुटकारा
२५३ खटाई खाना धन हानि हो
२५४ ख़त पढ़ना शुभ समाचार
२५५ खरगोश देखना औरत से बेवफाई
२५६ खरबूजा देखना सफलता मिले
२५७ खरोंच लगना शरीर स्वस्थ हो
२५८ खलिहान देखना सम्मान बढ़े
२५९ खाई देखना धन और प्रसिद्धि की प्राप्ति
२६० खाली खाट देखना बीमार पड़ने की सूचना
२६१ खाली जंजीर देखना इल्जाम लगेगा
२६२ खाली थाली देखना धन प्राप्ति के योग
२६३ खाली बर्तन देखना काम में हानि
२६४ खाली बैलगाड़ी देखना नुकसान होना
२६५ खिलखिलाना दुखद समाचार मिलने का संकेत
२६६ खिलौना देखना आँखों को सुख मिले
२६७ खिल्ली उडाना लोगों से निराशा मिले
२६८ खुजली होना रोग से छुटकारा पाने का संकेत
२६९ खुला दरवाजा देखना किसी व्यक्ति से मित्रता होगी
२७० खुशबू लगाना सम्मान बढे
२७१ ख़ुशी देखना परेशानी बढे
२७२ खून की वर्षा देखना देश में अकाल पड़े
२७३ खून खराबा सौभाग्य वृद्धि

२७४ खून देखना धन मिले
२७५ खून में लोटना धन
२७६ खेत काटते देखना पत्नी से मन मुटाव होना
२७७ खेत देखना यात्रा हो , विद्या व् धन की वृद्धि
२७८ खेत में पके गेहूं देखना धन लाभ होना
२७९ खेल कूद में भाग लेना भाग्य उन्नत्ती होना
२८० खोपडी देखना बौधिक कार्यों में सफलता
२८१ गंजा सिर देखना परीक्षा में पास हो, सम्मान बड़े
२८२ गड़ा धन दिखाना अचानक धन लाभ
२८३ गधा देखना प्यार मिले
२८४ गधा लदा हुआ देखना व्यापार में लाभ हो
२८५ गधे की चीख सुनना दुख हो
२८६ गधे की सवारी करना शुभ समाचार मिले
२८७ गमला देखना खाली देखने पर झंझट , फूल खिले देखने पर शुभ
२८८ गरम पानी देखना बुखार या अन्य बीमारी आये
२८९ गलिया देते देखना बदनामी हो
२९० गली देखना सुनसान गली देखने से लाभ , भीड़ वाली गली देखने से मृत्यु का समाचार
२९१ गलीचा देखना या उस पर बैठना शोक में शामिल होना
२९२ गवाही देना अपराध में फंसना
२९३ गाजर देखना फसल अच्छी हो
२९४ गाड़ी देखना यात्रा सार्थक हो
२९५ गाय का बछड़ा देखना कोई अच्छी घटना होना
२९६ गाय देखना धन लाभ हो
२९७ गाय या बैल पीले रंग की देखना महामारी आने के लक्षण
२९८ गायत्री पाठ करना दुर्लभ स्वप्न मान सम्मान बड़े
२९९ गिनती करना काम में हानि
३०० गिरगिट देखना झगडे में फंसने का संकेत
३०१ गिलहरी देखना बहुत शुभ
३०२ गिलास देखना घरेलू खर्चो में कमी होगी
३०३ गीता कष्ट दूर हो
३०४ गीता देखना दुर्लभ समय
३०५ गीदड देखना शत्रु से भय मिले
३०६ गीली वस्तु देखना लम्बी बीमारी आने के संकेत
३०७ गुठली खाना या फेंकना काफी धन आने की सूचना
३०८ गुड़ खाते हुए देखना अच्छा समय आने के संकेत
३०९ गुडिया देखना जल्दी विवाह का संकेत
३१० गुड खाना सफलता मिले
३११ गुरु दिखाई देना सफलता मिलना
३१२ गुरु-द्वारा देखना ज्ञान की प्राप्ति हो
३१३ गुलाब देखना सम्मान में वृद्धि
३१४ गेंद देखना परेशानी होना
३१५ गेंदे का फूल देखना मानसिक अशांति
३१६ गेहूँ देखना काफी मेहनत कर के कमाई होना

३१७ गेरुआ वस्त्र देखना समय शुभ है
३१८ गोबर दिखाई देना पशुओं के व्यापार में लाभ
३१९ गोबर देखना पशुओं के व्यापार में लाभ
३२० ग्रन्थ साहिब धार्मिक कार्यों में रुचि हो
३२१ ग्वाला /ग्वालिन देखना शुभ फल
३२२ घंटाघर देखना अशुभ समाचार
३२३ घंटे की आवाज़ सुनना चोरी होने का संकेत
३२४ घडा भरा देखना धन लाभ हो
३२५ घडी गुम हो जाना यात्रा का कार्यक्रम स्थगित होना
३२६ घडी देखना यात्रा पर जाना
३२७ घर देखना (खंडहर) संपत्ति में लाभ
३२८ घर देखना (सजा हुआ) संपत्ति में हानि
३२९ घर बनाना प्रसिद्धि मिलना
३३० घर में आग देखना सरकार से लाभ हो
३३१ घर में किसी और का प्रवेश देखना शत्रु पर विजय
३३२ घर लोहे का देखना मान सम्मान बढेगा
३३३ घर सोने का देखना घर में आग लगने का संकेत
३३४ घाट देखना तीर्थ यात्रा पर जाने का संकेत
३३५ घायल देखना संकट से छुटकारा
३३६ घास का मैदान देखना धन लाभ के योग
३३७ घास देखना लाभ होगा
३३८ घी देखना धन दौलत बढे
३३९ घुंघरू की आवाज सुनना मान सम्मान बढेगा
३४० घुटने टेकना वाद विवाद में सफलता मिले
३४१ घूंघट देखना नया व्यापार शुरू हो
३४२ घोड़ा काला देखना मान सम्मान बढेगा
३४३ घोड़ा देखना संकट दूर होना
३४४ घोड़ा या हाथी पर चढ़ना उन्नत्ति हो
३४५ घोड़ा सजा हुआ देखना कार्य में हानि
३४६ घोड़े पर चढ़ना व्यापार में उन्नति होना
३४८ घोड़े से गिरना व्यापार में हानि होना

आगे आपको और भी पोस्ट करंगे अल्फबेट के हिसाब से ख और घ का पहले पोस्ट किया है । थोड़ा थोड़ा रोज पोस्ट करते रहेंगे क्योकि करीबन 2000 के लगभग स्वपन-फल का विवरण है । कृपया जुड़े रहे और दूसरों को भी जोड़े । नीचे हमारा लिंक दिया है बहुत सी जानकारी आपको हमारे जरिये मिलेगी।

कृपया इस जानकारी को ज्यादा से ज्यादा शेयर करें ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इसका लाभ उठा सके । ऐसी बहुत से महत्वपूर्ण जानकारी के लिए हमसे जुड़े रहे और नीचे दी हुई लिंक पर क्लिक करके लाभ उठाए ।

https://www.facebook.com/groups/586117378442706/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/groups/1583682731871010/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/YogiNomiNath/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/groups/717129991797711/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/groups/nathpanth/?ref=bookmarks
(नीचे वाली लिंक मे केवल दीक्षित नाथ जी ही जुड़ सकते है)
ॐ नमः शिवाय

ॐ शिवगोरक्ष नाथाय नमः
भगवान शिव और गुरु गोरक्ष नाथ जी आपका कल्याण करें।

योगी नौमी नाथ
रामेश्वरम शिव मंदिर,
मिलकड़ा गाँव, मुगलवाली स्कूल के पास,
कपाल मोचन रोड, बिलासपुर,
यमुना नगर, हरियाणा

सपनों का मतलब और उनका फल (स्वप्न फल) - Dream Interpretation in Hindi (पार्ट - 5)
++
सपने कई प्रकार के होते हैं एक वो जो हम खुली आँखों से देखते है , दूसरे वो जो हम बंद आँखों से देखते है | जगती आँखों से देखे गये सपने हमारे मन की अधूरी इच्छाएं होती है जो हमारे अंतर्मन के किसी कोने में दबी होती हैं | उनका सिर्फ एक ही मतलब होता है की हमारी अंतरात्मा क्या चाहती है |
दूसरे सपने वो होते है जो हम बंद आँखों से देखते हैं, ये रात्रि के अलग अलग पहर में आने वाले सपनों का अलग अलग मतलब होता हैं |
उन्हीं सपनों का मतलब पता करना ठीक रहता है जो हमने भोर के समय देखे हो (सुबह ४ बजे से ६-७ बजे तक का समय भोर कहलाता है) और स्वप्न देखने वाला पूर्ण रूप से स्वस्थ हो क्युकी बीमार व्यक्ति को सपने उसके तात्कालिक शारीरिक कष्ट और दवाइयों के असर से आते हैं|

३४९ चंचल आँखें देखना बीमारी आने की सूचना
३५० चंदन देखना शुभ समाचार मिलना
३५१ चंद्रग्रहण देखना रोग होना
३५२ चंद्रमा को टूटते हुए देखना कोई समस्या आना
३५३ चंद्रमा देखना सम्मान मिलना
३५५ चक्की देखना मान सम्मान बढेगा
३५६ चटनी खाना दुखो में वृद्धि
३५७ चट्टान देखना (काली) शुभ
३५८ चट्टान देखना (सफेद) अशुभ
३५९ चन्द्र ग्रहण देखना सभी कार्य बिगडे
३६० चन्द्रमा देखना प्रतिष्ठा प्राप्त होना
३६१ चपत खाना शुभ फल की प्राप्ति
३६२ चपत मारना धन हानि हो
३६३ चप्पल देखना यात्रा पर जाना
३६४ चप्पल पहनना यात्रा पर जाना
३६५ चबूतरा देखना मान सम्मान बढेगा
३६६ चमगादड़ उड़ता देखना लम्बी यात्रा हो
३६७ चमगादड़ लटका देखना अशुभ संकेत
३६८ चमडा देखना दुःख हो
३६९ चम्मच देखना नजदीकी व्यक्ति धोखा दे
३७० चरखा चलाना मशीनरी खराब हो
३७१ चरबी देखना आग लगने का संकेत
३७२ चर्च देखना मानसिक शांति बढे
३७३ चलता पहिया देखना कारोबार में उन्नत्ति हो

३७४ चलना आसमान पर बीमारी आने का संकेत
३७५ चलना जमीन पर नया रोजगार मिले
३७६ चलना पानी पर कारोबार में हानि
३७७ चश्मा खोना चोरी के संकेत
३७८ चश्मा लगाना ज्ञान में बढ़ोत्तरी
३७९ चांदी का सामान देखना गृह क्लेश बढे
३८० चांदी के बर्तन में दूध पीना संपत्ति में वृद्धि हो
३८१ चांदी देखना धन लाभ होना
३८२ चाकू देखना अंत में विजय
३८३ चादर देखना बदनामी के योग
३८४ चादर मैली देखना धन लाभ हो
३८५ चादर शरीर पर लपेटना गृह क्लेश बढे
३८६ चादर समेट कर रखना चोरी होने का संकेत
३८७ चाबुक दिखाई देना झगड़ा होना
३८८ चाय देखना धन वृद्धि हो
३८९ चारपाई देखना हानि हो
३९० चावल देखना किसी से शत्रुता समाप्त होना
३९२ चिडिय़ा को रोते देखता धन-संपत्ति नष्ट होना
३९३ चिडिय़ा दिखाई देना नौकरी में पदोन्नति
३९४ चिडिय़ा देखना मेहमान आने का संकेत
३९५ चित्र देखना पुराने मित्र से मिलन हो
३९६ चींटियाँ बहुत अधिक देखना परेशानी आये
३९८ चींटी देखना धन लाभ हो
३९९ चींटी मारना तुरंत सफलता मिले
४०० चील देखना शत्रुओं से हानि
४०१ चील देखना बदनामी हो
४०२ चुंगी देना चलते काम में रूकावट
४०३ चुंगी लेना आर्थिक लाभ
४०४ चुटकी काटना परिवार में क्लेश
४०५ चुडैल देखना धन हानि हो
४०६ चुनरी दिखाई देना सौभाग्य की प्राप्ति
४०७ चुम्बन देना मित्रता बढे
४०८ चुम्बन लेना आर्थिक समृधि हो
४०९ चिडिय़ा तोड़ना पति दीर्घायु हो (औरत के लिए)
४१० चूड़ी दिखाई देना सौभाग्य में वृद्धि
४११ चूड़ी देखना सौभाग्य में वृद्धि
४१२ चूरन खाना बीमारी में लाभ
४१३ चूल्हा देखना उत्तम भोजन प्राप्त हो
४१४ चूहा चूहे दानी से निकलते देखना कष्ट से मुक्ति
४१५ चूहा देखना औरत से धोखा
४१६ चूहा फंसा देखना शरीर को कष्ट
४१७ चूहा मरा देखना धन लाभ
४१८ चूहा मारना धन हानि

४१९ चेक लिखकर देना विरासत में धन मिलना
४२० चेचक निकलना धन की प्राप्ति
४२१ चोंच वाला पक्षी देखना व्यवसाय में लाभ
४२२ चोकलेट खाना अच्छा समय आने वाला है
४२३ चोटी पर स्वयं को देखना हानि हो
४२४ चोर पकड़ना धन आने की सूचना
४२५ चोराहा देखना यात्रा में सफलता
४२६ चौकीदार देखना अचानक धन आये
४२७ चौथ का चाँद देखना बहुत अशुभ
४२८ छड़ी देखना संतान से लाभ हो
४२९ छत देखना मकान बने
४३० छतरी लगाकर चलना मुसीबतों से छुटकारा मिलना
४३१ छत्र देखना राज दरबार में सम्मान मिले
४३२ छम छम की आवाज़ आये मेहमान आये
४३३ छलनी देखना व्यापार में हानि
४३४ छलांग लगाना असफलता हाथ लगे
४३५ छल्ला पहनना शिक्षा में वृद्धि
४३६ छाछ पीना धन लाभ हो
४३७ छाज देखना सम्मान बढे
४३८ छाती देखना स्त्री वश में हो
४४० छात्रों का समूह देखना शिक्षा में लाभ
४४१ छापाखाना देखना धन लाभ
४४२ छिपकली दिखाई देना घर में चोरी होना
४४३ छिपकली देखना दुश्मन से कष्ट
४४४ छींक आना अशुभ लक्षण
४४५ छुआरा खाना धन लाभ हो
४४६ छुरा देखना दुश्मन से भय हो
४४७ छुरी दिखना संकट से मुक्ति
४४८ छोटा जूता पहनना किसी स्त्री से झगड़ा
४४९ छोटे बच्चे देखना इच्छा पूरण हो

आगे आपको और भी पोस्ट करंगे अल्फबेट के हिसाब से च और छ का पहले पोस्ट किया है । थोड़ा थोड़ा रोज पोस्ट करते रहेंगे क्योकि करीबन 2000 के लगभग स्वपन-फल का विवरण है । कृपया जुड़े रहे और दूसरों को भी जोड़े । नीचे हमारा लिंक दिया है बहुत सी जानकारी आपको हमारे जरिये मिलेगी।

कृपया इस जानकारी को ज्यादा से ज्यादा शेयर करें ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इसका लाभ उठा सके । ऐसी बहुत से महत्वपूर्ण जानकारी के लिए हमसे जुड़े रहे और नीचे दी हुई लिंक पर क्लिक करके लाभ उठाए ।

https://www.facebook.com/groups/586117378442706/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/groups/1583682731871010/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/YogiNomiNath/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/groups/717129991797711/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/groups/nathpanth/?ref=bookmarks

(नीचे वाली लिंक मे केवल दीक्षित नाथ जी ही जुड़ सकते है)

ॐ नमः शिवाय

ॐ शिवगोरक्ष नाथाय नमः

भगवान शिव और गुरु गोरक्ष नाथ जी आपका कल्याण करें ।

योगी नौमी नाथ
रामेश्वरम शिव मंदिर,
मिलकड़ा गाँव, मुगलवाली स्कूल के पास,
कपाल मोचन रोड, बिलासपुर,
यमुना नगर, हरियाणा

प्रश्नोत्तरी (पुनर्जन्म विषय पर) :-

(1) प्रश्न :- पुनर्जन्म किसको कहते हैं ?
उत्तर :- जब जीवात्मा एकv शरीर का त्याग करके किसी दूसरे शरीर में जाती है तो इस बार बार जन्म लेने की क्रिया को पुनर्जन्म कहते हैं ।

(2) प्रश्न :- पुनर्जन्म क्यों होता है ?
उत्तर :- जब एक जन्म के अच्छे बुरे कर्मों के फल अधुरे रह जाते हैं तो उनको भोगने के लिए दूसरे जन्म आवश्यक हैं ।

(3) प्रश्न :- अच्छे बुरे कर्मों का फल एक ही जन्म में क्यों नहीं मिल जाता ? एक में ही सब निपट जाये तो कितना अच्छा हो ?
उत्तर :- नहीं जब एक जन्म में कर्मों का फल शेष रह जाए तो उसे भोगने के लिए दूसरे जन्म अपेक्षित होते हैं ।

(4) प्रश्न :- पुनर्जन्म को कैसे समझा जा सकता है ?
उत्तर :- पुनर्जन्म को समझने के लिए जीवन और मृत्यु को समझना आवश्यक है । और जीवन मृत्यु को समझने के लिए शरीर को समझना आवश्यक है ।

(5) प्रश्न :- शरीर के बारे में समझाएँ ?
उत्तर :- हमारे शरीर को निर्माण प्रकृति से हुआ है ।
जिसमें मूल प्रकृति (सत्व रजस और तमस) से प्रथम बुद्धि तत्व का निर्माण हुआ है ।
बुद्धि से अहंकार (बुद्धि का आभामण्डल) ।
अहंकार से पांच ज्ञानेन्द्रियाँ (चक्षु, जिह्वा, नासिका, त्वचा, श्रोत्र), मन ।
पांच कर्मेन्द्रियाँ (हस्त, पाद, उपस्थ, पायु, वाक्) ।

शरीर की रचना को दो भागों में बाँटा जाता है (सूक्ष्म शरीर और स्थूल शरीर) ।

(6) प्रश्न :- सूक्ष्म शरीर किसको बोलते हैं ?
उत्तर :- सूक्ष्म शरीर में बुद्धि, अहंकार, मन, ज्ञानेन्द्रियाँ । ये सूक्ष्म शरीर आत्मा को सृष्टि के आरम्भ में जो मिलता है वही एक ही सूक्ष्म शरीर सृष्टि के अंत तक उस आत्मा के साथ पूरे एक सृष्टि काल (४३२०००००००० वर्ष) तक चलता है । और यदि बीच में ही किसी जन्म में कहीं आत्मा का मोक्ष हो जाए तो ये सूक्ष्म शरीर भी प्रकृति में वहीं लीन हो जायेगा ।

(7) प्रश्न :- स्थूल शरीर किसको कहते हैं ?
उत्तर :- पंच कर्मेन्द्रियाँ (हस्त, पाद, उपस्थ, पायु, वाक्) , ये समस्त पंचभौतिक बाहरी शरीर ।

(8) प्रश्न :- जन्म क्या होता है ?
उत्तर :- जीवात्मा का अपने करणों (सूक्ष्म शरीर) के साथ किसी पंचभौतिक शरीर में आ जाना ही जन्म कहलाता है ।

(9) प्रश्न :- मृत्यु क्या होती है ?
उत्तर :- जब जीवात्मा का अपने पंचभौतिक स्थूल शरीर से वियोग हो जाता है, तो उसे ही मृत्यु कहा जाता है । परन्तु मृत्यु केवल सथूल शरीर की होती है , सूक्ष्म शरीर की नहीं । सूक्ष्म शरीर भी छूट गया तो वह मोक्ष कहलाएगा मृत्यु नहीं । मृत्यु केवल शरीर बदलने की प्रक्रिया है, जैसे मनुष्य कपड़े बदलता है । वैसे ही आत्मा शरीर भी बदलता है ।

(10) प्रश्न :- मृत्यु होती ही क्यों है ?
उत्तर :- जैसे किसी एक वस्तु का निरन्तर प्रयोग करते रहने से उस वस्तु का सामर्थ्य घट जाता है, और उस वस्तु को बदलना आवश्यक हो जाता है, ठीक वैसे ही एक शरीर का सामर्थ्य भी घट जाता है और इन्द्रियाँ निर्बल हो जाती हैं । जिस कारण उस शरीर को बदलने की प्रक्रिया का नाम ही मृत्यु है ।

(11) प्रश्न :- मृत्यु न होती तो क्या होता ?
उत्तर :- तो बहुत अव्यवस्था होती । पृथ्वी की जनसंख्या बहुत बढ़ जाती । और यहाँ पैर धरने का भी स्थान न होता ।

(12) प्रश्न :- क्या मृत्यु होना बुरी बात है ?
उत्तर :- नहीं, मृत्यु होना कोई बुरी बात नहीं ये तो एक प्रक्रिया है शरीर परिवर्तन की ।

(13) प्रश्न :- यदि मृत्यु होना बुरी बात नहीं है तो लोग इससे इतना डरते क्यों हैं ?
उत्तर :- क्योंकि उनको मृत्यु के वैज्ञानिक स्वरूप की जानकारी नहीं है । वे अज्ञानी हैं । वे समझते हैं कि मृत्यु के समय बहुत कष्ट होता है । उन्होंने वेद, उपनिषद, या दर्शन को कभी पढ़ा नहीं वे ही अंधकार में पड़ते हैं और मृत्यु से पहले कई बार मरते हैं ।

(14) प्रश्न :- तो मृत्यु के समय कैसा लगता है ? थोड़ा सा तो बतायें ?
उत्तर :- जब आप बिस्तर में लेटे लेटे नींद में जाने लगते हैं तो आपको कैसा लगता है ?? ठीक वैसा ही मृत्यु की अवस्था में जाने में लगता है उसके बाद कुछ अनुभव नहीं होता । जब आपकी मृत्यु किसी हादसे से होती है तो उस समय आमको मूर्छा आने लगती है, आप ज्ञान शून्य होने लगते हैं जिससे की आपको कोई पीड़ा न हो । तो यही ईश्वर की सबसे बड़ी कृपा है कि मृत्यु के समय मनुष्य ज्ञान शून्य होने लगता है और सुषुुप्तावस्था में जाने लगता है ।

(15) प्रश्न :- मृत्यु के डर को दूर करने के लिए क्या करें ?
उत्तर :- जब आप वैदिक आर्ष ग्रन्थ (उपनिषद, दर्शन आदि) का गम्भीरता से अध्ययन करके जीवन,मृत्यु, शरीर, आदि के विज्ञान को जानेंगे तो आपके अन्दर का, मृत्यु के प्रति भय मिटता चला जायेगा और दूसरा ये की योग मार्ग पर चलें तो स्वंय ही आपका अज्ञान कमतर होता जायेगा और मृत्यु भय दूर हो जायेगा । आप निडर हो जायेंगे । जैसे हमारे बलिदानियों की गाथायें आपने सुनी होंगी जो राष्ट्र की रक्षा के लिये बलिदान हो गये । तो आपको क्या लगता है कि क्या वो ऐसे ही एक दिन में बलिदान देने को तैय्यार हो गये थे ? नहीं उन्होने भी योगदर्शन, गीता, साँख्य, उपनिषद, वेद आदि पढ़कर ही निर्भयता को प्राप्त किया था । योग मार्ग को जीया था, अज्ञानता का नाश किया था । महाभारत के युद्ध में भी जब अर्जुन भीष्म, द्रोणादिकों की मृत्यु के भय से युद्ध की मंशा को त्याग बैठा था तो योगेश्वर कृष्ण ने भी तो अर्जुन को इसी सांख्य, योग, निष्काम कर्मों के सिद्धान्त के माध्यम से जीवन मृत्यु का ही तो रहस्य समझाया था और यह बताया कि शरीर तो मरणधर्मा है ही तो उसी शरीर विज्ञान को जानकर ही अर्जुन भयमुक्त हुआ । तो इसी कारण तो वेदादि ग्रन्थों का स्वाध्याय करने वाल मनुष्य ही राष्ट्र के लिए अपना शीश कटा सकता है, वह मृत्यु से भयभीत नहीं होता , प्रसन्नता पूर्वक मृत्यु को आलिंगन करता है ।

(16) प्रश्न :- किन किन कारणों से पुनर्जन्म होता है ?
उत्तर :- आत्मा का स्वभाव है कर्म करना, किसी भी क्षण आत्मा कर्म किए बिना रह ही नहीं सकता । वे कर्म अच्छे करे या फिर बुरे, ये उसपर निर्भर है, पर कर्म करेगा अवश्य । तो ये कर्मों के कारण ही आत्मा का पुनर्जन्म होता है । पुनर्जन्म के लिए आत्मा सर्वथा ईश्वराधीन है ।

(17) प्रश्न :- पुनर्जन्म कब कब नहीं होता ?
उत्तर :- जब आत्मा का मोक्ष हो जाता है तब पुनर्जन्म नहीं होता है ।

(18) प्रश्न :- मोक्ष होने पर पुनर्जन्म क्यों नहीं होता ?
उत्तर :- क्योंकि मोक्ष होने पर स्थूल शरीर तो पंचतत्वों में लीन हो ही जाता है, पर सूक्ष्म शरीर जो आत्मा के सबसे निकट होता है, वह भी अपने मूल कारण प्रकृति में लीन हो जाता है ।

(19) प्रश्न :- मोक्ष के बाद क्या कभी भी आत्मा का पुनर्जन्म नहीं होता ?
उत्तर :- मोक्ष की अवधि तक आत्मा का पुनर्जन्म नहीं होता । उसके बाद होता है ।

(20) प्रश्न :- लेकिन मोक्ष तो सदा के लिए होता है, तो फिर मोक्ष की एक निश्चित अवधि कैसे हो सकती है ?
उत्तर :- सीमित कर्मों का कभी असीमित फल नहीं होता । यौगिक दिव्य कर्मों का फल हमें ईश्वरीय आनन्द के रूप में मिलता है, और जब ये मोक्ष की अवधि समाप्त होती है तो दुबारा से ये आत्मा शरीर धारण करती है ।

(21) प्रश्न :- मोक्ष की अवधि कब तक होती है ?
उत्तर :- मोक्ष का समय ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्ष है, जब तक आत्मा मुक्त अवस्था में रहती है ।

(22) प्रश्न :- मोक्ष की अवस्था में स्थूल शरीर या सूक्ष्म शरीर आत्मा के साथ रहता है या नहीं ?
उत्तर :- नहीं मोक्ष की अवस्था में आत्मा पूरे ब्रह्माण्ड का चक्कर लगाता रहता है और ईश्वर के आनन्द में रहता है, बिलकुल ठीक वैसे ही जैसे कि मछली पूरे समुद्र में रहती है । और जीव को किसी भी शरीर की आवश्यक्ता ही नहीं होती।

(23) प्रश्न :- मोक्ष के बाद आत्मा को शरीर कैसे प्राप्त होता है ?
उत्तर :- सबसे पहला तो आत्मा को कल्प के आरम्भ (सृष्टि आरम्भ) में सूक्ष्म शरीर मिलता है फिर ईश्वरीय मार्ग और औषधियों की सहायता से प्रथम रूप में अमैथुनी जीव शरीर मिलता है, वो शरीर सर्वश्रेष्ठ मनुष्य या विद्वान का होता है जो कि मोक्ष रूपी पुण्य को भोगने के बाद आत्मा को मिला है । जैसे इस वाली सृष्टि के आरम्भ में चारों ऋषि विद्वान (वायु , आदित्य, अग्नि , अंगिरा) को मिला जिनको वेद के ज्ञान से ईश्वर ने अलंकारित किया । क्योंकि ये ही वो पुण्य आत्मायें थीं जो मोक्ष की अवधि पूरी करके आई थीं ।

(24) प्रश्न :- मोक्ष की अवधि पूरी करके आत्मा को मनुष्य शरीर ही मिलता है या जानवर का ?
उत्तर :- मनुष्य शरीर ही मिलता है ।

(25) प्रश्न :- क्यों केवल मनुष्य का ही शरीर क्यों मिलता है ? जानवर का क्यों नहीं ?
उत्तर :- क्योंकि मोक्ष को भोगने के बाद पुण्य कर्मों को तो भोग लिया , और इस मोक्ष की अवधि में पाप कोई किया ही नहीं तो फिर जानवर बनना सम्भव ही नहीं , तो रहा केवल मनुष्य जन्म जो कि कर्म शून्य आत्मा को मिल जाता है ।

(26) प्रश्न :- मोक्ष होने से पुनर्जन्म क्यों बन्द हो जाता है ?
उत्तर :- क्योंकि योगाभ्यास आदि साधनों से जितने भी पूर्व कर्म होते हैं (अच्छे या बुरे) वे सब कट जाते हैं । तो ये कर्म ही तो पुनर्जन्म का कारण हैं, कर्म ही न रहे तो पुनर्जन्म क्यों होगा ??

(27) प्रश्न :- पुनर्जन्म से छूटने का उपाय क्या है ?
उत्तर :- पुनर्जन्म से छूटने का उपाय है योग मार्ग से मुक्ति या मोक्ष का प्राप्त करना ।

(28) प्रश्न :- पुनर्जन्म में शरीर किस आधार पर मिलता है ?
उत्तर :- जिस प्रकार के कर्म आपने एक जन्म में किए हैं उन कर्मों के आधार पर ही आपको पुनर्जन्म में शरीर मिलेगा ।
(29) प्रश्न :- कर्म कितने प्रकार के होते हैं ?
उत्तर :- मुख्य रूप से कर्मों को तीन भागों में बाँटा गया है :- सात्विक कर्म , राजसिक कर्म , तामसिक कर्म ।
(१) सात्विक कर्म :- सत्यभाषण, विद्याध्ययन, परोपकार, दान, दया, सेवा आदि ।
(२) राजसिक कर्म :- मिथ्याभाषण, क्रीडा, स्वाद लोलुपता, स्त्रीआकर्षण, चलचित्र आदि ।
(३) तामसिक कर्म :- चोरी, जारी, जूआ, ठग्गी, लूट मार, अधिकार हनन आदि ।

और जो कर्म इन तीनों से बाहर हैं वे दिव्य कर्म कलाते हैं, जो कि ऋषियों और योगियों द्वारा किए जाते हैं । इसी कारण उनको हम तीनों गुणों से परे मानते हैं । जो कि ईश्वर के निकट होते हैं और दिव्य कर्म ही करते हैं ।

(30) प्रश्न :- किस प्रकार के कर्म करने से मनुष्य योनि प्राप्त होती है ?
उत्तर :- सात्विक और राजसिक कर्मों के मिलेजुले प्रभाव से मानव देह मिलती है , यदि सात्विक कर्म बहुत कम है और राजसिक अधिक तो मानव शरीर तो प्राप्त होगा परन्तु किसी नीच कुल में , यदि सात्विक गुणों का अनुपात बढ़ता जाएगा तो मानव कुल उच्च ही होता जायेगा । जिसने अत्यधिक सात्विक कर्म किए होंगे वो विद्वान मनुष्य के घर ही जन्म लेगा ।

(31) प्रश्न :- किस प्रकार के कर्म करने से आत्मा जीव जन्तुओं के शरीर को प्राप्त होता है ?
उत्तर :- तामसिक और राजसिक कर्मों के फलरूप जानवर शरीर आत्मा को मिलता है । जितना तामसिक कर्म अधिक किए होंगे उतनी ही नीच योनि उस आत्मा को प्राप्त होती चली जाती है । जैसे लड़ाई स्वभाव वाले , माँस खाने वाले को कुत्ता, गीदड़, सिंह, सियार आदि का शरीर मिल सकता है , और घोर तामसिक कर्म किए हुए को साँप, नेवला, बिच्छू, कीड़ा, काकरोच, छिपकली आदि । तो ऐसे ही कर्मों से नीच शरीर मिलते हैं और ये जानवरों के शरीर आत्मा की भोग योनियाँ हैं ।

(32) प्रश्न :- तो क्या हमें यह पता लग सकता है कि हम पिछले जन्म में क्या थे ? या आगे क्या होंगे ?
उत्तर :- नहीं कभी नहीं, सामान्य मनुष्य को यह पता नहीं लग सकता । क्योंकि यह केवल ईश्वर का ही अधिकार है कि हमें हमारे कर्मों के आधार पर शरीर दे । वही सब जानता है ।

(33) प्रश्न :- तो फिर यह किसको पता चल सकता है ?
उत्तर :- केवल एक सिद्ध योगी ही यह जान सकता है , योगाभ्यास से उसकी बुद्धि । अत्यन्त तीव्र हो चुकी होती है कि वह ब्रह्माण्ड एवं प्रकृति के महत्वपूर्ण रहस्य अपनी योगज शक्ति से जान सकता है । उस योगी को बाहय इन्द्रियों से ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं रहती है
वह अन्तः मन और बुद्धि से सब जान लेता है । उसके सामने भूत और भविष्य दोनों सामने आ खड़े होते हैं ।

(34) प्रश्न :- यह बतायें की योगी यह सब कैसे जान लेता है ?
उत्तर :- अभी यह लेख पुनर्जन्म पर है, यहीं से प्रश्न उत्तर का ये क्रम चला देंगे तो लेख का बहुत ही विस्तार हो जायेगा । इसीलिये हम अगले लेख में यह विषय विस्तार से समझायेंगे कि योगी कैसे अपनी विकसित शक्तियों से सब कुछ जान लेता है ? और वे शक्तियाँ कौन सी हैं ? कैसे प्राप्त होती हैं ? इसके लिए अगले लेख की प्रतीक्षा करें ।

(35) प्रश्न :- क्या पुनर्जन्म के कोई प्रमाण हैं ?
उत्तर :- हाँ हैं, जब किसी छोटे बच्चे को देखो तो वह अपनी माता के स्तन से सीधा ही दूध पीने लगता है जो कि उसको बिना सिखाए आ जाता है क्योंकि ये उसका अनुभव पिछले जन्म में दूध पीने का रहा है, वर्ना बिना किसी कारण के ऐसा हो नहीं सकता । दूसरा यह कि कभी आप उसको कमरे में अकेला लेटा दो तो वो कभी कभी हँसता भी है , ये सब पुराने शरीर की बातों को याद करके वो हँसता है पर जैसे जैसे वो बड़ा होने लगता है तो धीरे धीरे सब भूल जाता है ।

(36) प्रश्न :- क्या इस पुनर्जन्म को सिद्ध करने के लिए कोई उदाहरण हैं ?
उत्तर :- हाँ, जैसे अनेकों समाचार पत्रों में, या TV में भी आप सुनते हैं कि एक छोटा सा बालक अपने पिछले जन्म की घटनाओं को याद रखे हुए है, और सारी बातें बताता है जहाँ जिस गाँव में वो पैदा हुआ, जहाँ उसका घर था, जहाँ पर वो मरा था । और इस जन्म में वह अपने उस गाँव में कभी गया तक नहीं था लेकिन फिर भी अपने उस गाँव की सारी बातें याद रखे हुए है , किसी ने उसको कुछ बताया नहीं, सिखाया नहीं, दूर दूर तक उसका उस गाँव से इस जन्म में कोई नाता नहीं है । फिर भी उसकी गुप्त बुद्धि जो कि सूक्ष्म शरीर का भाग है वह घटनाएँ संजोए हुए है जाग्रत हो गई और बालक पुराने जन्म की बातें बताने लग पड़ा ।

(37) प्रश्न :- लेकिन ये सब मनघड़ंत बातें हैं, हम विज्ञान के युग में इसको नहीं मान सकते क्योंकि वैज्ञानिक रूप से ये बातें बेकार सिद्ध होती हैं, क्या कोई तार्किक और वैज्ञानिक आधार है इन बातों को सिद्ध करने का ?
उत्तर :- आपको किसने कहा कि हम विज्ञान के विरुद्ध इस पुनर्जन्म के सिद्धान्त का दावा करेंगे । ये वैज्ञानिक रूप से सत्य है , और आपको ये हम अभी सिद्ध करके दिखाते हैं ।

(38) प्रश्न :- तो सिद्ध कीजीए ?
उत्तर :- जैसा कि आपको पहले बताया गया है कि मृत्यु केवल स्थूल शरीर की होती है, पर सूक्ष्म शरीर आत्मा के साथ वैसे ही आगे चलता है , तो हर जन्म के कर्मों के संस्कार उस बुद्धि में समाहित होते रहते हैं । और कभी किसी जन्म में वो कर्म अपनी वैसी ही परिस्थिती पाने के बाद जाग्रत हो जाते हैं ।
इसे उदहारण से समझें :- एक बार एक छोटा सा ६ वर्ष का बालक था, यह घटना हरियाणा के सिरसा के एक गाँव की है । जिसमें उसके माता पिता उसे एक स्कूल में घुमाने लेकर गये जिसमें उसका दाखिला करवाना था और वो बच्चा केवल हरियाणवी या हिन्दी भाषा ही जानता था कोई तीसरी भाषा वो समझ तक नहीं सकता था । लेकिन हुआ कुछ यूँ था कि उसे स्कूल की Chemistry Lab में ले जाया गया और वहाँ जाते ही उस बच्चे का मूँह लाल हो गया !! चेहरे के हावभाव बदल गये !! और उसने एकदम फर्राटेदार French भाषा बोलनी शुरू कर दी !! उसके माता पिता बहुत डर गये और घबरा गये , तुरंत ही बच्चे को अस्पताल ले जाया गया । जहाँ पर उसकी बातें सुनकर डाकटर ने एक दुभाषिये का प्रबन्ध किया । जो कि French और हिन्दी जानता था , तो उस दुभाषिए ने सारा वृतान्त उस बालक से पूछा तो उस बालक ने बताया कि " मेरा नाम Simon Glaskey है और मैं French Chemist हूँ । मेरी मौत मेरी प्रयोगशाला में एक हादसे के कारण (Lab.) में हुई थी । "

तो यहाँ देखने की बात यह है कि इस जन्म में उसे पुरानी घटना के अनुकूल मिलती जुलती परिस्थिति से अपना वह सब याद आया जो कि उसकी गुप्त बुद्धि में दबा हुआ था । यानि की वही पुराने जन्म में उसके साथ जो प्रयोगशाला में हुआ, वैसी ही प्रयोगशाला उस दूसरे जन्म में देखने पर उसे सब याद आया । तो ऐसे ही बहुत सी उदहारणों से आप पुनर्जन्म को वैज्ञानिक रूप से सिद्ध कर सकते हो ।

(39) प्रश्न :- तो ये घटनाएँ भारत में ही क्यों होती हैं ? पूरा विश्व इसको मान्यता क्यों नहीं देता ?
उत्तर :- ये घटनायें पूरे विश्व भर में होती रहती हैं और विश्व इसको मान्यता इसलिए नहीं देता क्योंकि उनको वेदानुसार यौगिक दृष्टि

से शरीर का कुछ भी ज्ञान नहीं है । वे केवल माँस और हड्डियों के समूह को ही शरीर समझते हैं , और उनके लिए आत्मा नाम की कोई वस्तु नहीं है । तो ऐसे में उनको न जीवन का ज्ञान है, न मृत्यु का ज्ञान है, न आत्मा का ज्ञान है, न कर्मों का ज्ञान है, न ईश्वरीय व्यवस्था का ज्ञान है । और अगर कोई पुनर्जन्म की कोई घटना उनके सामने आती भी है तो वो इसे मानसिक रोग जानकर उसको Multiple Personality Syndrome का नाम देकर अपना पीछा छुड़ा लेते हैं और उसके कथनानुसार जाँच नहीं करवाते हैं ।

(40) प्रश्न :- क्या पुनर्जन्म केवल पृथिवी पर ही होता है या किसी और ग्रह पर भी ?
उत्तर :- ये पुनर्जन्म पूरे ब्रह्माण्ड में यत्र तत्र होता है, किसने असंख्य सौरमण्डल हैं, कितनी ही पृथीवियाँ हैं । तो एक पृथीवी के जीव मरकर ब्रह्माण्ड में किसी दूसरी पृथीवी के उपर किसी न किसी शरीर में भी जन्म ले सकते हैं । ये ईश्वरीय व्यवस्था के अधीन है ।

(41) प्रश्न :- परन्तु यह बड़ा ही अजीब लगता है कि मान लो कोई हाथी मरकर मच्छर बनता है तो इतने बड़े हाथी की आत्मा मच्छर के शरीर में कैसे घुसेगी ?

उत्तर :- यही तो भ्रम है आपका कि आत्मा जो है वो पूरे शरीर में नहीं फैली होती । वो तो हृदय के पास छोटे अणुरूप में होती है । सब जीवों की आत्मा एक सी है । चाहे वो व्हेल मछली हो, चाहे वो एक कीड़ी हो ।

{ नोट :- यह पुनर्जन्म पर संक्षिप्त लेख था, इसको विस्तार से जानने के लिए वेद, दर्शन, उपनिषद, सत्यार्थ प्रकाश आदिग्रन्थों का विचारपूर्वक स्वाध्याय करें । }

ओ३म् तत् सत् ।।
Ap
हो सकता है कि समयाभाव से आप पूरा प्रश्नोत्री न पढ सके किन्तु कम से कम सभी प्रश्न अवश्य एकबार पढ लें
धन्यवाद

श्रावण माह मे शिवजी का पूजन
⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛

शिवजी की पूजा में ध्यान रखने योग्य बात शिव पुराण के अनुसार भगवान शिव को कौन सी चीज़ चढाने से मिलता है क्या फल किसी भी देवी-देवता का पूजन करते वक़्त उनको अनेक चीज़ें अर्पित की जाती है। प्रायः भगवान को अर्पित की जाने वाली हर चीज़ का फल अलग होता है। शिव पुराण में इस बात का वर्णन मिलता है की भगवान शिव को अर्पित करने वाली अलग-अलग चीज़ों का क्या फल होता है। शिव पुराण के अनुसार जानिए कौन सा अनाज भगवान शिव को चढ़ाने से क्या फल मिलता है:

• भगवान शिव को चावल चढ़ाने से धन की प्राप्ति होती है।
• तिल चढ़ाने से पापों का नाश हो जाता है।
• जौ अर्पित करने से सुख में वृद्धि होती है।
• गेहूं चढ़ाने से संतान वृद्धि होती है। यह सभी अन्न भगवान को अर्पण करने के बाद गरीबों में वितरित कर देना चाहिए।

शिव पुराण के अनुसार जानिए भगवान शिव को कौन सा रस (द्रव्य) चढ़ाने से उसका क्या फल मिलता है :
⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛
• ज्वर (बुखार) होने पर भगवान शिव को जलधारा चढ़ाने से शीघ्र लाभ मिलता है। सुख व संतान की वृद्धि के लिए भी जलधारा द्वारा शिव की पूजा उत्तम बताई गई है।
• नपुंसक व्यक्ति अगर शुद्ध घी से भगवान शिव का अभिषेक करे, ब्राह्मणों को भोजन कराए तथा सोमवार का व्रत करे तो उसकी समस्या का निदान संभव है।
• तेज दिमाग के लिए शक्कर मिश्रित दूध भगवान शिव को चढ़ाएं।
• सुगंधित तेल से भगवान शिव का अभिषेक करने पर समृद्धि में वृद्धि होती है।
• शिवलिंग पर ईख (गन्ना) का रस चढ़ाया जाए तो सभी आनंदों की प्राप्ति होती है।
• शिव को गंगाजल चढ़ाने से भोग व मोक्ष दोनों की प्राप्ति होती है।
• मधु (शहद) से भगवान शिव का अभिषेक करने से राजयक्ष्मा (टी.बी) रोग में आराम मिलता है।
शिव पुराण के अनुसार जानिए भगवान शिव को कौन का फूल चढ़ाया जाए तो उसका क्या फल मिलता है-
⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛⚛

• लाल व सफेद आंकड़े के फूल से भगवान शिव का पूजन करने पर भोग व मोक्ष की प्राप्ति होती है।
• चमेली के फूल से पूजन करने पर वाहन सुख मिलता है।
• अलसी के फूलों से शिव का पूजन करने से मनुष्य भगवान विष्णु को प्रिय होता है।
• शमी पत्रों (पत्तों) से पूजन करने पर मोक्ष प्राप्त होता है।
• बेला के फूल से पूजन करने पर सुंदर व सुशील पत्नी मिलती है।
• जूही के फूल से शिव का पूजन करें तो घर में कभी अन्न की कमी नहीं होती।
• कनेर के फूलों से शिव पूजन करने से नए वस्त्र मिलते हैं।
• हरसिंगार के फूलों से पूजन करने पर सुख-सम्पति में वृद्धि होती है।
• धतूरे के फूल से पूजन करने पर भगवान शंकर सुयोग्य पुत्र प्रदान करते हैं, जो कुल का नाम रोशन करता है।
• लाल डंठल वाला धतूरा पूजन में शुभ माना गया है।
• दूर्वा से पूजन करने पर आयु बढ़ती है।

⚛️⚛️⚛️⚛️⚛️⚛️⚛️⚛️⚛️

बिल्व वृक्ष के बारे मे जानकारी

1. बिल्व वृक्ष के आसपास सांप नहीं आते।
2. अगर किसी की शव यात्रा बिल्व वृक्ष की छाया से होकर गुजरे तो उसका मोक्ष हो जाता है।
3. वायुमंडल में व्याप्त अशुद्धियों को सोखने की क्षमता सबसे ज्यादा बिल्व वृक्ष में होती है।
4. चार पांच छः या सात पत्तों वाले बिल्व पत्रक पाने वाला परम भाग्यशाली और शिव को अर्पण करने से अनंत गुना फल मिलता है।
5. बेल वृक्ष को काटने से वंश का नाश होता है। और बेल वृक्ष लगाने से वंश की वृद्धि होती है।
6. सुबह शाम बेल वृक्ष के दर्शन मात्र से पापों का नाश होता है।
7. बेल वृक्ष को सींचने से पितर तृप्त होते है।
8. बेल वृक्ष और सफ़ेद आक को जोड़े से लगाने पर अटूट लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।
9. बेल पत्र और ताम्र धातु के एक विशेष प्रयोग से ऋषि मुनि स्वर्ण धातु का उत्पादन करते थे।
10. जीवन में सिर्फ एक बार और वो भी यदि भूल से भी शिवलिंग पर बेल पत्र चढ़ा दिया हो तो भी उसके सारे पाप मुक्त हो जाते है।
11. बेल वृक्ष का रोपण, पोषण और संवर्धन करने से महादेव से साक्षात्कार करने का अवश्य लाभ मिलता है। कृपया बिल्व पत्र का पेड़ जरूर लगाये । बिल्व पत्र के लिए पेड़ को क्षति न पहुँचाएँ।

कृपया इस जानकारी को ज्यादा से ज्यादा शेयर करें ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इसका लाभ उठा सके । ऐसी बहुत से महत्वपूर्ण जानकारी के लिए हमसे जुड़े रहे और नीचे दी हुई लिंक पर क्लिक करके लाभ उठाए ।

https://www.facebook.com/groups/586117378442706/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/groups/1583682731871010/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/YogiNomiNath/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/groups/717129991797711/?ref=bookmarks
https://www.facebook.com/groups/nathpanth/?ref=bookmarks
(नीचे वाली लिंक मे केवल दीक्षित नाथ जी ही जुड़ सकते है)

ॐ नमः शिवाय

ॐ शिवगोरक्ष नाथाय नमः

भगवान शिव और गुरु गोरक्ष नाथ जी आपका कल्याण करें ।

योगी नौमी नाथ
रामेश्वरम शिव मंदिर,
मिलकड़ा गाँव, मुगलवाली स्कूल के पास,
कपाल मोचन रोड, बिलासपुर,
यमुना नगर, हरियाणा ।

सपनों का मतलब और उनका फल (स्वप्न फल) - Dream Interpretation in Hindi
++
सपने कई प्रकार के होते हैं एक वो जो हम खुली आँखों से देखते है , दूसरे वो जो हम बंद आँखों से देखते है | जगती आँखों से देखे गये सपने हमारे मन की अधूरी इच्छाएं होती है जो हमारे अंतर्मन के किसी कोने में दबी होती हैं | उनका सिर्फ एक ही मतलब होता है की हमारी अंतरात्मा क्या चाहती है |
दूसरे सपने वो होते है जो हम बंद आँखों से देखते हैं, ये रात्रि के अलग अलग पहर में आने वाले सपनों का अलग अलग मतलब होता हैं |
उन्हीं सपनों का मतलब पता करना ठीक रहता है जो हमने भोर के समय देखे हो (सुबह ४ बजे से ६-७ बजे तक का समय भोर कहलाता है) और स्वप्न देखने वाला पूर्ण रूप से स्वस्थ हो क्युकी बीमार व्यक्ति को सपने उसके तात्कालिक शारीरिक कष्ट और दवाइयों के असर से आते हैं|
यदि किसी रोगी को सपने आते है तो उसका सम्भावित् फल निम्न प्रकार हो सकता है |
1. यदि रोगी सिर मुंडाएं ,लाल या काले वस्त्र धारण किए किसी स्त्री या पुरुष को सपने में देखता है या अंग-भंग व्यक्ति को देखता है तो रोगी की दशा अच्छी नहीं है ।
2. यदि रोगी सपने में किसी ऊँचे स्थान से गिरे या पानी में डूबे या गिर जाए तो समझे कि रोगी का रोग अभी और बड़ सकता है।
3. यदि सपने में ऊँट ,शेर या किसी जंगली जानवर की सवारी करें या उस से भयभीत हो तो समझे कि रोगी अभी किसी और रोग से भी ग्रस्त हो सकता है।
4. यदि रोगी सपने में किसी ब्राह्मण, देवता, राजा, गाय, याचक या मित्र को देखे तो समझे कि रोगी जल्दी ही ठीक हो जाएगा ।
5. यदि कोई सपने में उड़ता है तो इस का अभिप्राय यह लगाया जाता है कि रोगी या सपना देखने वाला चिन्ताओं से मुक्त हो गया है ।
6. यदि सपने में कोई मास या अपनी प्रकृति के विरूध भोजन करता है तो ऐसा निरोगी व्यक्ति भी रोगी हो सकता है ।
7. यदि कोई सपने में साँप देखता है तो ऐसा व्यक्ति आने वाले समय में परेशानी में पड़ सकता है ।या फिर मनौती आदि के पूरा ना करने पर ऐसे सपने आ सकते हैं।
स्वप्न ज्योतिष के अनुसार नींद में दिखाई देने वाले हर सपने का एक ख़ास संकेत होता है, एक ख़ास फल होता है। यहाँ हम आपको कुछ सपनों का स्वप्न ज्योतिष के अनुसार संभावित फल बता रहे है।
क्रमांक स्वप्न स्वप्न फल
१ अँधा देखना कार्य में रूकावट आये
२ अँधेरा देखना विपत्ति आये
३ अंक देखना विषम शुभ
४ अंक देखना सम अशुभ
५ अंग कटे देखना स्वास्थ्य लाभ
६ अंग दान करना उज्ज्वल भविष्य , पुरस्कार
७ अंग रक्षक देखना चोट लगने का खतरा
८ अंगारों पर चलना शारीरिक कष्ट
९ अंगीठी जलती देखना अशुभ
१० अंगीठी बुझी देखना शुभ
११ अंगुली काटना परिवार में क्लेश
१२ अंगूठा चूसना पारिवारिक सम्पति में विवाद
१३ अंगूठी पहनना सुंदर स्त्री प्राप्त करना
१४ अंगूर खाना स्वास्थ्य लाभ
१५ अंजन देखना नेत्र रोग
१६ अंडे खाना पुत्र प्राप्ति
१७ अख़बार पढ़ना, खरीदना वाद विवाद
१८ अखरोट देखना भरपूर भोजन मिले तथा धन वृद्धि हो
१९ अगर बत्ती अर्पित करना शुभ

२० अगर बत्ती जलती देखना दुर्घटना हो
२१ अगर बत्ती देखना धार्मिक अनुष्ठान हो
२२ अचार खाना , बनाना सिर दर्द, पेट दर्द
२३ अजगर दिखाई देना व्यापार में हानि
२४ अजगर देखना शुभ
२५ अजनबी मिलना अनिष्ट की पूर्व सूचना
२६ आजवयन खाना स्वास्थ्य लाभ
२७ अजीब वस्तु देखना प्रियजन के आने की सूचना
२८ अट्टहास करना दुखद समाचार मिले
२९ अदरक खाना मान सम्मान बढे
३० अध्यक्ष बनना मान हानि
३१ अध्ययन करना असफलता मिले
३२ अध्यापक देखना सफलता मिले
३३ अध्र्चन्द्र देखना औरत से सहयोग मिले
३४ अनाज देखना चिंता मिले
३५ अनानास खाना पहले परेशानी फिर राहत मिले
३६ अनार का रस पीना प्रचुर धन प्राप्त होना
३७ अनार के पत्ते खाना शादी शीघ्र हो
३८ अनार खाना (मीठा) धन मिले
३९ अनार देखना धन प्राप्ति के योग
४० अन्तेस्ति देखना परिवार में मांगलिक कार्य
४१ अन्य रंग का कुरता देखना अशुभ
४२ अपठनीय अक्षर पढना दुखद समाचार मिले
४३ अपने आप को अकेला देखना लम्बी यात्रा
४४ अपने को आकाश में उड़ते देखना सफलता प्राप्त हो
४५ अपने दांत गिरते देखना बंधूँ बांधव को कष्ट हो
४६ अपने पर दूसरौ का हमला देखना लम्बी उम्र
४७ अपहरण देखना लम्बी उम्र
४८ अप्सरा देखना धन और मान सम्मान की प्राप्ति
४९ अभिमान करना अपमानित होना
५० अमरूद खाना धन मिले
५१ अमलतास के फूल पीलिया या कोढ़ का रोग होना
५२ अमावस्या होना दुःख संकट से छुटकारा
५३ अरबी देखना सर दर्द या पेट दर्द
५४ अरहर खाना पेट में दर्द
५५ अरहर देखना शुभ
५६ अर्थी देखना बीमारी से छुटकारा
५७ अर्थी देखना धन लाभ हो
५८ अलमारी खुली देखना धन हानि हो
५९ अलमारी बंद देखना धन प्राप्ति हो
६० अस्त्र देखना संकट से रक्षा
६१ अस्त्र शस्त्र देखना मुकदमे में हार
६२ अस्त्र से स्वयं को कटा देखना शीघ्र कष्ट मिले

६३ अस्थि देखना संकट टलना
६४ आँचल देखना प्रतियोगिता में विजय
६५ आँचल में मुँह छिपाना मान समान की प्राप्ति
६६ आँचल से आंसू पोंछना अच्छा समय आने वाला है
६७ आंखों में काजल लगाना शारीरिक कष्ट होना
६८ आंधी देखना संकट से छुटकारा
६९ आंधी में गिरना सफलता मिलेगी
७० आंधी-तूफान देखना यात्रा में कष्ट होना
७१ आंवला खाते देखना मनोकामना पूर्ण होना
७२ आंवला देखना मनोकामना पूर्ण न होना
७३ आंसू देखना परिवार में मंगल कार्य हो
७४ आईना देखना इच्छा पूरण हो , अच्छा दोस्त मिले
७५ आईना में अपना मुंह देखना नौकरी में परेशानी , पत्नी में परेशानी
७६ आइसक्रीम खाना सुख शांति मिले
७७ आक देखना शारीरिक कष्ट
७८ आकाश की ओर उड़ना लम्बी यात्रा हो
७९ आकाश देखना पुत्र प्राप्ति
८० आकाश में उडऩा लंबी यात्रा करना
८१ आकाश में बादल देखना जल्दी तरक्की होना
८२ आकाश से गिरना संकट में फंसना
८३ आग जला कर भोजन बनाना धन लाभ , नौकरी में तरक्की
८४ आग देखना गलत तरीके से धन की प्राप्ति हो
८५ आग से कपडा जलना अनेक दुख मिले , आँखों का रोग
८६ आजाद होते देखना अनेक चिन्ताओं से मुक्ति
८७ आटा देखना कार्य पूरा हो
८८ आत्महत्या करना या देखना लम्बी आयु
८९ आभूषण देखना कोई कार्य पूर्ण होना
९० आम खाते देखना धन और संतान का सुख
९१ आम खाना धन प्राप्त होना
९२ आरा चलता हुआ देखना संकट शीघ्र समाप्त होगे
९३ आरा रुका हुआ देखना नए संकट आने का संकेत
९४ आड़ू देखना प्रसनता की प्राप्ति
९५ आलिंगन देखना औरत का औरत से धन प्राप्ति का संकेत
९६ आलिंगन देखना औरत का पुरुष से पति से बेवफाई की सूचना
९७ आलिंगन देखना पुरुष का औरत से काम सुख की प्राप्ति
९८ आलिंगन देखना पुरुष का पुरुष से शत्रुता बढ़ना
९९ आलू देखना भरपूर भोजन मिले
१०० आवाज सुनना अच्छा समय आने वाला है
१०१ आवारागर्दी करना धन लाभ हो नौकरी मिले
१०२ आवेदन करना या लिखना लम्बी यात्रा हो
१०३ आश्रम देखना व्यापार में घाटा
१०४ आसमान देखना ऊँचा पद प्राप्त हो
१०५ आसमान में बिजली देखना कार्य-व्यवसाय में स्थिरता

१०६ आसमान में स्वयं को गिरते देखना व्यापार में हानि
१०७ आसमान में स्वयं को देखना अच्छी यात्रा का संकेत

आगे आपको और भी पोस्ट करंगे अल्फबेट के हिसाब से अ और आ का पहले पोस्ट किया है । थोड़ा थोड़ा रोज पोस्ट करते रहेंगे क्योकि करीबन 2000 के लगभग स्वपन-फल का विवरण है । कृपया जुड़े रहे और दूसरों को भी जोड़े । नीचे हमारा लिंक दिया है बहुत सी जानकारी आपको हमारे जरिये मिलेगी।

श्री रामचरित मानस के सिद्ध 'मन्त्र'
****

नियम-
मानस के दोहे-चौपाईयों को सिद्ध करने का विधान यह है कि किसी भी शुभ दिन की रात्रि को दस बजे के बाद अष्टांग हवन के द्वारा मन्त्र सिद्ध करना चाहिये। फिर जिस कार्य के लिये मन्त्र-जप की आवश्यकता हो, उसके लिये नित्य जप करना चाहिये। वाराणसी में भगवान् शंकरजी ने मानस की चौपाइयों को मन्त्र-शक्ति प्रदान की है-इसलिये वाराणसी की ओर मुख करके शंकरजी को साक्षी बनाकर श्रद्धा से जप करना चाहिये।

अष्टांग हवन सामग्री
****

१॰ चन्दन का बुरादा, २॰ तिल, ३॰ शुद्ध घी, ४॰ चीनी, ५॰ अगर, ६॰ तगर, ७॰ कपूर, ८॰ शुद्ध केसर, ९॰ नागरमोथा, १०॰ पञ्चमेवा, ११॰ जौ और १२॰ चावल।

जानने की बातें-
****

जिस उद्देश्य के लिये जो चौपाई, दोहा या सोरठा जप करना बताया गया है, उसको सिद्ध करने के लिये एक दिन हवन की सामग्री से उसके द्वारा (चौपाई, दोहा या सोरठा) १०८ बार हवन करना चाहिये। यह हवन केवल एक दिन करना है। मामूली शुद्ध मिट्टी की वेदी बनाकर उस पर अग्नि रखकर उसमें आहुति दे देनी चाहिये। प्रत्येक आहुति में चौपाई आदि के अन्त में 'स्वाहा' बोल देना चाहिये।

प्रत्येक आहुति लगभग पौन तोले की (सब चीजें मिलाकर) होनी चाहिये। इस हिसाब से १०८ आहुति के लिये एक सेर (८० तोला) सामग्री बना लेनी चाहिये। कोई चीज कम-ज्यादा हो तो कोई आपत्ति नहीं। पञ्चमेवा में पिश्ता, बादाम, किशमिश (द्राक्षा), अखरोट और काजू ले सकते हैं। इनमें से कोई चीज न मिले तो उसके बदले नौजा या मिश्री मिला सकते हैं। केसर शुद्ध ४ आने भर ही डालने से काम चल जायेगा।

हवन करते समय माला रखने की आवश्यकता १०८ की संख्या गिनने के लिये है। बैठने के लिये आसन ऊन का या कुश का होना चाहिये। सूती कपड़े का हो तो वह धोया हुआ पवित्र होना चाहिये।

मन्त्र सिद्ध करने के लिये यदि लंकाकाण्ड की चौपाई या दोहा हो तो उसे शनिवार को हवन करके करना चाहिये। दूसरे काण्डों के चौपाई-दोहे किसी भी दिन हवन करके सिद्ध किये जा सकते हैं।

सिद्ध की हुई रक्षा-रेखा की चौपाई एक बार बोलकर जहाँ बैठे हों, वहाँ अपने आसन के चारों ओर चौकोर रेखा जल या कोयले से खींच लेनी चाहिये। फिर उस चौपाई को भी ऊपर लिखे अनुसार १०८ आहुतियाँ देकर सिद्ध करना चाहिये।

रक्षा-रेखा न भी खींची जाये तो भी आपत्ति नहीं है। दूसरे काम के लिये दूसरा मन्त्र सिद्ध करना हो तो उसके लिये अलग हवन करके करना होगा।

एक दिन हवन करने से वह मन्त्र सिद्ध हो गया। इसके बाद जब तक कार्य सफल न हो, तब तक उस मन्त्र (चौपाई, दोहा) आदि का प्रतिदिन कम-से-कम १०८ बार प्रातःकाल या रात्रि को, जब सुविधा हो, जप करते रहना चाहिये।

कोई दो-तीन कार्यों के लिये दो-तीन चौपाइयों का अनुष्ठान एक साथ करना चाहें तो कर सकते हैं। पर उन चौपाइयों को पहले अलग-अलग हवन करके सिद्ध कर लेना चाहिये।

१॰ विपत्ति-नाश के लिये
================
“राजिव नयन धरें धनु सायक। भगत बिपति भंजन सुखदायक।।”

२॰ संकट-नाश के लिये
===============
“जौं प्रभु दीन दयालु कहावा। आरति हरन बेद जसु गावा।।
जपहिं नामु जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी।।
दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी।।”

३॰ कठिन क्लेश नाश के लिये
===================
“हरन कठिन कलि कलुष कलेसू। महामोह निसि दलन दिनेसू॥”

४॰ विघ्न शांति के लिये
===============
“सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेही। राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेही॥”

५॰ खेद नाश के लिये
=============
“जब तें राम ब्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए॥”

६॰ चिन्ता की समाप्ति के लिये
====================
“जय रघुवंश बनज बन भानू। गहन दनुज कुल दहन कृशानू॥”

७॰ विविध रोगों तथा उपद्रवों की शान्ति के लिये
===============================
“दैहिक दैविक भौतिक तापा।राम राज काहूहिं नहि ब्यापा॥”

८॰ मस्तिष्क की पीड़ा दूर करने के लिये
========================
“हनूमान अंगद रन गाजे। हाँक सुनत रजनीचर भाजे।।”

९॰ विष नाश के लिये
==============
“नाम प्रभाउ जान सिव नीको। कालकूट फलु दीन्ह अमी को।।”

१०॰ अकाल मृत्यु निवारण के लिये
======================
“नाम पाहरु दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहि बाट।।”

११॰ सभी तरह की आपत्ति के विनाश के लिये / भूत भगाने के लिये
==
“प्रनवउँ पवन कुमार,खल बन पावक ग्यान घन।
जासु हृदयँ आगार, बसहिं राम सर चाप धर॥”

१२॰ नजर झाड़ने के लिये
================
“स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी। निरखहिं छबि जननीं तृन तोरी।।”

१३. खोयी हुई वस्तु पुनः प्राप्त करने के लिए
=============================
“गई बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू।।”

१४. जीविका प्राप्ति केलिये
==================
“बिस्व भरण पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत जस होई।।”

१५. दरिद्रता मिटाने के लिये
==================
“अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के। कामद धन दारिद दवारि के।।”

१६. लक्ष्मी प्राप्ति के लिये
=================
“जिमि सरिता सागर महुँ जाही। जद्यपि ताहि कामना नाहीं।।
तिमि सुख संपति बिनहिं बोलाएँ। धरमसील पहिं जाहिं सुभाएँ।।”

१७. पुत्र प्राप्ति के लिये
===============
“प्रेम मगन कौसल्या निसिदिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान।।’

१८. सम्पत्ति की प्राप्ति के लिये
=====================
“जे सकाम नर सुनहि जे गावहि।सुख संपत्ति नाना विधि पावहि।।”

१९. ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त करने के लिये
========================
“साधक नाम जपहिं लय लाएँ। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ।।”

२०. सर्व-सुख-प्राप्ति के लिये
===================
सुनहिं बिमुक्त बिरत अरु बिषई। लहहिं भगति गति संपति नई।।

२१. मनोरथ-सिद्धि के लिये
==================
“भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि।।”

२२. कुशल-क्षेम के लिये
===============
“भुवन चारिदस भरा उछाहू। जनकसुता रघुबीर बिआहू।।”

२३. मुकदमा जीतने के लिये
==================
“पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना।।”

२४. शत्रु के सामने जाने के लिये
====================
“कर सारंग साजि कटि भाथा। अरिदल दलन चले रघुनाथा॥”

२५. शत्रु को मित्र बनाने के लिये
=====================
“गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई।।”

२६॰ शत्रुतानाश के लिये
===============
“बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई॥”

२७॰ वार्तालाप में सफ़लता के लिये
======================
“तेहि अवसर सुनि सिव धनु भंगा। आयउ भृगुकुल कमल पतंगा॥”

२८॰ विवाह के लिये
=============
“तब जनक पाइ वशिष्ठ आयसु ब्याह साजि सँवारि कै।
मांडवी श्रुतकीरति उरमिला, कुँअरि लई हँकारि कै॥”

२९॰ यात्रा सफ़ल होने के लिये
===================
“प्रबिसि नगर कीजै सब काजा। ह्रदयँ राखि कोसलपुर राजा॥”

३०॰ परीक्षा / शिक्षा की सफ़लता के लिये
==========================
“जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी। कबि उर अजिर नचावहिं बानी॥
मोरि सुधारिहि सो सब भाँती। जासु कृपा नहिं कृपाँ अघाती॥”

३१॰ आकर्षण के लिये
==============
“जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू॥”

३२॰ स्नान से पुण्य-लाभ के लिये
=====================
“सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग।
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग।।”

३३॰ निन्दा की निवृत्ति के लिये
=====================
“राम कृपाँ अवरेब सुधारी। बिबुध धारि भइ गुनद गोहारी।।

३४॰ विद्या प्राप्ति के लिये
==================
गुरु गृहँ गए पढ़न रघुराई। अलप काल विद्या सब आई॥

३५॰ उत्सव होने के लिये
================
“सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्ह कहुँ सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु।।”

३६॰ यज्ञोपवीत धारण करके उसे सुरक्षित रखने के लिये
====================================
“जुगुति बेधि पुनि पोहिअहिं रामचरित बर ताग।
पहिरहिं सज्जन बिमल उर सोभा अति अनुराग।।”

३७॰ प्रेम बढाने के लिये
===============
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥

३८. कातर की रक्षा के लिये
==================
“मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ। एहिं अवसर सहाय सोइ होऊ।।”

३९. भगवत्स्मरण करते हुए आराम से मरने के लिये
==================================
रामचरन दृढ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग ।
सुमन माल जिमि कंठ तें गिरत न जानइ नाग ॥

४०. विचार शुद्ध करने के लिये
===================
“ताके जुग पद कमल मनाउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ।।”

४१. संशय-निवृत्ति के लिये
==================
“राम कथा सुंदर करतारी। संसय बिहग उड़ावनिहारी।।”

४२. ईश्वर से अपराध क्षमा कराने के लिये
===========================
” अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता। छमहु छमा मंदिर दोउ भ्राता।।”

४३. विरक्ति के लिये
==============
“भरत चरित करि नेमु तुलसी जे सादर सुनहिं।
सीय राम पद प्रेमु अवसि होइ भव रस बिरति।।”

४४. ज्ञान-प्राप्ति के लिये
================
“छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित अति अधम सरीरा।।”

४५. भक्ति की प्राप्ति के लिये
===================
“भगत कल्पतरु प्रनत हित कृपासिंधु सुखधाम।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम।।”

४६. श्रीहनुमान् जी को प्रसन्न करने के लिये
============================
“सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपनें बस करि राखे रामू।।”

४७. मोक्ष-प्राप्ति के लिये
================
“सत्यसंध छाँड़े सर लच्छा। काल सर्प जनु चले सपच्छा।।”

४८. श्री सीताराम के दर्शन के लिये
======================
“नील सरोरुह नील मनि नील नीलधर श्याम ।
लाजहि तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम ॥”

४९. श्रीजानकीजी के दर्शन के लिये
======================
“जनकसुता जगजननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की।।”

५०. श्रीरामचन्द्रजी को वश में करने के लिये
=============================

“केहरि कटि पट पीतधर सुषमा सील निधान।
देखि भानुकुल भूषनहि बिसरा सखिन्ह अपान।।”

५१॰ सहज स्वरुप दर्शन के लिये
===================
“भगत बछल प्रभु कृपा निधाना। बिस्वबास प्रगटे भगवाना।।”

सपनों का मतलब और उनका फल (स्वप्न फल) - Dream Interpretation in Hindi (पार्ट - 2)
++
सपने कई प्रकार के होते हैं एक वो जो हम खुली आँखों से देखते है , दूसरे वो जो हम बंद आँखों से देखते है | जगती आँखों से देखे गये सपने हमारे मन की अधूरी इच्छाएं होती है जो हमारे अंतर्मन के किसी कोने में दबी होती हैं | उनका सिर्फ एक ही मतलब होता है की हमारी अंतरात्मा क्या चाहती है |
दूसरे सपने वो होते है जो हम बंद आँखों से देखते हैं, ये रात्रि के अलग अलग पहर में आने वाले सपनों का अलग अलग मतलब होता हैं | उन्हीं सपनों का मतलब पता करना ठीक रहता है जो हमने भोर के समय देखे हो (सुबह ४ बजे से ६-७ बजे तक का समय भोर कहलाता है) और स्वप्न देखने वाला पूर्ण रूप से स्वस्थ हो क्युकी बीमार व्यक्ति को सपने उसके तात्कालिक शारीरिक कष्ट और दवाइयों के असर से आते हैं|
१०८ इंजन चलता देखना यात्रा हो , शत्रु से सावधान
१०९ इंद्रधनुष देखना उत्तम स्वास्थ्य
११० इक्का देखना ईंट का कष्टकारक स्थिति
१११ इक्का देखना चिड़ी का गृह क्लेश ,अतिथि आने की सूचना
११२ इक्का देखना पान का पारिवारिक क्लेश
११३ इक्का देखना हुक्म का दुःख व् निराशा मिले
११४ इडली साम्भर खाते देखना सभी से सहयोग मिले
११५ इत्र लगाना अच्छे फल की प्राप्ति, मान सम्मान बढेगा
११६ इन्द्रधनुष देखना संकट बढे , धन हानि हो
११७ इमली खाते देखना औरत के लिए शुभ ,पुरुष के लिए अशुभ
११८ इमारत देखना मान सम्मान बढे, धन लाभ हो
११९ इलायची देखना – मान सम्मान की प्राप्ति
१२० इश्तहार पढना धोखा मिले, चोरी हो
१२१ इष्ट देव की मूर्ति चोरी होना मृत्यु तुल्य कष्ट आये
१२२ ईंट देखना कष्ट मिलेगा
१२३ ऊँचे से गिरना हानि हो, कष्ट होना
१२५ उछलते देखना दुखद समाचार मिलने का संकेत
१२६ उजले कपडे देखना इज्जत बढे , विवाह हो
१२७ उजाड़ देखना दूर स्थान की यात्रा हो
१२८ उजाला देखना भविष्य में सफलता का संकेत
१२९ उठना और गिरना संघर्ष बढेगा
१३० उत्सव मनाते हुए देखना शोक होना
१३१ उद्घाटन देखना अशुभ संकेत
१३२ उदास देखना शुभ समाचार मिले
१३३ उधार लेना या देना धन लाभ का संकेत
१३४ उपवन देखना बीमारी की पूर्व सूचना
१३५ उबासी लेना दुःख मिले
१३६ उलझे बाल या धागे देखना परेशानियाँ बढेगी

१३७ उलटे कपडे पहनना अपमान हो
१३८ उल्लू देखना धन हानि होना
१३९ उल्लू देखना दुखों का संकेत
१४० उस्तरा देखना धन हानि , चोरी का भय
१४१ उस्तरा प्रयोग करना यात्रा में धन लाभ हो
१४२ ऊँचाई से गिरना परेशानी आना
१४३ ऊँट की सवारी रोगग्रस्त होना
१४४ ऊँट को देखना धन लाभ
१४५ ऊंघना धन हानि , चोरी का भय
१४६ ऊंचाई पर अपने को देखना अपमानित होना
१४७ ऊंचे पहाड़ देखना काफी मेहनत के बाद कार्य सिद्ध होना
१४८ ऊंचे वृक्ष देखना मनोकामना पूरी होने में समय लगना
१४९ ऊन देखना धन लाभ हो
१५० ऐनक लगते देखना विद्या मिले, ख़ुशी इज्जत मिले

आगे आपको और भी पोस्ट करंगे अल्फबेट के हिसाब से इ से ऊ का पहले पोस्ट किया है । थोड़ा थोड़ा रोज पोस्ट करते रहेंगे क्योकि करीबन 2000 के लगभग स्वपन-फल का विवरण है । कृपया जुड़े रहे और दूसरों को भी जोड़े । नीचे हमारा लिंक दिया है बहुत सी जानकारी आपको हमारे जरिये मिलेगी।

तांत्रिक अभिकर्म से प्रतिरक्षण हेतु उपाय
==========================

1. पीली सरसों, गुग्गल, लोबान व गौघृत इन सबको मिलाकर इनकी धूप बना लें व सूर्यास्त के 1 घंटे भीतर उपले जलाकर उसमें डाल दें। ऐसा २१ दिन तक करें व इसका धुआं पूरे घर में करें। इससे नकारात्मक शक्तियां दूर भागती हैं।
2. जावित्री, गायत्री व केसर लाकर उनको कूटकर गुग्गल मिलाकर धूप बनाकर सुबह शाम २१ दिन तक घर में जलाएं। धीरे-धीरे तांत्रिक अभिकर्म समाप्त होगा।
3. गऊ-लोचन व तगर थोड़ी सी मात्रा में लाकर लाल कपड़े में बांधकर अपने घर में पूजा स्थान में रख दें। शिव कृपा से तमाम टोने-टोटके का असर समाप्त हो जाएगा।
4. घर में साफ सफाई रखें व पीपल के पत्ते से ७ दिन तक घर में गौमूत्र के छींटे मारें व तत्पश्चात् शुद्ध गुग्गल का धूप जला दें।
5. कई बार ऐसा होता है कि शत्रु आपकी सफलता व तरक्की से चिढ़कर तांत्रिकों द्वारा अभिचार कर्म करा देता है। इससे व्यवसाय बाधा एवं गृह क्लेश होता है अतः इसके दुष्प्रभाव से बचने हेतु सवा 1 किलो काले उड़द, सवा 1 किलो कोयला को सवा 1 मीटर काले कपड़े में बांधकर अपने ऊपर से २१ बार घुमाकर शनिवार के दिन बहते जल में विसर्जित करें व मन में हनुमान जी का ध्यान करें। ऐसा लगातार ७ शनिवार करें। तांत्रिक अभिकर्म पूर्ण रूप से समाप्त हो जाएगा।
6. यदि आपको ऐसा लग रहा हो कि कोई आपको मारना चाहता है तो पपीते के २१ बीज लेकर शिव मंदिर जाएं व शिवलिंग पर कच्चा दूध चढ़ाकर धूप बत्ती करें तथा शिवलिंग के निकट बैठकर पपीते के बीज अपने सामने रखें। अपना नाम, गौत्र उच्चारित करके भगवान् शिव से अपनी रक्षा की गुहार करें व एक माला महामृत्युंजय मंत्र की जपें तथा बीजों को एकत्रित कर तांबे के ताबीज में भरकर गले में धारण कर लें।
7. शत्रु अनावश्यक परेशान कर रहा हो तो नींबू को ४ भागों में काटकर चौराहे पर खड़े होकर अपने इष्ट देव का ध्यान करते हुए चारों दिशाओं में एक-एक भाग को फेंक दें व घर आकर अपने हाथ-पांव धो लें। तांत्रिक अभिकर्म से छुटकारा मिलेगा।
8. शुक्ल पक्ष के बुधवार को ४ गोमती चक्र अपने सिर से घुमाकर चारों दिशाओं में फेंक दें तो व्यक्ति पर किए गए तांत्रिक अभिकर्म का प्रभाव खत्म हो जाता है।

किसी भी उपाय को करने से किसी तांत्रिक द्वारा किए गए कोई भी अभिकर्मों से छुटकारा मिलता है।

जय श्री शंभू-यति गुरु गोरक्षनाथ जी को नमो आदेश आदेश।

अगर आप चाहते हैं की आपके प्रतिष्ठान में बिक्री ज्यादा हो तो यह करें
==

आप अपने व्यापार में अधिक पैसा प्राप्त करना चाहते हैं और चाहते हैं की आपके व्यापार की बिक्री बढ़ जाए तो आप वट वृक्ष की लता को शनिवार के दिन जाकर निमंत्रण दे आएं।
(वृक्ष की जड़ के पास एक पान, सुपारी और एक पैसा रख आएं) रविवार के दिन प्रातः काल जाकर उसकी एक जटा तोड़ लाएं, पीछे मुड़कर न देखें। एक बिलात (हथेली के जितनी बड़ी) जटा ले आए और उसे अपने कैश बॉक्स मे रखे, नीचे लिखे मंत्र की धुनि देकर। उस जटा को घर लाकर गुग्गल की धूनी दें तथा 101 बार इस मंत्र का जप करें-
"ॐ नमो चण्ड अलसुर स्वाहा।"

श्रद्धा और विश्वास के साथ करें आपकी मनोकामना पूर्ण होगी।

जय श्री शंभु-यति गुरु गोरक्षनाथ जी को नमो आदेश आदेश ।

शाबर मंत्रों को जगाने की विधि
****

द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण की आज्ञा से अर्जुन ने पशुपति अस्त्र की प्राप्ति के लिए भगवान शिव का तप किया! एक दिन भगवान शिव एक शिकारी का भेष बनाकर आये और जब पूजा के बाद अर्जुन ने सुअर पर बाण चलाया तो ठीक उसी वक़्त भगवान शिव ने भी उस सुअर को तीर मारा, दोनों में वाद विवाद हो गया और शिकारी रुपी शिव ने अर्जुन से कहा, मुझसे युद्ध करो जो युद्ध में जीत जायेगा सुअर उसी को दीया जायेगा! अर्जुन और भगवान शिव में युद्ध शुरू हुआ, युद्ध देखने के लिए माँ पार्वती भी शिकारी का भेष बना वहां आ गयी और युद्ध देखने लगी! तभी भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा जिसका रोज तप करते हो वही शिकारी के भेष में साक्षात् खड़े है! अर्जुन ने भगवान शिव के चरणों में गिरकर प्रार्थना की और भगवान शिव ने अर्जुन को अपना असली स्वरूप दिखाया!

अर्जुन भगवान शिव के चरणों में गिर पड़े और पशुपति अस्त्र के लिए प्रार्थना की! शिव ने अर्जुन को इच्छित वर दीया, उसी समय माँ पार्वती ने भी अपना असली स्वरूप दिखाया! जब शिव और अर्जुन में युद्ध हो रहा था तो माँ भगवती शिकारी का भेष बनाकर बैठी थी और उस समय अन्य शिकारी जो वहाँ युद्ध देख रहे थे उन्होंने जो मॉस का भोजन किया वही भोजन माँ भगवती को शिकारी समझ कर खाने को दिया! माता ने वही भोजन ग्रहण किया इसलिए जब माँ भगवती अपने असली रूप में आई तो उन्होंने ने भी शिकारीओं से प्रसन्न होकर कहा "हे किरातों! मैं प्रसन्न हूँ, वर मांगो!" इसपर शिकारीओं ने कहा "हे माँ हम भाषा व्याकरण नहीं जानते और ना ही हमें संस्कृत का ज्ञान है और ना ही हम लम्बे चौड़े विधि विधान कर सकते है पर हमारे मन में भी आपकी और महादेव की भक्ति करने की इच्छा है, इसलिए यदि आप प्रसन्न है तो भगवान शिव से हमें ऐसे मंत्र दिलवा दीजिये जिससे हम सरलता से आप का पूजन कर सके!

माँ भगवती की प्रसन्नता देख और भीलों का भक्ति भाव देख कर आदिनाथ भगवान शिव ने शाबर मंत्रों की रचना की! यहाँ एक बात बताना बहुत आवश्यक है कि नाथ पंथ में भगवान शिव को "आदिनाथ" कहा जाता है और माता पार्वती को "उदयनाथ" कहा जाता है! भगवान शिव जी ने यह विद्या भीलों को प्रदान की और बाद में यही विद्या दादा गुरु मत्स्येन्द्रनाथ को मिली, उन्होंने इस विद्या का बहुत प्रचार प्रसार किया और करोड़ो शाबर मंत्रों की रचना की! उनके बाद गुरु गोरखनाथ जी ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया और नव नाथ एवं चौरासी सिद्धो के माध्यम से इस विद्या का बहुत प्रचार हुआ! कहा जाता है कि योगी कानिफनाथ जी ने पांच करोड़ शाबर मंत्रों की रचना की और वही चर्पटनाथ जी ने सोलह करोड़ शाबर मंत्रों की रचना की! मान्यता है कि योगी जालंधरनाथ जी ने तीस करोड़ शाबर मंत्रों की रचना की! इन योगियों के बाद अनन्त कोटि नाथ सिद्धो ने शाबर मंत्रों की रचना की !यह शाबर मंत्रों की विद्या नाथ पंथ में गुरु शिष्य परम्परा से आगे बढ़ने लगी, इसलिए शाबर मंत्रों चाहे किसी भी प्रकार का क्यों ना हो उसका सम्बन्ध किसी ना किसी नाथ पंथी योगी से अवश्य होता है! अतः यह कहना गलत ना होगा कि शाबर मंत्र नाथ सिद्धो की देन है!

शाबर मंत्रों के मुख्य पांच प्रकार है –
****

1. प्रबल शाबर मंत्र – इस प्रकार के शाबर मंत्र कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग होते है, इन में प्रत्यक्षीकरण नहीं होता! केवल जिस मंशा से जप किया जाता है वह इच्छा पूर्ण हो जाती है! इन्हें कार्य सिद्धि मंत्र कहना गलत ना होगा! यह मंत्र सभी प्रकार के कर्मों को करने में सक्षम है! अतः इस प्रकार के मंत्रों में व्यक्ति देवता से कार्य-सिद्धि के लिए प्रार्थना करता है, साधक एक याचक के रूप में देवता से याचना करता है!

2. बर्भर शाबर मंत्र – इस प्रकार के शाबर मंत्र भी सभी प्रकार के कार्यों को करने में सक्षम है पर यह प्रबल शाबर मंत्र से अधिक तीव्र माने जाते है ! बर्भर शाबर मंत्र में साधक देवता से याचना नहीं करता अपितु देवता से सौदा करता है! इस प्रकार के मंत्रों में देवता को गाली, श्राप, दुहाई और धमकी आदि देकर काम करवाया जाता है! देवता को भेंट दी जाती है और कहा जाता है कि मेरा अमुक कार्य होने पर मैं आपको इसी प्रकार भेंट दूंगा! यह मंत्र बहुत ज्यादा उग्र होते है!

3. बराटी शाबर मंत्र – इस प्रकार के शाबर मंत्र में देवता को भेंट आदि ना देकर उनसे बलपूर्वक काम करवाया जाता है! यह मंत्र स्वयं सिद्ध होते है पर गुरु-मुखी होने पर ही अपना पूर्ण प्रभाव दिखाते है! इस प्रकार के मंत्रों में साधक याचक नहीं होता और ना ही सौदा करता है! वह देवता को आदेश देता है कि मेरा अमुक कार्य तुरंत करो! यह मन्त्र मुख्य रूप से योगी कानिफनाथ जी के कापालिक मत में अधिक प्रचलित है! कुछ प्रयोगों में योगी अपने जुते पर मंत्र पढ़कर उस जुते को जोर-जोर से नीचे मारते है तो देवता को चोट लगती है और मजबूर होकर देवता कार्य करता है!

4. अढैया शाबर मंत्र – इस प्रकार के शाबर मंत्र बड़े ही प्रबल माने जाते है और इन मंत्रों के प्रभाव से प्रत्यक्षीकरण बहुत जल्दी होता है! प्रत्यक्षीकरण इन मन्त्रों की मुख्य विशेषता है और यह मंत्र लगभग ढ़ाई पंक्तियों के ही होते है! अधिकतर अढैया मन्त्रों में दुहाई और धमकी का भी इस्तेमाल नहीं किया जाता पर फिर भी यह पूर्ण प्रभावी होते है!

5. डार शाबर मंत्र – डार शाबर मंत्र एक साथ अनेक देवताओं का दर्शन करवाने में सक्षम है जिस प्रकार "बारह भाई मसान" साधना में बारह के बारह मसान देव एक साथ दर्शन दे जाते है! अनेक प्रकार के देवी देवता इस मंत्र के प्रभाव से दर्शन दे जाते है जैसे "चार वीर साधना" इस मार्ग से की जाती है और चारों वीर एक साथ प्रकट हो जाते है! इन मन्त्रों की जितनी प्रशंसा की जाए उतना ही कम है, यह दिव्य सिद्धियों को देने वाले और हमारे इष्ट देवी देवताओं का दर्शन करवाने में पूर्ण रूप से सक्षम है! गुरु अपने कुछ विशेष शिष्यों को ही इस प्रकार के मन्त्रों का ज्ञान देते है!

नाथ पंथ की महानता को देखकर बहुत से पाखंडी लोगों ने अपने आपको नाथ पंथी घोषित कर दिया है ताकि लोग उनकी बातों पर विश्वास कर ले! ऐसे लोगों से यदि यह पूछा जाये कि आप बारह पन्थो में से किस पंथ से सम्बन्ध रखते है? आपकी दीक्षा किस पीठ से हुयी है ? आपके गुरु कौन है? तो इन लोगों का उत्तर होता है कि मैं बताना जरूरी नहीं समझता क्योंकि इन लोगों को इस विषय में ज्ञान ही नहीं होता , पर आज के इस युग में लोग बड़े समझदार है और इन धूर्तों को आसानी से पहचान लेते है!

ऐसे महापाखंडीयो ने ही प्रचार किया है कि सभी शाबर मंत्र "गोरख वाचा" है अर्थात गुरु गोरखनाथ जी के मुख से निकले हुए है पर मेरा ऐसे लोगों से एक ही प्रश्न है क्या जो मन्त्र कानिफनाथ जी ने रचे है वो भी गोरख वाचा है? क्या जालंधरनाथ जी के रचे मन्त्र भी गोरख वाचा है? इन मंत्रों की बात अलग है पर क्या मुस्लिम शाबर मंत्र भी गोरख वाचा है? ऐसा नहीं है मुस्लिम शाबर मंत्र मुस्लिम फकीरों द्वारा रचे गए है!

भगवान शिव ने सभी मंत्रों को किलित कर दिया पर शाबर मंत्र किलित नहीं है ! शाबर मंत्र कलियुग में अमृत स्वरूप है! शाबर मंत्र को सिद्ध करना बड़ा ही सरल है न लम्बे विधि विधान की आवश्यकता और न ही करन्यास और अंगन्यास जैसी जटिल क्रियाएँ! इतने सरल होने पर भी कई बार शाबर मंत्र का पूर्ण प्रभाव नहीं मिलता क्योंकि शाबर मंत्र सुप्त हो जाते है ऐसे में इन मंत्रों को एक विशेष क्रिया द्वारा जगाया जाता है!

शाबर मंत्र के सुप्त होने के मुख्य कारण –
****

1. यदि सभा में शाबर मंत्र बोल दिए जाये तो शाबर मंत्र अपना प्रभाव छोड़ देते है!
2. यदि किसी किताब से उठाकर मन्त्र जपना शुरू कर दे तो भी शाबर मंत्र अपना पूर्ण प्रभाव नहीं देते!
3. शाबर मंत्र अशुद्ध होते है इनके शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता क्योंकि यह ग्रामीण भाषा में होते है यदि इन्हें शुद्ध कर दिया जाये तो यह अपना प्रभाव छोड़ देते है!
4. प्रदर्शन के लिए यदि इनका प्रयोग किया जाये तो यह अपना प्रभाव छोड़ देते है!
5. यदि केवल आजमाइश के लिए इन मंत्रों का जप किया जाये तो यह मन्त्र अपना पूर्ण प्रभाव नहीं देते !

ऐसे और भी अनेक कारण है ! उचित यही रहता है कि शाबर मंत्र को गुरुमुख से प्राप्त करे क्योंकि गुरु साक्षात शिव होते है और शाबर मंत्र के जन्मदाता स्वयं शिव है ! शिव के मुख से निकले मन्त्र असफल हो ही नहीं सकते !

शाबर मंत्र के सुप्त होने का कारण कुछ भी हो इस विधि के बाद शाबर मन्त्र पूर्ण रूप से प्रभावी होते है !

|| मन्त्र ||
****
सत नमो आदेश! गुरूजी को आदेश! ॐ गुरूजी! डार शाबर बर्भर जागे, जागे अढैया और बराट, मेरा जगाया न जागे तो तेरा नरक कुंड में वास! दुहाई शाबरी माई की! दुहाई शाबरनाथ की! आदेश गुरु गोरख को!

|| विधि ||
****
इस मन्त्र को प्रतिदिन गोबर का कंडा सुलगाकर उसपर गूगल डाले और इस मन्त्र का १०८ बार जाप करे ! जब तक मन्त्र जाप हो गूगल सुलगती रहनी चाहिये ! यह क्रिया आपको २१ दिन करनी है, अच्छा होगा आप यह मन्त्र अपने गुरु के मुख से ले या किसी योग्य साधक के मुख से ले! गुरु कृपा ही सर्वोपरि है कोई भी साधना करने से पहले गुरु आज्ञा जरूर ले!

|| प्रयोग विधि ||
****
जब भी कोई साधना करे तो इस मन्त्र को जप से पहले ११ बार पढ़े और जप समाप्त होने पर ११ बार दोबारा पढ़े मन्त्र का प्रभाव बढ़ जायेगा! यदि कोई मन्त्र बार-बार सिद्ध करने पर भी सिद्ध न हो तो किसी भी मंगलवार या रविवार के दिन उस मन्त्र को भोजपत्र या कागज़ पर केसर में गंगाजल मिलाकर अनार की कलम से या बड के पेड़ की कलम से लिख ले! फिर किसी लकड़ी के फट्टे पर नया लाल वस्त्र बिछाएं और उस वस्त्र पर उस भोजपत्र को स्थापित करे! घी का दीपक जलाये, अग्नि पर गूगल सुलगाये और शाबरी देवी या माँ पार्वती का पूजन करे और इस मन्त्र को १०८ बार जपे फिर जिस मन्त्र को जगाना है उसे १०८ बार जपे और दोबारा फिर इसी मन्त्र का १०८ बार जप करे! लाल कपडे दो मंगवाए और एक घड़ा भी पहले से मंगवा कर रखे! जिस लाल कपडे पर भोजपत्र स्थापित किया गया है उस लाल कपडे को घड़े के अन्दर रखे और भोजपत्र को भी घड़े के अन्दर रखे! दूसरे लाल कपडे से भोजपत्र का मुह बांध दे और दोबारा उस कलश का पूजन करे और शाबरी माता से मन्त्र जगाने के लिए प्रार्थना करे और उस कलश को बहते पानी में बहा दे! घर से इस कलश को बहाने के लिए ले जाते समय और पानी में कलश को बहाते समय जिस मन्त्र को जगाना है उसका जाप करते रहे! यह क्रिया एक बार करने से ही प्रभाव देती है पर फिर भी इस क्रिया को ३ बार करना चाहिये मतलब रविवार को फिर मंगलवार को फिर दोबारा रविवार को ! भगवान आदिनाथ और माँ शाबरी आप सबको मन्त्र सिद्धि प्रदान करे !

धन प्राप्ति के लिए शाबर मंत्र
****
आज धन अभाव भी एक विकराल समस्या बन चुका है । धन किसे नहीं चाहिये होता है, चाहे गृहस्थी हो या नाथ जी या किसी भी सम्प्रदाय से जुडे संत? बिना धन के साधना भी नहीं हो सकती और साधना बगैर शक्ति कैसे प्राप्त हो? कहते है कि महर्षि जैमिनी सभी कार्य मंत्रों के बल पर ही करने लगे थे, ब्रह्मा जी ने औढरदानी शिव से कहाँ भगवन महर्षि जैमिनी नैश्रवाद को बढ़ावा दे रहे है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो लोग ईश्वर को मानना ही बंद कर देंगे। ब्रह्मा की बात को उचित जान महादेव ने मंत्रों को किलित कर दिया। कालांतर मे स्वयं शिव ने किरात रुप धारण कर शाबर मंत्रों की रचना की और नाथ आचार्यों ने इनके संवर्धन में भारी योगदान दिया। आम बोलचाल की भाषा में प्रचलित ये मंत्र शीघ्र ही सिद्ध होते है और व्यवहार में भी खरे उतरते है और सबसे बडी बात कि ये किलित भी नहीं है, ऐसा ही एक शाबर मंत्र धन प्राप्ति के लिये दिया जा रहा है, इसके प्रभाव से बंद पडे काम खुलते है व धन आगमन का मार्ग निश्चित रुप से बनता है। हमने अनेक साधकों को यह दिया है और पूर्ण नतीजे प्राप्त हुये है।

मंत्र:

श्री शुक्ले महाशुक्ले कमलदल निवासे श्री महालक्ष्मी नमो नमः। लक्ष्मी माई सत्त की सवाई, आओ चेतो करो भलाई। ना करो तो सात समुन्द्रो की दुहाई। ऋद्धि--सिद्धि खाओगी तो नौ नाथ चौरासी सिद्धो की दुहाई।।

सिद्ध करने की विधि:

नीचे एक यंत्र दिया जा रहा है, एक चौकी या पाटिये को गंगाजल से साफ कर लाल वस्त्र बिछाकर, देशी घी का दिया जला, लाल चंदन को घिसकर, अनार की कलम से सफेद कागज पर लिखे। सभी रेखाये नीचे से ऊपर की ओर व बाये से दायें की ओर खिची जायेगी। अंक चढते कर्म से लिखे जायेंगे अर्थात पहले सबसे छोटा फिर बडा आखिरी में सबसे बडा । यंत्र को फ्रेम कर इसी चौकी पर पश्चिमाभिमुख विराजमान करे । नवरात्र मे रोज नहा धोकर धुले कपडे पहन लाल रंग का ऊनी आसन बिछा उत्तर की तरफ मुँह कर बैठ जाये । देशी घी

कि दीपक जला कमल गट्टा या लाल चंदन या स्फटिक की माला से एक माला रोज जप करे और ग्यारह आहुति कमल पुष्प या गुलाब के पुष्प की दे ऐसा नवरात्रों मे सभी दिन करने से सिद्ध होता है ।।

प्रयोग विधि : व्यापार स्थल पर एक माला प्रत्येक दिन करने से अवश्य काम खुलता है । जिनके पास व्यापार स्थल नहीं है वो घर मे ही काम शुरु होने की कामना से जप करे तो निश्चय ही काम शुरु हो धन की आवक होती है संदेह ना करे ।

संलग्न : यंत्र का स्वरूप इस यंत्र मे भी एक मंत्र का उद्धार हुआ है इसे उपरोक्त विधि से ही सिद्ध व प्रयोग कर सकते है।

1. "ॐनमो रुद्राय, कपिलाय, भैरवाय, त्रिलोक-नाथाय, ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।

"विधिः- सर्व-प्रथम किसी रविवार को गुगल, धूप, दीपक सहित उपर्युक्त मन्त्र का पन्द्रह हजार जप कर उसे सिद्ध करे। फिर आवश्यकतानुसार इस मन्त्र का १०८ बार जप कर एक लौंग को अभिमन्त्रित लौंग को, जिसे वशीभूत करना हो, उसे खिलाए।

2. "ॐ नमो काला गोरा भैरुं वीर, पर-नारी सूँ देही सीर। गुड़ परिदीयी गोरख जाणी, गुद्दी पकड़ दे भैंरु आणी, गुड़, रक्त का धरि ग्रास, कदे न छोड़े मेरा पाश। जीवत सवै देवरो, मूआ सेवै मसाण। पकड़ पलना ल्यावे। काला भैंरु न लावै, तो अक्षर देवी कालिका की आण। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

"विधिः- 21,००० जप। आवश्यकता पड़ने पर 21 बार गुड़ को अभिमन्त्रित कर साध्य को खिलाए।

3."ॐ भ्रां भ्रां भूँ भैरवाय स्वाहा। ॐ भं भं भं अमुक-मोहनाय स्वाहा।"

विधिः- उक्त मन्त्र को सात बार पढ़कर पीपल के पत्ते को अभिमन्त्रित करे। फिर मन्त्र को उस पत्ते पर लिखकर, जिसका वशीकरण करना हो, उसके घर में फेंक देवे। या घर के पिछवाड़े गाड़ दे। यही क्रिया 'छितवन' या 'फुरहठ' के पत्ते द्वारा भी हो सकती है।

कृपया याद रहे बेवजह किसी को न सताए अन्यथा आप पाप के भागीदार बन सकते है!!

गुरु दीक्षा ले चुके साधक ही अपने गुरु से अनुमति लेकर इस साधन को करें.

जाप से पहले कम से कम १ माला गुरु मन्त्र का जाप अनिवार्य है.

शरीर की पीड़ा के झाड़े का मंन्त्र
====================

ॐ गुरूजी बंगाल खण्ड कामरु देश की कामाक्षा देवी।
जहाँ बसे ईस्माइल योगी। ईस्माइल योगी के सात चेली।
सातो ब्रम्हचारी।
कपूरी धोबिन कान झाड़े, कपाल झाड़े लोना चमारी।
फुला मालिन कंठ झाड़े, गला झाड़े सरिया कुम्हारी।
गांगली तेलिन कलेजा झाड़े, पेट झाड़े लाल लुहारी।
पिण्ड प्राण की रक्षा करे माया मछिंद्र नाथ।
घट पिण्ड को झाड़े आसो मेहतरानी।
कुम्भकर्ण की औंधी खोपड़ी मरघटिया मसान।
पिण्ड की सारी पीड़ा भस्म कर दे काल भैरव नही तो तुझे माता कालिका देवी की आन।
शब्द साँचा पिण्ड काँचा। फुरो मंन्त्र गुरु गोरक्ष नाथ वाचा।
सतनाम आदेश गुरु का।

इस मंत्र को 108 बार किसी भी अमावशया या पुर्णिमा के दिन जाप करने से सिद्ध हो जाता है। 7 बार मोर पंख के झाड़न से झाड़ा देवे रोगी को आराम मिलेगा । जाप से पहले गुरु मंत्र की एक माला और जिनके गुरु नहीं है वो ॐ नमो शिवाय की एक माला जाप करके मंत्र को सिद्ध करें । अचूक और पूर्ण लाभकारी है ।

जय शंभू-जति गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज को नमो आदेश आदेश।

फंसा रुका डूबा हुआ धन निकालने के मंत्र उपाय
****

अनोखा और असरदार उपाय जो कितनी ही बार कितने ही लोगों ने सफलता पूर्वक प्रयोग किया है फिर से आप सब के लिए यहाँ पोस्ट कर रहे है।

• एक सफेद मोटे पेज पर हरे पेन से उन लोगों के नाम लिखे जिनसे कर्ज़ा लेना है।
• हर नाम के साथ उसके पिता का नाम, उसके घर का सही पता लिखे।
• नाम के साथ उसकी फोटो भी लगाये, साथ में मोबाइल नम्बर भी लिखे।
• मंगलवार की सुबह 4 बजे जागकर नहा धोकर रात का रखा पानी पीकर, लाल कपड़े पहनकर उस पेज के ऊपर स्वस्तिक का निशान बनाये।
• निशान बनाने के लिये कपूर को जला कर ऊपर बरतन उलटा कर दे, जो भाग काला पड़ जायेगा उससे बनाना है निशान।
• उस पेज को हनुमान जी के चरणों में रख दे और हनुमान चालीसा का पाठ करें।
• हनुमान चालीसा के पाठ के पहले “क्रं कृष्णाय नमः” मंत्र का जाप करें।

फ़िर हनुमान चालीसा पाठ करने के बाद हनुमान जी के सामने प्रार्थना करनी है। हे पवन देव, ये लोग गरीब है, इनका काम सही नहीं चल रहा है, इनको हे पवन देव इस योग्य करो कि ये सबके कर्ज उतार कर कर्ज मुक्त हो जाये और कर्ज के पाप से मुक्त हो जायें। जितने लोगों से पैसा लेना है। उनके नाम को भी छूना मतलब निशान भी लगाना है, उसी काली कालिख से जिससे निशान बनाया था। हर हफ्ते नया पेज बनाने की ज़रूरत होगी, पुराने पेज को चलते पानी में बहा दे, उस पर लगी फोटो उतार लें नये पेज पर लगाने के लिये ध्यान देने की बात ये है कि एक बार भी ये नहीं कहना कि मेरा कर्ज उतारना है, हमेशा दूसरे का ही कर्ज मुक्त करने को कहना है। दूसरों को लेकर की गयी प्रार्थना हमेशा सफल होती है, हमने कई बार ये उपाय आज़माकर अच्छे नतीजे लिये है। अन्य दिनों में सुबह शाम शनि चालीसा का पाठ करना है, बाजार में दो तरह की किताबें मिलती है --- एक लाल रंग की, दूसरी काली रंग की हमने काले रंग की लेनी है शनि चालीसा जो कि 10/- में आती है। इसका पाठ सुबह शाम नहा धोकर ज़मीन पर बैठ कर करना है, मंगलवार को हनुमान चालीसा साथ में जो क्रिया जो ऊपर बताई है वो भी करें, बाकी दिन शनि चालीसा ये कम से कम 21 हफ्ते करें, एक अनोखा उपाय जैसे कि हमें पता है कि हर चीज़ की एक कीमत होती है, ये उपाय हमारा रुका हुआ धन लेकर आयेगा, जो पैसा देने को भूल भी चुके है उनको भी याद करायेगा। जैसे कि ये उपाय हमारा है तो आपको हमें इसकी कीमत देनी होगी मतलब आप ये उपाय हमारे से उधार या मुफ्त में नहीं लें सकते, नहीं तो ये बेकार सिद्ध होगा। अब ये कीमत मेरी तरफ़ से फिक्स नहीं है, जो भी आप अपनी और लेने वाले पैसे की कीमत माने उसके हिसाब से दे सकते है। शुरुआत 11/--21/- से भी कर सकते है, हमारे ऊपर ये शर्त है कि हम मोल-भाव नहीं कर सकता, अगर हम मोल-भाव करते है तो ये उपाय बेअसर हो जायेगा। इसमें देने वाला चाहे 11/-21/- दे या 11000/- हम कुछ नहीं कह सकते ये देने वाले की श्रद्धा है, बस आप ने ये उपाय हमारे से कोई भी कीमत देकर ही मोल लेना है, अगर ऐसे ही उठा के प्रयोग करेंगे तो उलटा भी पड सकता है। इसलिए आप सब को ये बताना चाहते है की इसका प्रयोग करने से पहले इसकी कीमत जरूर दें।

शेष गुरु इच्छा ...... आपका मनोरथ सफल हो, और आप का कल्याण हो ।

जय श्री शंभूयति गुरु गोरक्षनाथ को नमो आदेश। आदेश। आदेश।

साबर मंत्रो का शक्तिवर्धन या जागरण
****

|| शाबर जागरण मन्त्र ||
सत नमो आदेश ! गुरूजी को आदेश !
ॐ गुरूजी !
ड़ार शाबर बर्भर जागे ,
जागे अढैया और बराट
मेरा जगाया न जागे
तो तेरा नरक कुंड में वास !
दुहाई शाबरी माई की !

दुहाई शाबरनाथ की !
आदेश गुरु गोरख को !

|| विधि ||
इस मन्त्र को प्रतिदिन गोबर का कंडा सुलगाकर उसपर गुगल डाले और इस मन्त्र का १०८ बार जाप करे ! जब तक मन्त्र जाप हो गुगल सुलगती रहनी चाहिये ! यह क्रिया आपको २१ दिन करनी है , अच्छा होगा आप यह मन्त्र अपने गुरु के मुख से ले या किसी योग्य साधक के मुख से ले ! गुरु कृपा ही सर्वोपरि है कोई भी साधना करने से पहले गुरु आज्ञा जरूर ले !

|| प्रयोग विधि ||
जब भी कोई साधना करे तो इस मन्त्र को जप से पहले ११ बार पढ़े और जप समाप्त होने पर ११ बार दोबारा पढ़े मन्त्र का प्रभाव बढ़ जायेगा ! यदि कोई मन्त्र बार बार सिद्ध करने पर भी सिद्ध न हो तो ...

दो लाल कपडे[आधा-आधा मीटर का] मंगवाए और एक घड़ा भी पहले से मंगवा कर रखे ! किसी भी मंगलवार या रविवार के दिन उस मन्त्र[जिसे सिद्ध करना है] को भोजपत्र या कागज़ पर केसर में गंगाजल मिलाकर अनार की कलम से या बड के पेड़ की कलम से लिख ले !

फिर किसी लकड़ी के चौकी/फट्टे पर एक लाल वस्त्र बिछाएं और उस वस्त्र पर उस भोजपत्र को स्थापित करे ! घी का दीपक जलाये , अग्नि पर गुगल सुलगाये और शाबरी देवी [माँ पार्वती] का पूजन करे!

उपरोक्त मन्त्र को १०८ बार जपे.अब जिस मन्त्र को जगाना है उसे १०८ बार जपे और दोबारा फिर उपरोक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे !

जिस लाल कपडे पर भोजपत्र स्थापित किया गया है उस लाल कपडे में ही भोजपत्र को लपेट कर घड़े के अन्दर रखे!

दुसरे लाल कपडे से भोजपत्र का मुह बांध दे और दोबारा उस कलश का पूजन करे और शाबरी माता से मन्त्र जगाने के लिए प्रार्थना करे!

उस कलश को बहते पानी में बहा दे ! घर से इस कलश को बहाने के लिए ले जाते समय और पानी में कलश को बहाते समय जिस मन्त्र को जगाना है उसका जाप करते रहे !

यह क्रिया एक बार करने से ही प्रभाव देती है पर फिर भी इस क्रिया को ३ बार करना चाहिये मतलब रविवार को फिर मंगलवार को फिर दोबारा रविवार को !
भगवान् आदिनाथ और माँ शाबरी आप सबको योग्यतानुसार मन्त्र सिद्धि प्रदान करे !

शेष गुरु इच्छा ...

बुध ग्रह शाबर गायत्री मंत्र
===============

ॐ गुरु जी
बुध ग्रह सत्त गुरु जी दिनी बुद्धि I
विवरो काया पावो सिद्धि।
शिव धीरज धरे शक्ति उनमनी नीर चढे ।
एता गुण बुध ग्रह करै।
बुध ग्रह जाती का बनिया ।
हरित हर गोत्रय मगध देश स्थापना थापलो लो पुजा गणेश जी की करै, सत् फुरै सत् वाचा फुरै, श्री नाथ जी के सिंहासन ऊपर पान फुल की पुजा चढै हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरै, भण्डार भरै
७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह, १२ राशि, १५ तिथी सोम, रवि, शुक्र, शनि, मंगल, गुरु, राहू, केतु सुख करै दुख हरै। खाली वाचा कभी ना पडै।
ॐ बुध मंत्र गायत्री जाप रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ ।
ॐ बुधाय नमो नमः स्वाहा
हवन सामग्री - गोघृत तथा अपामार्ग की लकड़ी
श्री नाथजी गुरुजी को आदेश आदेश

उपरोक्त शाबर मंत्र का जाप बुध ग्रह की शांति के लिए किया जाता है , इस मंत्र का जाप कोई भी कर सकता है , रुद्राक्ष की माला से जाप करे 108 बार और लगातार 9 बुधवार को करे , बुध ग्रह के ताप से छुटकारा मिटा है।

जय श्री शंभू-यति गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज को नमो आदेश आदेश ।

छोटे बच्चों को नजर लगने पर
===================

बच्चो को नजर लगना आम बात है, अगर आप चाहते हैं की छोटे बच्चों को नजर न लगे इसके लिए हाथ में चुटकी भर भभूत (धुने की) लेकर ब्रहस्पतिवार के दिन

'ॐ चैतन्य गोरखनाथ नमः'

इस मंत्र का 108 बार जप करें। फिर इसे छोटी-सी पुडिया मे डाल कर काले कपड़े में बांध कर काले रेशमी धागे से बच्चे के गले में बाँधने पर बुरी नजर नहीं लगती।

जय श्री शंभू-यति गुरु गोरक्षनाथ जी को नमो आदेश आदेश।

कर्ण मातंगी साधना मंत्र
===============

ऐं नमः श्री मातंगि अमोघे सत्यवादिनि मककर्णे अवतर अवतर सत्यं कथय एह्येहि श्री मातंग्यै नमः।

या

ऊं नमः कर्ण पिशाचिनी अमोघ सत्यवादिनी मम कर्णे अवतर अवतर अतीत अनागत वर्तमानानि दर्शय दर्शय मम भविष्यं कथय कथय ह्रीं कर्ण पिशाचिनी स्वाहा।

ऐं बीज से षडंगन्यास करें।
पुरश्चरण के लिए आठ हजार की संख्या में जप करें।
कई बार प्रतिकूल ग्रह स्थिति रहने पर जप संख्या थोड़ी बढ़ानी भी पड़ती है।
41 दिन मे साधना पूर्ण होती है ।
दोनों मे से किसी एक मंत्र का जाप कर सकते है ।
लाल चन्दन की या मूँगे या रुद्राक्ष की माला मंत्र जाप के लिए श्रेष्ठ है ।
जप के दौरान शारीरिक पवित्रता की जरूरत नहीं है लेकिन मानसिक रूप से पवित्र होना आवश्यक है।
इसमें हवन भी आवश्यक नहीं है।
खीर को प्रसाद रूप में माता को चढ़ा कर उससे हवन करना अतिरिक्त ताकत देता है।
इसके साधक को माता कर्ण मातंगी भविष्य में घटने वाली शुभ-अशुभ घटनाओं की जानकारी स्वप्न में देती हैं।
इच्छुक साधक को माता से प्रश्न का जवाब भी मिल जाता है। भक्ति-पूर्वक एवं निष्काम साधना करने पर माता साधक का पथ-प्रदर्शन करती हैं।

किसी भी साधना को करने के लिए गुरु की आवश्यकता होती है गुरु के सानिध्य मे की हुई साधना जल्द और लाभकारी होती है । गुरु मंत्र की एक माला का जाप साधना के आरंभ मे करें ।

साधना काल मे नशे और नारी संग सर्वथा वर्जित है।

सिद्ध टोटके और उपाय
==============

1. आर्थिक समस्या के छुटकारे के लिए : यदि आप हमेशा आर्थिक समस्या से परेशान हैं तो इसके लिए आप 21 शुक्रवार 9 वर्ष से कम आयु की 5 कन्यायों को खीर व मिश्री का प्रसाद बांटें !

2. घर और कार्यस्थल में धन वर्षा के लिए : इसके लिए आप अपने घर, दुकान या शोरूम में एक अलंकारिक फव्वारा रखें ! या एक मछलीघर जिसमें 8 सुनहरी व एक काली मछली हो रखें ! इसको उत्तर या उत्तरपूर्व की ओर रखें ! यदि कोई मछली मर जाय तो उसको निकाल कर नई मछली लाकर उसमें डाल दें !

3. परेशानी से मुक्ति के लिए : आज कल हर आदमी किसी न किसी कारण से परेशान है ! कारण कोई भी हो आप एक तांबे के पात्र में जल भर कर उसमें थोडा सा लाल चंदन मिला दें ! उस पात्र को सिरहाने रख कर रात को सो जांय ! प्रातः उस जल को तुलसी के पौधे पर चढा दें ! धीरे-धीरे परेशानी दूर होगी !

4. कुंवारी कन्या के विवाह हेतु :

१. यदि कन्या की शादी में कोई रूकावट आ रही हो तो पूजा वाले 5 नारियल लें ! भगवान शिव की मूर्ती या फोटो के आगे रख कर "ऊं श्रीं वर प्रदाय श्री नामः" मंत्र का पांच माला जाप करें फिर वो पांचों नारियल शिव जी के मंदिर में चढा दें ! विवाह की बाधायें अपने आप दूर होती जांयगी !
२. प्रत्येक सोमवार को कन्या सुबह नहा-धोकर शिवलिंग पर "ऊं सोमेश्वराय नमः" का जाप करते हुए दूध मिले जल को चढाये और वहीं मंदिर में बैठ कर रूद्राक्ष की माला से इसी मंत्र का एक माला जप करे ! विवाह की सम्भावना शीघ्र बनती नज़र आयेगी

5. व्यापार बढाने के लिए :

१. शुक्ल पक्ष में किसी भी दिन अपनी फैक्ट्री या दुकान के दरवाजे के दोनों तरफ बाहर की ओर थोडा सा गेहूं का आटा रख दें ! ध्यान रहे ऐसा करते हुए आपको कोई देखे नही !
२. पूजा घर में अभिमंत्रित श्री यंत्र रखें !
३. शुक्रवार की रात को सवा किलो काले चने भिगो दें ! दूसरे दिन शनिवार को उन्हें सरसों के तेल में बना लें ! उसके तीन हिस्से कर लें ! उसमें से एक हिस्सा घोडे या भैंसे को खिला दें ! दूसरा हिस्सा कुष्ठ रोगी को दे दें और तीसरा हिस्सा अपने सिर से घडी की सूई से उल्टे तरफ तीन बार वार कर किसी चौराहे पर रख दें ! यह प्रयोग 40 दिन तक करें ! कारोबार में लाभ होगा !

6. लगातार बुखार आने पर :

१. यदि किसी को लगातार बुखार आ रहा हो और कोई भी दवा असर न कर रही हो तो आक की जड लेकर उसे किसी कपडे में कस कर बांध लें ! फिर उस कपडे को रोगी के कान से बांध दें ! बुखार उतर जायगा !
२. इतवार या गुरूवार को चीनी, दूध, चावल और पेठा (कद्दू-पेठा, सब्जी बनाने वाला) अपनी इच्छा अनुसार लें और उसको रोगी के सिर पर से वार कर किसी भी धार्मिक स्थान पर, जहां पर लंगर बनता हो, दान कर दें !
३. यदि किसी को टायफाईड हो गया हो तो उसे प्रतिदिन एक नारियल पानी पिलायें ! कुछ ही दिनों में आराम हो जायगा !

7. नौकरी जाने का खतरा हो या ट्रांसफर रूकवाने के लिए : पांच ग्राम डली वाला सुरमा लें ! उसे किसी वीरान जगह पर गाड दें ! ख्याल रहे कि जिस औजार से आपने जमीन खोदी है उस औजार को वापिस न लायें ! उसे वहीं फेंक दें दूसरी बात जो ध्यान रखने वाली है वो यह है कि सुरमा डली वाला हो और एक ही डली लगभग 5 ग्राम की हो ! एक से ज्यादा डलियां नहीं होनी चाहिए !

8. कारोबार में नुकसान हो रहा हो या कार्यक्षेत्र में झगडा हो रहा हो तो : यदि उपरोक्त स्थिति का सामना हो तो आप अपने वज़न के बराबर कच्चा कोयला लेकर जल प्रवाह कर दें ! अवश्य लाभ होगा !

9. मुकदमें में विजय पाने के लिए : यदि आपका किसी के साथ मुकदमा चल रहा हो और आप उसमें विजय पाना चाहते हैं तो थोडे से चावल लेकर कोर्ट/कचहरी में जांय और उन चावलों को कचहरी में कहीं पर फेंक दें ! जिस कमरे में आपका मुकदमा चल रहा हो उसके बाहर फेंकें तो ज्यादा अच्छा है ! परंतु याद रहे आपको चावल ले जाते या कोर्ट में फेंकते समय कोई देखे नहीं वरना लाभ नहीं होगा ! यह उपाय आपको बिना किसी को पता लगे करना होगा !

10. धन के ठहराव के लिए : आप जो भी धन मेहनत से कमाते हैं उससे ज्यादा खर्च हो रहा हो अर्थात घर में धन का ठहराव न हो तो ध्यान रखें को आपके घर में कोई नल लीक न करता हो ! अर्थात पानी टप–टप टपकता न हो ! और आग पर रखा दूध या चाय उबलनी नहीं चाहिये ! वरना आमदनी से ज्यादा खर्च होने की सम्भावना रहती है !

11. मानसिक परेशानी दूर करने के लिए : रोज़ हनुमान जी का पूजन करे व हनुमान चालीसा का पाठ करें ! प्रत्येक शनिवार को शनि को तेल चढायें ! अपनी पहनी हुई एक जोडी चप्पल किसी गरीब को एक बार दान करें !

12. बच्चे के उत्तम स्वास्थ्य व दीर्घायु के लिए :

१. एक काला रेशमी डोरा लें ! "ऊं नमोः भगवते वासुदेवाय नमः" का जाप करते हुए उस डोरे में थोडी थोडी दूरी पर सात गांठें लगायें ! उस डोरे को बच्चे के गले या कमर में बांध दें !
२. प्रत्येक मंगलवार को बच्चे के सिर पर से कच्चा दूध 11 बार वार कर किसी जंगली कुत्ते को शाम के समय पिला दें ! बच्चा दीर्घायु होगा !

13. किसी रोग से ग्रसित होने पर : सोते समय अपना सिरहाना पूर्व की ओर रखें ! अपने सोने के कमरे में एक कटोरी में सेंधा नमक के कुछ टुकडे रखें ! सेहत ठीक रहेगी !

14. प्रेम विवाह में सफल होने के लिए : यदि आपको प्रेम विवाह में अडचने आ रही हैं तो : शुक्ल पक्ष के गुरूवार से शुरू करके विष्णु और लक्ष्मी मां की मूर्ती या फोटो के आगे "ऊं लक्ष्मी नारायणाय नमः" मंत्र का रोज़ तीन माला जाप स्फटिक माला पर करें ! इसे शुक्ल पक्ष के गुरूवार से ही शुरू करें ! तीन महीने तक हर गुरूवार को मंदिर में प्रशाद चढांए और विवाह की सफलता के लिए प्रार्थना करें !

15. नौकर न टिके या परेशान करे तो : हर मंगलवार को बदाना (मीठी बूंदी) का प्रशाद लेकर मंदिर में चढा कर लडकियों में बांट दें ! ऐसा आप चार मंगलवार करें !

16. बनता काम बिगडता हो, लाभ न हो रहा हो या कोई भी परेशानी हो तो : हर मंगलवार को हनुमान जी के चरणों में बदाना (मीठी बूंदी) चढा कर उसी प्रशाद को मंदिर के बाहर गरीबों में बांट दें !

17. यदि आपको सही नौकरी मिलने में दिक्कत आ रही हो तो :

१. कुएं में दूध डालें! उस कुएं में पानी होना चहिए !
२. काला कम्बल किसी गरीब को दान दें !
३. 6 मुखी रूद्राक्ष की माला 108 मनकों वाली माला धारण करें जिसमें हर मनके के बाद चांदी के टुकडे पिरोये हों !

18. अगर आपका प्रमोशन नहीं हो रहा तो :

१. गुरूवार को किसी मंदिर में पीली वस्तुये जैसे खाद्य पदार्थ, फल, कपडे इत्यादि का दान करें !
२. हर सुबह नंगे पैर घास पर चलें !

19. पति को वश में करने के लिए : यह प्रयोग शुक्ल पक्ष में करना चाहिए ! एक पान का पत्ता लें ! उस पर चंदन और केसर का पाऊडर मिला कर रखें ! फिर दुर्गा माता जी की फोटो के सामने बैठ कर दुर्गा स्तुति में से चँडी स्त्रोत का पाठ 43 दिन तक करें ! पाठ करने के बाद चंदन और केसर जो पान के पत्ते पर रखा था, का तिलक अपने माथे पर लगायें ! और फिर तिलक लगा कर पति के सामने जांय ! यदि पति वहां पर न हों तो उनकी फोटो के सामने जांय ! पान का पता रोज़ नया लें जो कि साबुत हो कहीं से कटा फटा न हो ! रोज़ प्रयोग किए गए पान के पत्ते को अलग किसी स्थान पर रखें ! 43 दिन के बाद उन पान के पत्तों को जल प्रवाह कर दें ! शीघ्र समस्या का समाधान होगा !

20. यदि आपको धन की परेशानी है, नौकरी मे दिक्कत आ रही है, प्रमोशन नहीं हो रहा है या आप अच्छे करियर की तलाश में है तो यह उपाय कीजिए : किसी दुकान में जाकर किसी भी शुक्रवार को कोई भी एक स्टील का ताला खरीद लीजिए ! लेकिन ताला खरीदते वक्त न तो उस ताले को आप खुद खोलें और न ही दुकानदार को खोलने दें ताले को जांचने के लिए भी न खोलें ! उसी तरह से डिब्बी में बन्द का बन्द ताला दुकान से खरीद लें ! इस ताले को आप शुक्रवार की रात अपने सोने के कमरे में रख दें ! शनिवार सुबह उठकर नहा-धो कर ताले को बिना खोले किसी मन्दिर, गुरुद्वारे या किसी भी धार्मिक स्थान पर रख दें ! जब भी कोई उस ताले को खोलेगा आपकी किस्मत का ताला खुल जायगा !

21. यदि आप अपना मकान, दुकान या कोई अन्य प्रापर्टी बेचना चाहते हैं और वो बिक न रही हो तो यह उपाय करें : बाजार से 86 (छियासी) साबुत बादाम (छिलके सहित) ले आईए ! सुबह नहा-धो कर, बिना कुछ खाये, दो बादाम लेकर मन्दिर जाईए ! दोनो बादाम मन्दिर में शिव-लिंग या शिव जी के आगे रख दीजिए ! हाथ जोड कर भगवान से प्रापर्टी को बेचने की प्रार्थना कीजिए और उन दो बादामों में से एक बादाम वापिस ले आईए ! उस बादाम को लाकर घर में कहीं अलग रख दीजिए ! ऐसा आपको 43 दिन तक लगातार करना है ! रोज़ दो बादाम लेजाकर एक वापिस लाना है ! 43 दिन के बाद जो बादाम आपने घर में इकट्ठा किए हैं उन्हें जल-प्रवाह (बहते जल, नदी आदि में) कर दें ! आपका मनोरथ अवश्य पूरा होगा ! यदि 43 दिन से पहले ही आपका सौदा हो जाय तो भी उपाय को अधूरा नही छोडना चाहिए ! पूरा उपाय करके 43 बादाम जल-प्रवाह करने चाहिए ! अन्यथा कार्य में रूकावट आ सकती है !

22. यदि आप ब्लड प्रेशर या डिप्रेशन से परेशान हैं तो : इतवार की रात को सोते समय अपने सिरहाने की तरफ 325 ग्राम दूध रख कर सोंए ! सोमवार को सुबह उठ कर सबसे पहले इस दूध को किसी कीकर या पीपल के पेड को अर्पित कर दें ! यह उपाय 5 इतवार तक लगातार करें ! लाभ होगा !

23. माईग्रेन या आधा सीसी का दर्द का उपाय : सुबह सूरज उगने के समय एक गुड का डला लेकर किसी चौराहे पर जाकर दक्षिण की ओर मुंह करके खडे हो जांय ! गुड को अपने दांतों से दो हिस्सों में काट दीजिए ! गुड के दोनो हिस्सों को वहीं चौराहे पर फैंक दें और वापिस आ जांय ! यह उपाय किसी भी मंगलवार से शुरू करें तथा 5 मंगलवार लगातार करें ! लेकिन….लेकिन ध्यान रहे यह उपाय करते समय आप किसी से भी बात न करें और न ही कोई आपको पुकारे न ही आप से कोई बात करे ! अवश्य लाभ होगा !

24. फंसा हुआ धन वापिस लेने के लिए : यदि आपकी रकम कहीं फंस गई है और पैसे वापिस नहीं मिल रहे तो आप रोज़ सुबह नहाने के पश्चात सूरज को जल अर्पण करें ! उस जल में 11 बीज लाल मिर्च के डाल दें तथा सूर्य भगवान से पैसे वापिसी की प्रार्थना करें ! इसके साथ ही "ओम आदित्याय नमः " का जाप करें !

नोट :

1. सभी उपाय दिन में ही करने चाहिए ! अर्थात सूरज उगने के बाद व सूरज डूबने से पहले !
2. सच्चाई व शुद्ध भोजन पर विशेष ध्यान देना चाहिए !
3. किसी भी उपाय के बीच मांस, मदिरा, झूठे वचन, परस्त्री गमन की विशेष मनाही है !
4. सभी उपाय पूरे विश्वास व श्रद्धा से करें, लाभ अवश्य होगा !
5. एक दिन में एक ही उपाय करना चाहिए ! यदि एक से ज्यादा उपाय करने हों तो छोटा उपाय पहले करें ! एक उपाय के दौरान दूसरे उपाय का कोई सामान भी घर में न रखें !
6. जो भी उपाय शुरू करें तो उसे पूरा अवश्य करें ! अधूरा न छोडें !

अथ गौरी गणेश सत्वन शाबर मंत्र

ॐ गुरुजी
ॐ कंठ बसे सरस्वती हृदय देव महेश भुला अक्षर ज्ञान का जोत कला प्रकाश,
सिद्ध गौरी नन्द गणेश बुध को विनायक सिमरिये बल को सिमरिये हनुमंत, ऋद्ध-सिद्ध को श्री ईश्वर महादेव जी सिमरिये, श्री गंगा गौरी पार्वती माई जी तुम्हारे कन्त उमा देवी गौरजा पार्वती भस्मन्ती देवी हिरख मन अगर कुंकुम केशर कस्तुरी मिला कूपिया तिस्ते भया, एक टीका अमर सेंचो जी जीव संचिया शक्त्त स्वरूपी हाथ धरिया नाम धारियो श्री गणपतनाथ पूता जी तुम बैठो स्थान में जावा नहावण आवण-जावण किसी को न दीजिये अंकुश मारपर संग लीजिये । बण खण्ड मध्ये से आए श्री ईश्वर महादेव छूटी ललकार ईश्वर देख बालक क्रोप भरिया ज्यो घृत बसन्तर धरिया शिवजी आणि मन सा रीस फिरयो चक्र ले गयो शीश तीन भवन से भई हलूल श्री गंगा गौरजा पार्वती माई जी आ कहने लगी स्वामी जी पुत्र मारिया तिसका कौन विचार देवी जी मै नहीं जानो तुमरा पूत मै जानो कोई दैत्य न दूत गज हस्ती का शीश लियाऊं, काट आन अलख निरंजन के पास बिठाऊं, शंकर जी ल्याये हस्ती का शीश श्री गंगा गौरजा पार्वती माई जी करी असीस जब गनपट उठन्ते खेल करन्ते, महिमा उवरन्ते गणपत बैठे स्थान मकान उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम ल्याये श्री गंगा गौरजा पार्वती माई जी के आगे स्वामी जी तुम तो सिमरे सोची मोची तेली तंबोली ठठीहरा गनिहारा लुहारा क्षेत्र सिमरे क्षेत्रपाल अजुनी शंभू सिमरे महाकाल लाम्बी सूँड बालक भेष प्रथमे सिमरो आद गणेश पाँच कोस ऋद्ध उत्तर से ल्याऊं, पाँच कोस ऋद्ध दक्षिण से ल्याऊं, पाँच कोस ऋद्ध पूर्व से ल्याऊं, पाँच कोस ऋद्ध पश्चिम से ल्याऊं, दस कोस ऋद्ध अज गायब से ल्याऊं, इतनी ऋद्ध-सिद्ध दिये बिना न जाऊँ श्री गंगा गौरजा पार्वती माई जी तुम्हारी माया प्रथमे एक दन्त, द्वितीय मेघवर्ण, तृतीय गज करण, चतुर्थ लंबोधर, पंचमे विघ्नहरण, षष्टमे धूम्ररूप, सप्तमे विनायक, अष्टमे भालचंद्र, नवमे शील संतोष, दशमे हस्तमुख, एकादशे द्वारपाल, द्वादशे वरदायक एते गणपत गणेश नाम द्वादश सम्पूर्ण भया । श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश आदेश ।

लक्ष्मी-सरस्वती-ऋद्धि-सिद्धि के लिए अमोघ मंत्र है 108 बार रुद्राक्ष की माला से जाप करें । शिव परिवार और सरस्वती, लक्ष्मी जी की फोटो लगाकर शुद्ध देशी घी का दीपक जला कर किसी भी शुभ महूरत में सुबह भोर वेला में इसका पाठ करना चाहिये । इस पाठ के करने से हर मनोवांछित फल प्राप्त होता है ।

शाबर मंत्र आम ग्रामीण बोलचाल की भाषा में ऐसे स्वयं सिद्ध मंत्र हैं जिनका प्रभाव अचूक होता है। थोड़े से जाप से भी ये मंत्र सिद्ध हो जाते हैं तथा अत्यधिक प्रभाव दिखाते हैं। इन मंत्रों का प्रभाव स्थायी होता है तथा किसी भी मंत्र से इनकी काट संभव नहीं है। शाबर मंत्रो का भी एक अलग विज्ञान है कुछ शब्दों का चयन इस प्रकार है जिसका कोई अर्थ नहीं होता मगर देवताओं को उस कार्य को करने को प्रेरित किया जाता है और एक दुहाई या कसम दी जाती है कुछ छिट-पुट रोगों के लिए हमने इसे आजमाया है और बिलकुल सटीक पाया है कई बीमारियों से इससे निजात पाई जा सकती है |

तो आपके लिए यह एक सरल साधना पोस्ट कर रहा हूँ .

उदर रोग का एक महत्वपूर्ण प्रयोग
====================

* इस साधना को करने से पेट की तमाम बीमारियों से निज़ात पाई जा सकती है | बदहज्मी, पेट गैस, दर्द और आंव का पूर्ण इलाज हो जाता है | इसे ग्रहण काल, दीपावली और होली आदि शुभ मुहूरतों में कभी भी सिद्ध किया जा सकता है | आप दिन या रात में कभी भी कर सकते हैं | इस मंत्र को १०८ बार जप कर सिद्ध कर लें | प्रयोग के वक़्त ७ बार पानी पर मन्त्र पढ़ फूँक मारें और रोगी को पिला दें , जल्द ही फ़ायदा होगा |

साबर मन्त्र
=======

|| ॐ नमो अदेस गुरु को शियाम बरत शियाम गुरु पर्वत में बड़ बड़ में कुआ कुआ में तीन सुआ कोन कोन सुआ वाई सुआ छर सुआ पीड़ सुआ भाज भाज रे झरावे यती हनुमत मार करेगा भसमंत फुरो मन्त्र इश्वरो वाचा ||

नेत्र रोग की महत्वपूर्ण साधना
=================

* आंखे मनुष्य के लिए अनमोल रत्न हैं | कई बार व्यक्ति अकारण वश नेत्र रोग से पीड़ित हो जाते हैं | जिससे बहुत परेशानी का सामना करना पड़ता है | यह बहुत ही तीक्ष्ण मन्त्र है, इससे तमाम नेत्र रोग से निज़ात पाई जा सकती है | इसे भी ग्रहण काल, होली, दीपावली आदि शुभ मुहूरतों में १०८ बार जाप कर सिद्ध कर लें और प्रयोग के वक़्त इसको ७ बार पढ़कर कुषा से झाडा कर दें , तमाम नेत्र दोष दूर हो जाते हैं |

साबर मन्त्र
=======

||ॐ अन्गाली बंगाली अताल पताल गर्द मर्द आदर ददार फट फट उत्कट ॐ हुं हुं ठा ठा ||

आधा सिर दर्द
=========

* आधा सिर दर्द और माईग्रेन एक बहुत बड़ी समस्या है | उसके लिए एक महत्वपूर्ण मन्त्र दे रहा हूँ | इसे भी ग्रहण काल, दीपावली आदि पर उपर वाले तरीके से सिद्ध कर लें | प्रयोग के वक़्त एक छोटी नमक की डली ले कर उस पर ७ बार मन्त्र पढ़ें और पानी में घोल कर माथे पर लगा दें , आधे सिर की दर्द फ़ौरन बंद हो जाएगी |

साबर मन्त्र
=======

|| को करता कुडू करता बाट का घाट का हांक देता पवन बंदना योगीराज अचल सचल ||

दाड दर्द का एक महत्व पूर्ण मंत्र
==================

* दाड दर्द जिसे हो वही जानता है | कई बार तो दाड निकालने की नौबत आ जाती है | इस दर्द से निज़ात पाने का एक बहुत ही महत्वपूर्ण मन्त्र दे रहा हूँ | इसे सूर्य ग्रहण, दीपावली आदि में १०८ बार जप कर सिद्ध कर लें | प्रयोग के वक़्त नीम की डाली से झाडा कर दें |

साबर मंत्र
======

|| ॐ नमो आदेश गुरु को वन में विहाई अंजनी जिस जाया हनुमंत कीड़ा मकोड़ा माकडा यह तीनो भसमंत गुरु की शक्ति मेरी भगती फुरो मंत्र इश्वरो वाचा ||

यह सभी साधनाएं प्रयोग अजमाए हुए हैं | एक बार सिद्ध कर लेने से जब चाहे काम ले सकते हैं |जप से पहले अगर आप एक माला अपने गुरु मन्त्र का जाप करके सिद्ध करे तो इसका प्रभाव दुगना हो जाता है .

समय आने पे कुछ और शाबर मंत्रो की व्याख्या अवश्य करूँगा ...!

जब भी नज़र आयें ये 25 शुभ संकेत तो समझ जाइएगा, 'अच्छे दिन' जल्दी आने वाले हैं
++

अकसर मैंने लोगों को अपने बदनसीब होने का रोना रोते देखा है. सभी का यह सोचना होता है कि दुनिया में कुछ ही ऐसे लोग हैं, जिन्हें भाग्यशाली होने का सौभाग्य मिला है. कुछ लोग मानते हैं कि सब कुछ कड़ी मेहनत करने से ही मिलता है, जबकि कुछ ऐसे भी मिल जाते हैं, जो ज़िन्दगी में हर चीज़ के लिए किस्मत का बलवान होना कम्पलसरी समझते हैं. भारतीय होने के नाते हम लोगों का अपने शास्त्रों पर कुछ ज़्यादा ही यकीन होता है. आज हम आपके लिए शास्त्रों के अन्दर वर्णित चुनिन्दा ऐसे संकेत लेकर आये हैं, जो अगर आपको दिखें तो समझ लेना मामू...फटेहाल ज़िन्दगी में रौनक आने वाली है. ये सभी सिंबल गुड लक के साइन माने जाते हैं. अब बिना इंतज़ार के आप भी देख ही लो इन्हें...

1. सफेद गाय :- सनातन धर्मियों की गौ माता जिसे कुछ लोग केवल राजनीतिक मुद्दा ही समझते होंगे, उन्हें हम बता दें यह आर्थिक सुदृढ़ीकरण का भी प्रतीक है. अब अगली बार जब भी आपके खेत में या गार्डन में गाय आ कर चरने लग जाये, तो समझ जाइएगा साक्षात लक्ष्मी जी ने संदेशा भेजा है।
2. नारियल :- नारियल को वैसे भी भारतीय सामाजिक परम्परा में शुभ माना जाता है. तो अब ये भी जान लो अगली बार जब भी कभी आपको सुबह उठते ही इस श्रीफल के दर्शन हों, तो समझ जाना अच्छी खबर आने वाली है।
3. यात्रा के दौरान मिलने वाले संकेत :- जब कभी भी यात्रा करते समय आपको अपनी दायीं तरफ़ कोई बन्दर, कुत्ता, सांप दिखे तो, समझ जाना यह भी आपके पास आने वाले धन का संकेत आपको दे रहे हैं।
4. सुनहरा सांप :- अगर रात को आपको सोते समय सपने में सफेद या सुनहरे रंग का सांप नज़र आये, तो यह भी खुलने वाली किस्मत का इशारा होता है।
5. हरियाली :- सपने में हरे-भरे प्राकृतिक नजारे दिखना भी शुभ संकेत माना जाता है. हरियाली अगर पानी के किसी स्रोत के पास हो तो यह उससे भी अच्छा संकेत होता है।
6. दूध के बने उत्पाद :- सुबह-सुबह उठते ही दही और दूध जैसे पदार्थ का दिखाई दे जाना भी आने वाली अच्छी किस्मत का संकेत होता है।
7. गन्ना :- सुबह घर से अपने काम पर जाते वक्त या मॉर्निंग वॉक करते समय गन्ने का दिखाई दे जाना भी यह संकेत देता है कि आज आपको कही से पैसे मिलने वाले हैं।
8. लयबद्ध संगीत :- सुबह उठते समय आपको अपने आसपास किसी मन्दिर से शंख, घंटियों या किसी मधुर भजन की आवाज़ सुनाई देना भी शास्त्रों में आने वाले अच्छे भाग्य का संकेत माना जाता है।
9. नव-विवाहिता का दिखाई दे जाना :- आपको रास्ते में अगर सोलह श्रृंगार किये कोई नई-नई दुल्हन नज़र आ जाये तो इसे भी आने वाली अच्छी किस्मत का संकेत माना जाता है।
10. आपके घर में चमगादड़ द्वारा घर बनाना :- दुनिया में अधिकतर मान्यताओं के अनुसार आपके घर में किसी चमगादड़ का आना अशुभ संकेत माना जाता है. लेकिन हम आपको बता दें, वही चमगादड़ अगर आपके घर में रुककर अपना घर बना लें तो इसे एक शुभ संकेत माना जाता है।
11. शुभ दिन पर पैसे आना :- हम सब की ज़िन्दगी में कोई न कोई शुभ दिन या सप्ताह होता है उस समय अगर आपको कहीं से धन की प्राप्ति हो जाये तो, इसका मतलब है अभी और धन आने वाला है।
12. पक्षियों का बीट करना :- बहुत ही कम लोग ऐसे होते हैं जिनके ऊपर उनकी ज़िन्दगी में किसी पक्षी ने बीट की हो और अगर की भी हो तो लोग झल्ला जाते हैं। पर आपको बता दें, यह भी एक शुभ संकेत माना जाता है।
13. मकड़ी का जाला :- गुस्सा मत होइये हमें भी पता है, मकड़ी के जाले का घर में पाया जाना अशुभ माना जाता है। अब काम की बात यह है कि अगली बार अगर कोई जाला दिखाई दे और उसमें आपको अपने नाम का पहला अक्षर बना हुआ नज़र आये तो वह भी एक

शुभ संकेत माना जाता है।
14. टूटते तारे का नज़र आना :- इस संकेत को पूरी दुनिया में मान्यता प्राप्त है. पूर्वज कहते आए हैं टूटते तारे सो जो भी मांगो आपको आने वाले 30 दिन में सच हो जाता है। इसलिए सोच समझ कर मांगना।
15. गलती से उलटे कपड़े पहन लेना :- जब भी हमें कहीं जाने की जल्दी होती है तो हम जल्दबाजी में कपड़े उलटे पहन लेते हैं और जब देखते हैं तो अपने आप पर गुस्सा भी होते हैं। भविष्य में दोबारा अगर ऐसा आपके साथ हो तो समझ लेना मामला गुस्से का नहीं ख़ुश होने का है। उलटे कपड़े पहन लेना भी आने वाली समृद्धि का प्रतीक होता है।
16. शुभ चीजों का मिलना :- आपको रास्ते में कहीं घोड़े की नाल, चार पत्तियों वाली घास या कोई सिक्का मिल जाये तो उसे सम्हालकर अपने पास रख लेना चाहिए। यह भी आने वाले भाग्य के निर्देशक होते हैं।
17. कुत्ते का घर पर रहने आना :- कोई कुत्ता अगर आपके घर पर रहने के लिए छत की तलाश में आ जाये तो यह भी भविष्य में आने वाले धन का संकेत होता है।
18. गार्डन क्रिएचर्स का दिखना :- बारिश के बाद अगर आपको अपने बगीचे में मेंढ़क, बीटल, टिड्डों का शोर सुनाई दें, तो यह भी एक अच्छा संकेत होता है। अगली बार इरिटेट होने की बजाय उस संगीत का आनंद लीजिये।
19. बारिश में सूरज का चमकना :- ऐसा बहुत ही कम होता है जब आपको बारिश में भीगते समय सामने आसमान में चमकता सूरज दिखाई दे। यदि ऐसा कभी होता है तो समझ जाइये आप जल्द ही मालामाल होने वाले हैं।
20. हाथ में खुजली होना :- इससे तो आप सभी वाकिफ ही होंगे। हमारे यहां हाथ में खुजली होने को आने वाले धन के संकेत के रूप में देखा जाता है।
21. कछुआ :- कछुए को पूरी दुनिया में अच्छे भाग्य का प्रतीक माना जाता है। इसका किसी भी रूप में दिखाई दे जाना, कोई न कोई अच्छी खबर ज़रूर लाता है।
22. डॉलफिन :- डॉलफिन को वैसे भी इनसान का अच्छा दोस्त कहा जाता है। यह भी जान ही लो यह दोस्त सच में अच्छा होता है। डॉलफिन को भी आने वाले अच्छे भाग्य का प्रतीक माना जाता है।
23. सूअर :- सूअर को भी दुनिया भर में अच्छा भाग्य लाने वाला माना जाता है। अब आप समझ ही गये होंगे पिगी बैंक का राज़।
24. मोती :- सभ्यताएं पानी के किनारे पनपी है। किसी समय तो आभूषण के रूप में इनका खूब उपयोग होता था। इन मोतियों को अच्छे भाग्य का प्रतीक भी माना जाता है।
25. झींगुर :- नाम पढ़ते ही हंसी आई होगी ना, तो रुकिए मत! झींगुर का शोर सुनाई देना या इसका दिखाई दे जाना भी आप के बुरे दिनों के खत्म होने का संकेत होता है।

तो अब आपको पता चल गया है कि कौन से ऐसे संकेत है जिनके दिखाई दे जाने पर आपकी किस्मत बदल जाएगी। तो अगली बार जब भी ये दिखाई दें, तो आपके अच्छे दिन आये या नहीं, हमें कमेन्ट करके ज़रूर बताना। तब तक टाइम पास के लिए मेहनत करते रहिए, इस विश्वास के साथ कि देने वाला जब भी देगा छप्पर फाड़ कर देगा।

वशीकरण साधना
===========

वशीकरण के लिए यह साधना बहुत ही उच्च कोटि की साधना है। इस साधना को किसी भी सोमवार रात में 11 बजे के बाद शुरू किया जा सकता है। साधना शुरू करने से पहले स्नान करके लाल कपड़े धारण कर लें। आप पहले लोहे या स्टील की बनी हुई एक प्लेट लें।

अब इसके अंदर पूरी तरह काजल लगा दें और मंत्र 'ऊं अघोरेभ्यों घोरेभ्यों नम:' को लिखे यानी काजल को इस प्रकार हटाए कि काजल में लिखा हुआ मंत्र साफ नजर आएं। अब प्लेट के ऊपर जिस भी व्यक्ति का वशीकरण करना है उसके वस्त्र का टुकड़ा बिछा दें।

यदि संभव न हो पुराना कपड़ा

प्लेट पर पुराना कपड़ा बिछाना संभव नहीं हो सके तो कोई भी नया कपड़े का टुकड़ा उस प्लेट पर बिछा दें। अब उस पर सिंदूर से उस व्यक्ति का नाम लिख दें, जिस पर यह प्रयोग करना है। अपने सामने भगवान शिव की तस्वीर रखें ।

यदि संभव न हो पुराना कपड़ा

संभव हो सके तो जिसका वशीकरण करना है उसकी तस्वीर भी रखें। रात्रि में ध्यान लगाकर रुद्राक्ष की माला से 'शिवे वश्ये हुं वश्ये

अमुक वश्ये हूं वश्ये शिवे वश्ये वश्य्मे वश्य्मे वश्य्मे फट' मंत्र का जाप करें। यह जाप एक रात में 51 माला करना है। मंत्र में अमुक की जगह व्यक्ति का नाम उच्चारित करना है।

जप पूरा होने पर क्या करें

जब जप की 51 माला पूरी हो जाएं तो आप ऋषि मुंड केश और भगवान अघोरेश्वर से अपनी साधना में सफलता प्रदान करने के लिए प्रार्थना करें। साधना करने के दौरान आपको कुछ अजीब या आश्चर्य जनक अनुभव हो सकता है।

लेकिन इससे परेशान या चिंतित न हो। यह लक्षण है कि आपकी साधना सफल हो रही है। साधना शुरू करने के कुछ दिन बाद ही आपको परिणाम मिलने शुरू हो सकते हैं।

तत्काल फल देती है अघोर साधना

अघोर साधना कठिन लेकिन तत्काल फल देने वाली होती है। साधना से पूर्व मोह-माया का त्याग जरूरी है। अघोरी मानते हैं कि जो लोग दुनियादारी और गलत कामों के लिए तंत्र साधना करते हैं अंत में उनका अहित ही होता है।
श्मशान में शिव का वास है उनकी उपासना हमें मोक्ष की ओर ले जाती है। सभी तरह के वैराग्य को प्राप्त करने के लिए अघोरी साधु श्मशान में कुछ दिन गुजारने के बाद हिमालय या जंगल में चले जाते हैं।

किसी को वश में करने से जुड़ा तांत्रिक उपाय :-

इस उपाय को करने के लिए आपको सफेद आंकड़े के फूल की आवश्यकता पड़ेगी। सफेद आंकड़े के फूल को लेकर उसे छाया में सूखने दे। इसके पश्चात आंकड़े के सूखे फूल को कपिला गाय की दूध में यानि की सफेद रंग के गाय के दूध में पीस ले और इसका तिलक उस व्यक्ति के सर में लगाए जिस व्यक्ति को आप अपने वश में करना चाहते है।

वह व्यक्ति आप के वश में होकर आपकी सभी बातो को मानने लगेगा। परन्तु ध्यान रहे की इस तांत्रिक क्रिया का कोई दुरूपयोग न हो।

किसी को वश में करना वशीकरण कहलाता है। इसके लिए वशीकरण मंत्र का प्रयोग किया जाता है। वशीकरण मंत्र जिसके लिए पढ़ा जाता है, वह मनुष्य मंत्र पढ़ने वाले के वश में आ जाता है। कभी आपने सोचा है कि इस बात में कितना सच है?

मनुष्य चाँद पर पहुँच चुका है और मंगल तक यान भेज चुका है। लेकिन मनुष्य आत्मविश्वास की कमी के कारण कुछ भी कर गुज़रने को तैयार। वो ढोंगी बाबाओं की पास जाता है जहाँ उसके समय, धन और मान-सम्मान सबकी हानि होती है। जाने वो यह क्यों भूल जाता है कि “होइहि सोइ जो राम रचि राखा”; अर्थात् ईश्वर की इच्छा से सबकुछ सम्पन्न होता है। लेकिन आज व्यक्ति समय से दौड़ लगा रहा है और उसे जो चीज़ उसे आकर्षित करे वह उसे पाना चाहता है। चाहे इसके लिए उसे कोई भी क़ीमत क्यों न चुकानी पड़े।

आपके ज्यादातर कार्य असफल हो रहे हैं तो यह करें
==
आप चाहते हैं की आपके द्वारा किये गए कार्य सफल हो लेकिन कार्य के प्रारम्भ होते ही उसमें विध्न आ जाते हैं और वह असफल हो जाते हैं इसके लिए आप यह करें: प्रातःकाल कच्चा सूत लेकर सूर्य के सामने मुंह करके खड़े हो जाएं। फिर सूर्य देव को नमस्कार करके 'ॐ हीं घ्रणि सूर्य आदित्य श्रीम' मंत्र बोलते हुए सूर्य देव को जल चढ़ाएं। जल में रोली, चावल, चीनी तथा लाल पुष्प डाल लें। इसके पश्चात कच्चे सूत को सूर्य देव की तरफ करते हुए गणेशजी का स्मरण करते हुए सात गाँठ लगाएं। इसके पश्चात इस सूत को किसी खोल में रखकर अपनी कमीज की जेब में रख लें, आपके बिगड़े कार्य बनाने लगेंगे।

बजरङग वशीकरण मन्त्र
===============
“ॐ वीर बजरङ्गी, राम लक्ष्मण के सङ्गी।
जहां-जहां जाए, फतह के डङ्के बजाय।
‘अमुक’ को मोह के, मेरे पास न लाए,

तो अञ्जनी का पूत न कहाय।
दुहाई राम-जानकी की।
दुहाई गुरु गोरक्षनाथ की। "

अमुक की जगह नाम लिखे ।

विधि- ४१ दिनों तक ११ माला उक्त मन्त्र का जप कर इसे सिद्ध कर ले। 'राम-नवमी' या 'हनुमान-जयन्ती' शुभ दिन है।

प्रयोग के समय दूध या दूध निर्मित पदार्थ पर ११ बार मन्त्र पढ़कर खिला या पिला देने से, वशीकरण होगा।

जय श्री हनुमान-यति (बीरबंक नाथ) जी को आदेश आदेश।
जय श्री शंभू-यति गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश आदेश।

सिद्ध वशीकरण मन्त्र

"बारा राखौ, बरैनी, मूँह म राखौं कालिका। चण्डी म राखौं मोहिनी, भुजा म राखौं जोहनी। आगू म राखौं सिलेमान, पाछे म राखौं जमादार। जाँघे म राखौं लोहा के झार, पिण्डरी म राखौं सोखन वीर। उल्टन काया, पुल्टन वीर, हाँक देत हनुमन्ता छुटे। राजा राम के परे दोहाई, हनुमान के पीड़ा चौकी। कीर करे बीट बिरा करे, मोहिनी-जोहिनी सातों बहिनी। मोह देबे जोह देबे, चलत म परिहारिन मोहों। मोहों बन के हाथी, बत्तीस मन्दिर के दरबार मोहों। हाँक परे भिरहा मोहिनी के जाय, चेत सम्हार के। सत गुरु साहेब।"

विधि- उक्त मन्त्र स्वयं सिद्ध है तथा हमारे द्वारा अनुभूत है। फिर भी शुभ समय में १०८ बार जपने से विशेष फलदायी होता है। नारियल, नींबू, अगर-बत्ती, सिन्दूर और गुड़ का भोग लगाकर १०८ बार मन्त्र जपे।

मन्त्र का प्रयोग कोर्ट-कचहरी, मुकदमा-विवाद, आपसी कलह, शत्रु-वशीकरण, नौकरी-इण्टरव्यू, उच्च अधीकारियों से सम्पर्क करते समय करे। उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए इस प्रकार जाँए कि मन्त्र की समाप्ति ठीक इच्छित व्यक्ति के सामने हो।

रुद्राक्ष शाबर मंत्र
===========
अकल सकल सुमेरु की छाया शिव शक्ति मिल वृक्ष लगाया ।

एक डाल अगम को गई - एक डाल उत्तर को गई ।

एक डाल पश्चिम को गई - एक डाल दक्षिण को गई ।

एक डाल आकाश को गई - एक डाल पाताल को गई ।

उसी पेड़ के फल लगा रुद्राक्ष का ।

एक मुखी रुद्राक्ष उकार को बरणे ।

दो मुखी रुद्राक्ष सूर्य चन्द्र को बरणे ।

तीन मुखी रुद्राक्ष तीन देवों को बरणे ।

चार मुखी रुद्राक्ष चार वेदों को बरणे ।

पांच मुखी रुद्राक्ष पांच पांडवों को बरणे ।

छः मुखी रुद्राक्ष छः दर्शनों (जति) को बरणे ।

सात मुखी रुद्राक्ष सात सायरों (सति) को बरणे ।

आठ मुखी रुद्राक्ष आठ कुली पर्वतों को बरणे ।

नौ मुखी रुद्राक्ष नौ कुली नाग को बरणे ।

दस मुखी रुद्राक्ष दस अवतारों को बरणे ।

ग्यारह मुखी रुद्राक्ष ग्यारह रुद्र शंकर को बरणे ।

बारह मुखी रुद्राक्ष बारह पंथों को बरणे ।

तेरह मुखी रुद्राक्ष तेरह रत्नों को बरणे ।

चौदह मुखी रुद्राक्ष चौदह विद्याओं को बरणे ।

पंद्रह मुखी रुद्राक्ष पंद्रह तिथियों को बरणे ।

सोलह मुखी रुद्राक्ष सोलह कलाओं को बरणे ।

सत्रह मुखी रुद्राक्ष सीता सतवंती को बरणे ।

अठारह मुखी रुद्राक्ष अठारह भार वनस्पति को बरणे ।

उन्नीस मुखी रुद्राक्ष शिव पार्वती गणेश को बरणे ।

बीस मुखी रुद्राक्ष विश्वासु मुनि साधु को बरणे ।

इक्कीस मुखी रुद्राक्ष एक अलख को बरणे ।

हाथ बांधे हतनापुर का राज पावे, कान के बांधे कनकापुर का राज पावे, कंठ गले के बांधे सात द्विप का राज पावे, मस्तक के बांधे कैलाशपुरी का राज पावे । नहीं जाने रुद्राक्ष जाप अड्ढत्तर गऊ का लागे पाप, बांधे रुद्राक्ष जाणे जाप जन्म जन्म का पाप समाप्त । रुद्राक्ष जाप समाप्त हुआ शिव ध्यान में दत्तात्रेय महाराज ने कहा । श्री नाथजी गुरुजी को आदेश आदेश आदेश ।

गर्भ धारण करने के लिए
===============

अगर आपको किसी कारणवश गर्भ धारण नहीं हो रहा हो तो मंगलवार के दिन कुम्हार के घर आएं और उसमें प्रार्थना कर मिट्टी के बर्तन वाला डोरा ले आएं। उसे किसी गिलास में जल भरकर डाल दें। कुछ समय पश्चात डोरे को निकाल लें और वह पानी पति-पत्नी दोनों पी लें। यह क्रिया केवल मंगलवार को ही करनी है अगर संभव हो तो उस दिन पति-पत्नी अवश्य ही रमण करें। गर्भ की स्थिति बनते ही उस डोरे को हनुमानजी के चरणों में रख दें।

अघोर साधनाएं जीवन की सबसे अद्भुत साधनाएं हैं

अघोरेश्वर महादेव की साधना उन लोगों को करनी चाहिए जो समस्त सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर शिव गण बनने की इच्छा रखते हैं.

इस साधना से आप को संसार से धीरे धीरे विरक्ति होनी शुरू हो जायेगी इसलिए विवाहित और विवाह सुख के अभिलाषी लोगों को यह साधना नहीं करनी चाहिए.

यह साधना अमावस्या से प्रारंभ होकर अगली अमावस्या तक की जाती है.

यह दिगंबर साधना है.

एकांत कमरे में साधना होगी.

स्त्री से संपर्क तो दूर की बात है बात भी नहीं करनी है.

भोजन कम से कम और खुद पकाकर खाना है.

यथा संभव मौन रहना है.

क्रोध, विवाद, प्रलाप, न करे.

गोबर के कंडे जलाकर उसकी राख बना लें.

स्नान करने के बाद बिना शरीर पोछे साधना कक्ष में प्रवेश करें.

अब राख को अपने पूरे शरीर में मल लें.

जमीन पर बैठकर मंत्र जाप करें.

माला या यन्त्र की आवश्यकता नहीं है.

जप की संख्या अपने क्षमता के अनुसार तय करें.

आँख बंद करके दोनों नेत्रों के बीच वाले स्थान पर ध्यान लगाने का प्रयास करते हुए जाप करें.

जाप के बाद भूमि पर सोयें.

उठने के बाद स्नान कर सकते हैं.

यदि एकांत उपलब्ध हो तो पूरे साधना काल में दिगंबर रहें. यदि यह संभव न हो तो काले रंग का वस्त्र पहनें.

साधना के दौरान तेज बुखार, भयानक दृश्य और आवाजें आ सकती हैं.

इसलिए कमजोर मन वाले साधक और बच्चे इस साधना को किसी हालत में न करें.

गुरु दीक्षा ले चुके साधक ही अपने गुरु से अनुमति लेकर इस साधन को करें.
जाप से पहले कम से कम १ माला गुरु मन्त्र का जाप अनिवार्य है.

आदल चले बादल चले जाय परे सीता के वारि ! सीता दिहिनी शाप ! जाय परा समुद्र के पार ! वाचा महूआ वाचे चार , हाके हनु ,वरावे भीम ! और न परे हमारे सीम ! इश्वर महादेव कि दुहाई ॐ नमः शिवाय !

उपाय और टोटके सुखी जीवन के लिए
****

भर लें अपने भण्डार गृह
****

जिस स्थान पर होली जलाई जाती रही हो, वहां पर होली जलने से एक दिन पहले की रात्री में एक मटकी में गाय का घी, तिल का तेल, गेहूं और ज्वार तथा एक ताम्बे का पैसा रखकर मटकी का मुंह बंद करके गाड़ आएं। रात्रि में जब होली जल जाए, तब दूसरे दिन सुबह उसे उखाड़ लाएं। फिर इन सब वस्तुओं को पोटली में बांधकर जिस वास्तु में रख दिया जाएगा, वह वास्तु व्यय करने पर भी उसमें निरंतर वृद्धि होती रहेगी, और आपके भंडार भरे हुए रहेंगे।

प्रतिष्ठान की बिक्री बढ़ाने के लिए
****

अगर आप चाहते हैं की आपके प्रतिष्ठान में बिक्री ज्यादा हो तो यह करें
आप अपने व्यापार में अधिक पैसा प्राप्त करना चाहते हैं और चाहते हैं की आपके व्यापार की बिक्री बढ़ जाए तो आप वट वृक्ष की लता को शनिवार के दिन जाकर निमंत्रण दे आएं। (वृक्ष की जड़ के पास एक पान, सुपारी और एक पैसा रख आएं) रविवार के दिन प्रातः काल जाकर उसकी एक जटा तोड़ लाएं, पीछे मुड़कर न देखें। उस जटा को घर लाकर गुग्गल की धूनी दें तथा 101 बार इस मंत्र का जप करें-ॐ नमो चण्ड अलसुर स्वाहा।

छोटे बच्चों को नजर लगने पर
****

अगर आप चाहते हैं की छोटे बच्चों को नजर न लगे इसके लिए हाथ में चुटकी भर रक्षा लेकर ब्रहस्पतिवार के दिन 'ॐ चैतन्य गोरखनाथ नमः' मंत्र का 108 बार जप करें। फिर इसे छोटी-सी पुडिया में डालकर काले रेशमी धागे से बच्चे के गले में बाँधने पर बुरी नजर नहीं लगती।

कन्या के विवाह में विलम्ब होने पर
****

अगर आपकी कन्या के विवाह में विलम्ब हो रहा हो या कन्या के लिए योग्य वर की तलाश पूरी नहीं हो रही हो तो किसी भी गुरूवार के दिन प्रातःकाल नहा धोकर बेसन के लड्डू स्वयं बनाएं। उनकी गिनती 109 होनी चाहिए। फिर पीले रंग की टोकरी में पीले रंग का कपड़ा बिछाकर उन लड्डूओं को उसमें रख दें तथा अपनी श्रद्धानुसार कुछ दक्षिणा रख दें। पास के किसी शिव मंदिर में जाकर विवाह हेतु प्रार्थना कर घर आ जाएं।

आपके ज्यादातर कार्य असफल हो रहे हैं तो यह करें
****

आप चाहते हैं की आपके द्वारा किये गए कार्य सफल हो लेकिन कार्य के प्रारम्भ होते ही उसमें विध्न आ जाते हैं और वह असफल हो जाते हैं इसके लिए आप यह करें: प्रातःकाल कच्चा सूत लेकर सूर्य के सामने मुंह करके खड़े हो जाएं। फिर सूर्य देव को नमस्कार करके 'ॐ हीं घ्रणि सूर्य आदित्य श्रीम' मंत्र बोलते हुए सूर्य देव को जल चढ़ाएं। जल में रोली, चावल, चीनी तथा लाल पुष्प डाल लें। इसके पश्चात कच्चे सूत को सूर्य देव की तरफ करते हुए गणेशजी का स्मरण करते हुए सात गाँठ लगाएं। इसके पश्चात इस सूत को किसी खोल में रखकर अपनी कमीज की जेब में रख लें, आपके बिगड़े कार्य बनाने लगेंगे।

गर्भ धारण करने के लिए
****

अगर आपको किसी कारणवश गर्भ धारण नहीं हो रहा हो तो मंगलवार के दिन कुम्हार के घर आएं और उसमें प्रार्थना कर मिट्टी के बर्तन वाला डोरा ले आएं। उसे किसी गिलास में जल भरकर डाल दें। कुछ समय पश्चात डोरे को निकाल लें और वह पानी पति-पत्नी दोनों पी लें। यह क्रिया केवल मंगलवार को ही करनी है अगर संभव हो तो उस दिन पति-पत्नी अवश्य ही रमण करें। गर्भ की स्थिति बनते ही उस डोरे को हनुमानजी के चरणों में रख दें।

अपने घर-गृहस्थी को बनाएं सुखी
****

अक्सर हम गृहस्थ जीवन में देखते हैं तो गृहस्थ का सामान टूट-फूट जाता है या सामान चोरी हो जाता है। जो भी आता है असमय ही ख़त्म हो जाता है। रसोई में बरकत नहीं रहती है तो ऐसी स्त्रियाँ भोजन बनाने के बाद शेष अग्नि को न बुझाएं और जब सब जलकर राख हो जाए तो राख को गोबर में मिलाकर रसोई को लीप दें। फर्श हो तो उस राख को पानी में घोलकर उसी पानी से फर्श डालें। यह क्रिया कई बार करें। घर-गृहस्थी का छोटा-मोटा सामान, गिलास, कटोरी, चम्मच आदि सदैव बने रहेंगे।

इच्छा के विरूद्ध कार्य करना पड़ रहा हो तो
****

अगर आपको किसी कारणवश कोइ कार्य अपनी इच्छा के विपरीत करना पड़ रहा हो तो आप कपूर और एक फूल वाली लौंग एक साथ जलाकर दो-तीन दिन में थोड़ी-थोड़ी खा लें। आपकी इच्छा के विपरीत कार्य होना बंद हो जाएगा।

दाम्पत्य जीवन से झगड़े दूर करें ऐसे
****

अगर आपका दाम्पत्य जीवन अशांत है तो आप रात्री में शय न करते समय पत्नी अपने पलंग पर देशी कपूर तथा पति के पलंग पर कामिया सिन्दूर रखें. प्रातः सूर्यदे के समय पति देशी कपूर को जला दें और पत्नी सिन्दूर को भवन में छिटका दें। इस टोटके से कुछ ही दिनों में कलह समाप्त हो जाती है।

भाग्योदय करने के लिए करें यह उपाय
****

अपने सोए भाग्य को जगाने के लिए आप प्रात सुबह उठकर जो भी स्वर चल रहा हो, वही हाथ देखकर तीन बार चूमें, तत्पश्चात वही पांव धरती पर रखें और वही कदम आगे बाधाएं। ऐसा नित्य-प्रतिदिन करने से निश्चित रूप से भाग्योदय होगा।

त्वचा रोग होने पर यह करें
****

त्वचा संबंधी रोग केतु के दुष्प्रभाव से बढ़ते हैं। यदि त्वचा संबंधी घाव ठीक न हो रहा हो तो सायंकाल मिट्टी के नए पात्र में पानी रखकर उसमें सोने की अंगूठी या एनी कोइ आभूषण दाल दें। कुछ देर बाद उसी पानी से घाव को धोने के बाद अंगूठी निकालकर रख लें तथा पाने किसी चौराहे पर फेंक आएं। ऐसा तीन दिन करें तो रोग शीघ्र ठीक हो जाएगा।

मंदी से छुटकारा पाएं ऐसे
****

अगर आपके व्यापार में मंदी आ गयी है या नौकरी में मंदी आ गयी है तो यह करें। किसी साफ़ शीशी में सरसों का तेल भरकर उस शीशी को किसी तालाब या बहती नदी के जल में डाल दें। शीघ्र ही मंदी का असर जाता रहेगा और आपके व्यापार में जान आ जाएगी।

भय को दूर करें ऐसे
****

अगर आपको बिना कारण भय रहता हो या सांप-बिच्छू या वन्य पशुओं का भय रहता हो तो यह करें : बांस की जड़ जलाकर उसे कान पर धारण करने से भय मिट जाता है। निर्गुन्डी की जड़ अथवा मोर पंख घर में रख देने से सर्प कभी भी घर में प्रवेश नहीं करता। रवि-

पुष्य योग में प्राप्त सफ़ेद चादर की जड़ लाकर दाईं भुजा पर बाँधने से वन्य पशुओं का भय नहीं रहता है साथ ही अग्नि भय से भी छुटकारा मिल जाता है। केवड़े की जड़ कान पर धारण करने से शत्रु भय मिट जाता है।

अगर आपके परिवार में कोई रोगग्रस्त हो तो यह करें
****

अगर स्वास्थ्य में सुधर न होता हो तो यह उपाय करें: एक देशी अखंडित पान, गुलाब का फूल और कुछ बताशे रोगी के ऊपर से 31 बार उतारें तथा चौराहे पर रख दें। इसके प्रभाव से रोगी की दशा में शीघ्रता से सुधार होगा।

पारिवारिक सुख-शांति के लिए
****

अगर आपके परिवार में अशांति रहती है और सुख-चैन का अभाव है तो प्रतिदिन प्रथम रोटी के चार भाग करें, जिसका एक गाय को, दूसरा काले कुत्ते को, तीसरा कौवे को तथा चौथा टुकड़ा किसी चौराहे पर रखवा दें तो इसके प्रभाव से समस्त दोष समाप्त होकर परिवार की शांति तथा सम्रद्धि बढ़ जाती है।

आप सबका कल्याण हो
जय श्री शंभू-यति गुरु गोरक्षनाथ जी को नमो आदेश आदेश।

कर्ज से मुक्ति पाने के लिए कुबेर गायत्री शाबर मंत्र
==================================

सत नमो आदेश गुरुजी को आदेश ॐ गुरुजी
ॐ सोहम आकाश डिब्बी पाताल काटी -
धरती का चूल्हा करूं आकाश को ड़ाया
नवनाथ सिद्ध होने बैठकर भंडार किया
चढ़े डिब्बे उतरे रिद्धि-सिद्धि
काली-पीली सिर जटा माई पार्वती का उपदेश
शिव मुख आवे शक्ति मुख जावे
शिव मुख जावे हाथ खड़क तूतन की माला
जाप जपे श्री सूर्या वाला
ऋद्धि पूरे हर घृत पुरे गणेश
अलील पुरे ब्रह्मा माया पूरे महाकाली
हीरा पूरे हिंगलाज नवखंड में जोत जगाई
ऋद्धि लावो भंडारी माई
ऋद्धि खुटे सदाशिव का जड़ाव टुटे
ऋद्धि खुटे माता सीता सतवंती का सत्य छुटे
ऋद्धि खूटे माता पार्वती का कंगन टूटे
ऋद्धि खुटे मान धन का मान टूटे
चंद्र सूर्य देव लाखी इतना कुबेर भंडार गायत्री जाप संपूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश आदेश।

संजोग से यदि मरा हुआ कछुआ मिले तो कछुआ का दांत सावधानी से निकाल ले कछुए के दांत को चांदी के ताबीज में डालकर पहने और यह मंत्र का 108 बार जाप करके 108 मंत्र की आहुति दें हवन सामग्री में कमलगट्टा होना चाहिए हवन की भभूत और कछुए का दांत चांदी के तावीज में डाल कर पहने और यह मंत्र का रोज 11 बार जपे आजमाया हुआ प्रयोग है निश्चित ही आप के कर्ज मुक्ति के मार्ग खुलेगे । श्री नाथजी गुरुजी को आदेश आदेश आदेश।

जय श्री शंभू-जति गुरु गोरक्षनाथ जी को नमो आदेश आदेश।
आप सबका कल्याण हो ।

असली प्राचीन सिद्ध शाबर विद्या कि शक्तियां । इन कि सहायता से आप क्या क्या कर सकते है ?

1. सबसे पहली मुख्य विषेशता, ये मंत्र खुद सिद्ध होते है इनके लिया साधक को कठिन अनुस्ठान करने कि आवश्यकता नहीं है। बस जो आसान सी विधियां दी गयी है वो करें और मंत्रों का परभाव खुद साक्षात्कार करें।

2. सिद्धि कर्म (देवता, पीर पैगम्बर, वीर, जिन्न आदि प्रकट करना) - अगर आप अत्यधिक जिज्ञासु साधक है और अपने देवी देवता, पीर पैगम्बर, वीर, जिन्न, भूत, परी आदि से साक्षात् होना चाहते है या उनसे अपना काम करवाना चाहते है। तो इन शाबर मन्त्रों से बढ़कर कोई दूसरा सहायक नहीं हो सकता।

3. शांति कर्म (तांत्रिक कर्म, काला जादू , या किया कराये कि काट) - अगर आपको लगता है कि आप पर कोई तांत्रिक कर्म, काला जादू , या किया कराये का प्रभाव है तो आपको किसी तांत्रिक या औघड़ बाबा के चकर में आने कि जरूरत नहीं है। सिद्ध शाबर मन्त्रों से आप अपना व् अपने परिवार के सुरक्षा चक्र बना सकते है जिस से वो सारा प्रभाव ख़तम हो जायेगा। इसके अलावा आप दूसरों पर से भी झाड़ा लगा कर उनको ठीक कर सकते है।

4. विद्वेषण कर्म (गलत प्रेम या बूरी लड़की या लड़के को दूर करना) - अगर आपको लगता है कि आपका लड़का या लड़की और भाई या बहन किसी गलत या किसी बूरी लड़की या लड़के के साथ प्रेम चल रहा है। तो बच्चे ऐसे मामलों में बड़ो कि नहीं सुनते बल्कि अगर बोलो और टोको तो वो या तो खुदखुशी या उनके साथ भाग जाते है और दोनों ही मामलों में घर कि इज़्ज़त और जान हानि पर बन जाती है। उनको प्यार से समझाओ और विद्वेषण सिद्ध मंत्र प्रयोग करें वो गलत लड़की या लड़का खुद आपके बच्चों का पीछा छोड देगा और कभी बात करना भी पसंद नहीं करे गा। आप भी खुश और बच्चे भी।

5. रोगनाशक कर्म (बीमारी या रोग दूर करना)- आप सिद्ध शाबर मन्त्रों से विभिन्न परकार कि रोग भी मिटा सकते है बिल्कुल जड़ से। लेकिन यहाँ कुछ मेहनत ज्यादा करनी पड़ती है।

6. वशीकरण प्रयोग (शोसन के खिलाफ और धर्म के लिए) - आजकल चारों और भ्रष्टाचार और काला बाजारी फ़ैल गयी है। और प्राइवेट जॉब्स में भी बॉस अपने एम्प्लाइज को सैलरी कम देते है और काम जयादा करवाते है। यहाँ पर हम अपने हक़ के लिए वशीकरण कर्म का प्रयोग कर करेंगे क्योंकि अपने हक़ के लिए लड़ना भी धर्म है। अगर प्रेम के लिए वशीकरण प्रयोग करो तो ध्यान रहे प्रेम निस्वार्थ और सच्चा होना चाहिए। वशीकरण का गलत प्रयोग करना मानवता का निरादर करना है और भगवान् उसको कभी माफ़ नहीं करते। इसीलिए इसको हमेशा मानवता कि भलाई के लिया ही प्रयोग करें।

7. स्तम्भन कर्म (शत्रु को रोकना)- अगर आपका कोई शत्रु आपको परेशान कर रहा है, तो उसको रोकने के लिए आप स्तम्भन प्रयोग कर सकते है।

8. उच्चाटन कर्म (शत्रु को भगाना)- किसी भी तरह कि कोई भी समश्या वो इस तरह के मन्त्रों से दूर कि जा सकती है।

जैसे कोई आपकी सम्पति और किसी भी वस्तु को जबर्दस्ती हथियाना चाहता है या आपको आपके घर में ही आकर परेशान करता है तो इस तरह के मन्त्रों से परेशान करने वालों को भगाया जा सकता है।

सावधान - सिद्ध शाबर मंत्र 100% कार्य करते है और कभी भी निस्फल नहीं होते इसीलिए अच्छी तरह और कई बार सोच समझ कर ही इनका प्रयोग करना चाहिए।

रोग निवारणार्थ औषधि खाने का मन्त्र
========================

आपको एक छोटा सा मंत्र दे रहे है, जिनको दवा का असर ठीक से नहीं होता वो इस मंत्र का जाप करके दवा ले तो दवा का असर पूरी तरह से होता है :

मंत्र :

‘ॐ नमो महा-विनायकाय अमृतं रक्ष रक्ष, मम फलसिद्धिं देहि, रूद्र-वचनेन स्वाहा’’

किसी भी रोग में औषधि को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर लें, तब सेवन करें। औषधि शीघ्र एवं पूर्ण लाभ करेगी। यह अनुभूत मंत्र है ।

जय श्री महा विनायक गणेश जी को नमो आदेश आदेश ।
जय श्री शंभू-यति गुरु गोरक्षनाथ जी को नमो आदेश आदेश ।

आसन का शाबर मंत्र :----
=================

सत नमो आदेश, गुरु जी को आदेश, ॐ गुरूजी,
आसन मार सिंहासन बैठू, बैठू-बैठू गुरु की छाया
पाँच महेश्वर आज्ञा करें तो सबद गुरां से पाया
स्थिर कर आसन स्थिर कर ध्यान
सत-सत श्री शंभू-यति गुरु गौरक्षनाथ जी बैठे गादी प्रवान
गादी ब्रह्मा गादी इन्द्र गादी बैठे गुरु गोबिन्द
आओ बाल-गोपाल सिद्धों अब तुम लगा पांव
तब तुम पूजो ब्रह्मा-ज्ञान
ब्रह्मा की कूँची महादेव का ताला
नरसिंग वीर भैरव रखवाला इति गादी आसन मंत्र सम्पूर्ण भया
श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश आदेश ।

किसी भी मंत्र का जाप आसन लगा कर ही किया जाता है, ये आसन मंत्र है किसी जाप के पहले इस मंत्र का जाप करें। किसी भी शुभ घड़ी मे 108 बार जाप करने ये सिद्ध हो जाता है ।

श्री शंभू-यति गुरु गौरक्षनाथ जी को नमो आदेश आदेश।

नजर उतारने के उपाय:-
****

१. बच्चे ने दूध पीना या खाना छोड़ दिया हो, तो रोटी या दूध को बच्चे पर से 'आठ' बार उतार के कुत्ते या गाय को खिला दें।

२. नमक, राई के दाने, पीली सरसों, मिर्च, पुरानी झाड़ू का एक टुकड़ा लेकर 'नजर' लगे व्यक्ति पर से 'आठ' बार उतार कर अग्नि में जला दें। 'नजर' लगी होगी, तो मिर्चों की धांस नहीं आयेगी।

३. जिस व्यक्ति पर शंका हो, उसे बुलाकर 'नजर' लगे व्यक्ति पर उससे हाथ फिरवाने से लाभ होता है।

४. पश्चिमी देशों में नजर लगने की आशंका के चलते 'टच वुड' कहकर लकड़ी के फर्नीचर को छू लेता है। ऐसी मान्यता है कि उसे नजर नहीं लगेगी।

५. गिरजाघर से पवित्र-जल लाकर पिलाने का भी चलन है।

६. इस्लाम धर्म के अनुसार 'नजर' वाले पर से 'अण्डा' या 'जानवर की कलेजी' उतार के 'बीच चौराहे' पर रख दें। दरगाह या कब्र से फूल और अगर-बत्ती की राख लाकर 'नजर' वाले के सिरहाने रख दें या खिला दें।

७. एक लोटे में पानी लेकर उसमें नमक, खड़ी लाल मिर्च डालकर आठ बार उतारे। फिर थाली में दो आकृतियाँ- एक काजल से, दूसरी कुमकुम से बनाए। लोटे का पानी थाली में डाल दें। एक लम्बी काली या लाल रङ्ग की बिन्दी लेकर उसे तेल में भिगोकर 'नजर' वाले पर उतार कर उसका एक कोना चिमटे या सँडसी से पकड़ कर नीचे से जला दें। उसे थाली के बीचो-बीच ऊपर रखें। गरम-गरम काला तेल पानी वाली थाली में गिरेगा। यदि नजर लगी होगी तो, छन-छन आवाज आएगी, अन्यथा नहीं।

८. एक नींबू लेकर आठ बार उतार कर काट कर फेंक दें।

९. चाकू से जमीन पे एक आकृति बनाए। फिर चाकू से 'नजर' वाले व्यक्ति पर से एक-एक कर आठ बार उतारता जाए और आठों बार जमीन पर बनी आकृति को काटता जाए।

१०. गो-मूत्र पानी में मिलाकर थोड़ा-थोड़ा पिलाए और उसके आस-पास पानी में मिलाकर छिड़क दें। यदि स्नान करना हो तो थोड़ा स्नान के पानी में भी डाल दें।

११. थोड़ी सी राई, नमक, आटा या चोकर और ३, ५ या ७ लाल सूखी मिर्च लेकर, जिसे 'नजर' लगी हो, उसके सिर पर सात बार घुमाकर आग में डाल दें। 'नजर'-दोष होने पर मिर्च जलने की गन्ध नहीं आती।

१२. पुराने कपड़े की सात चिन्दियाँ लेकर, सिर पर सात बार घुमाकर आग में जलाने से 'नजर' उतर जाती है।

१३. झाडू को चूल्हे / गैस की आग में जला कर, चूल्हे / गैस की तरफ पीठ कर के, बच्चे की माता इस जलती झाडू को 7 बार इस तरह स्पर्श कराए कि आग की तपन बच्चे को न लगे। तत्पश्चात् झाडू को अपनी टागों के बीच से निकाल कर बगैर देखे ही, चूल्हे की तरफ फेंक दें। कुछ समय तक झाडू को वहीं पड़ी रहने दें। बच्चे को लगी नजर दूर हो जायेगी।

१४. नमक की डली, काला कोयला, डंडी वाली 7 लाल मिर्च, राई के दाने तथा फिटकरी की डली को बच्चे या बड़े पर से 7 बार उबार कर, आग में डालने से सबकी नजर दूर हो जाती है।

१५. फिटकरी की डली को, 7 बार बच्चे/बड़े/पशु पर से 7 बार उबार कर आग में डालने से नजर तो दूर होती ही है, नजर लगाने वाले की धुंधली-सी शक्ल भी फिटकरी की डली पर आ जाती है।

१६. तेल की बत्ती जला कर, बच्चे/बड़े/पशु पर से 7 बार उबार कर दोहाई बोलते हुए दीवार पर चिपका दें। यदि नजर लगी होगी तो तेल की बत्ती भभक-भभक कर जलेगी। नजर न लगी होने पर शांत हो कर जलेगी।

आप सभी का कल्याण हो।

जय श्री शंभू-यति गुरु गौरक्षनाथ जी महाराज को नमो आदेश आदेश।

किसी भी प्रकार की बाधा को दूर करने का शाबर मंत्र
===================================
ॐ गुरूजी उल्टी खोपड़ी फुलकिया मसान।
बाँध दे काल भैरव दुर्गा माई की आन।
आधी खोपड़ी खाने दे, जाति का मरघटिया मसान।
सुवर को खाने वाला सेवड़ा मनसाराम।
कामरु देश का मनसाराम सेवड़ा,
इस घट पिण्ड से पीरो के सांया को,
कामणगारी के कामण को,
जिन्नात शैतान के सांये को।
नही हटाये तो शिव शंकर जी लाख लाख आन।
शब्द साँचा पिण्ड काँचा।
फुरो मंत्र गुरु गोरक्ष नाथ वाचा।
सतनाम आदेश गुरु का।

इस मंत्र को 108 बार किसी भी अमावशया या पुर्णिमा के दिन जाप करने से सिद्ध हो जाता है। 9 बार जाप करने से सारी बाधा दूर होती है। जाप से पहले गुरु मंत्र की एक माला और जिनके गुरु नहीं है वो ॐ नमो शिवाय की एक माला जाप करके मंत्र को सिद्ध करें। अचूक और पूर्ण लाभकारी है।
जय शंभू-जति गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज को नमो आदेश आदेश।

आइये जाने मनोकामना पूर्ति के अचूक गुप्त उपाय(टोने-टोटके)—-

हर मनुष्य की कुछ मनोकामनाएं होती है। कुछ लोग इन मनोकामनाओं को बता देते हैं तो कुछ नहीं बताते। चाहते सभी हैं कि किसी भी तरह उनकी मनोकामना पूरी हो जाए। लेकिन ऐसा हो नहीं पाता। यदि आप चाहते हैं कि आपकी सोची हर मुराद पूरी हो जाए तो नीचे लिखे प्रयोग करें। इन टोटकों को करने से आपकी हर मनोकामना पूरी हो जाएगी।

उपाय—-

1. तुलसी के पौधे को प्रतिदिन जल चढ़ाएं तथा गाय के घी का दीपक लगाएं।
2. रविवार को पुष्य नक्षत्र में श्वेत आक की जड़ लाकर उससे श्रीगणेश की प्रतिमा बनाएं फिर उन्हें खीर का भोग लगाएं। लाल कनेर के फूल तथा चंदन आदि के उनकी पूजा करें। तत्पश्चात गणेशजी के बीज मंत्र (ऊँ गं) के अंत में नम: शब्द जोड़कर 108 बार जप करें।
3. सुबह गौरी-शंकर रुद्राक्ष शिवजी के मंदिर में चढ़ाएं।
4. सुबह बेल पत्र (बिल्ब) पर सफेद चंदन की बिंदी लगाकर मनोरथ बोलकर शिवलिंग पर अर्पित करें।
5. बड़ के पत्ते पर मनोकामना लिखकर बहते जल में प्रवाहित करने से भी मनोरथ पूर्ति होती है। मनोकामना किसी भी भाषा में लिख सकते हैं।
6. नए सूती लाल कपड़े में जटावाला नारियल बांधकर बहते जल में प्रवाहित करने से भी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं।

इन प्रयोगों को करने से आपकी सभी मनोकामनाएं शीघ्र ही पूरी हो जाएंगी।
इन उपायों से आएगी जीवन में खुशहाली —

सभी चाहते हैं कि उसके जीवन में खुशहाली रहे और सुख-शांति बनी रहे पर हर व्यक्ति के साथ ऐसा नहीं होता। जीवन में सुख और शांति का बना रहना काफी मुश्किल होता है। ऐसे समय में उसे अपना जीवन नरक लगने लगता है। यदि आपके साथ भी यही समस्या है तो आप नीचे लिखे साधारण उपायों को अपनाकर अपने जीवन को खुशहाल बना सकते हैं। यह उपाय इस प्रकार हैं-

1. सुबह घर से काम के लिए निकलने से पहले नियमित रूप से गाय को रोटी दें।
2. एक पात्र में जल लेकर उसमें कुंकुम डालकर बरगद के वृक्ष पर नियमित रूप से चढ़ाएं।
3. सुबह घर से निकलने से पहले घर के सभी सदस्य अपने माथे पर चन्दन तिलक लगाएं।
4. मछलियों की आटे की गोली बनाकर खिलाएं।
5. चींटियों को खोपरे व शकर का बूरा मिलाकर खिलाएं।
6. शुद्ध कस्तूरी को चमकीले पीले कपड़े में लपेटकर अपनी तिजोरी में रखें।

इन उपायों को पूर्ण श्रद्धा के साथ करने से जीवन में समृद्धी व खुशहाली आने लगती है।

गुरु जी आपकी मनोकामना पूर्ण करें, आपका कल्याण हो

जय श्री शंभू-यति गुरु गोरक्षनाथ जी को नमो आदेश आदेश।

उपाय और टोटके सुखी जीवन के लिए
****

अपनाएं सुखी रहने के कुछ नुस्खे
======================

1. ब्रहस्पतिवार या मंगलवार को सात गाँठ हल्दी तथा थोड़ा-सा गुड इसके साथ पीतल का एक टुकड़ा इन सबको मिलाकर पोटली में बांधें तथा ससुराल की दिशा में फैंक दें तो वहां हर प्रकार से शांति व सुख रहता है।
2. कन्या अपनी ससुराल में रहते हुए यह करें। मेहँदी तथा साबुत उरद जिस दिशा में वधु का घर हो, उसी दिशा में फैंकने से वर-वधु में

प्रेम बढ़ता है।

3. किसी विशेष कार्य के लिए घर के निकलते समय एक साबुत नीबू लेकर गाय के गोबर में दबा दें तथा उसके ऊपर थोड़ा-सा कामिया सिन्दूर छिड़क दें तथा कार्य बोलकर चले जाएं तो कार्य निश्चित ही बन जाता है।

4. सावन के महीने में जब पहली बरसात हो तो बहते पानी में विवाह करने से दुर्भाग्य दूर हो जाता है।

अविवाहित व अधिक उम्र की कन्या के विवाह के लिए
======================================

अगर आपकी लडकी अविवाहित है या उसकी उम्र बहुत ज्यादा हो चुकी है इसके कारण विवाह होने में रूकावटें आ रही हो तो इसके लिए एक उपाय है: देवोत्थान एकादशी कच और देवयानी की मिट्टी की मूरतें बनाकर उन मूर्तियों में हल्दी, चावल, आते का घोल लगाकर उनकी पूजा करके उन्हें एक लकड़ी के फट्टे से ढक लेते हैं. फिर उस फट्टे पर कुमारी कन्या को बिठा दिया जाता है तो उसका विवाह हो जाता है।

राई से करें दरिद्रता निवारण
===================

पैसों का कोइ जुगाड़ न बन रहा हो तथा घर में दरिद्रता का वाश हो तो यह करें: एक पानी भरे घड़े में राई के पत्ते डालकर इस जल को अभिमंत्रित करके जिस भी किसी व्यक्ति को स्नान कराया जाएगा उसकी दरिद्रता रोग नष्ट हो जाते हैं।

स्वप्न में भविष्य जानें इस तरह भी
======================

अगर आप स्वप्न में भविष्य की बात मालूम करना चाहते हैं तो जंगल में जाकर जिस वृक्ष पर अमर बेल हो, उसकी सात परिक्रमा कर अमर बेल्युक्त एक लकड़ी को तोड़ लाएं। फिर उस लकड़ी को धुप देकर जला दें तथा लता को सिरहाने रखकर विचार करते हुए सो जाएं तो स्वप्न में भविष्य की बात मालूम हो जाती है।

पांवों को जगाने का टोटका
===================

बहुधा देखा गया है कि प्राणी कहीं देर तक बैठा हो तो हाथ-पैर सुन्न हो जाते हैं। जो अंग सुन्न हो गया हो, उस पर उंगली से 27 का अंक लिख दीजिये, अंग ठीक हो जाएगा।

मृत्यु की आशंका से बचने के उपाय
========================

1. काले तिल और जौ का आटा तेल में गूंथकर एक मोटी रोटी बनाएं और उसे अच्छी तरह सेंकें। गुड को तेल में मिश्रित करके जिस व्यक्ति की मरने की आशंका हो, उसके सिर पर से 7 बार उतार कर मंगलवार या शनिवार को भैंस को खिला दें।

2. गुड के गुलगुले सवाएं लेकर 7 बार उतार कर मंगलवार या शनिवार व इतवार को चील-कौए को डाल दें, रोगी को तुरंत राहत मिलेगी।

3. महामृत्युंजय मंत्र का जप करें। द्रोव, शहद और तिल मिश्रित कर शिवजी को अर्पित करें। 'ॐ नमः शिवाय' षडाक्षर मंत्र का जप भी करें, लाभ होगा।

लक्ष्मी प्राप्ति के टोटके
================

श्रावण के महीने में 108 बिल्व पत्रों पर चन्दन से नमः शिवाय लिखकर इसी मंत्र का जप करते हुए शिवजी को अर्पित करें। 31 दिन तक यह प्रयोग करें, घर में सुख-शांति एवं सम्रद्धि आएगी, रोग, बाधा, मुकदमा आदि में लाभ एवं व्यापार में प्रगति होगी व नया रोजगार मिलेगा। यह एक अचूक प्रयोग है। भगवान् को भोग लगाई हुई थाली अंतिम आदमी के भोजन करने तक ठाकुरजी के सामने रखी रहे तो रसोई बीच में ख़त्म नहीं होती है।

बालक की दीर्घायु के लिये
=================

1. बालक को जन्म के नाम से मत पुकारें।

2. पांच वर्ष तक बालक को कपडे मांगकर ही पहनाएं।

3. 3 या 5 वर्ष तक सिर के बाल न कटाएं।

4. उसके जन्मदिन पर बालकों को दूध पिलाएं।
5. बच्चे को किसी की गोद में दे दें और यह कहकर प्रचार करें कि यह अमुक व्यक्ति का लड़का है।

घर में सुख-शांति के लिये
=================
1. मंगलवार को चना और गुड बंदरों को खिलाएं।
2. आठ वर्ष तक के बच्चों को मीठी गोलियां बाँटें।
3. शनिवार को गरीब व भिखारियों को चना और गुड दें अथवा भोजन कराएं।
4. मंगलवार व शनिवार को घर में सुन्दरकाण्ड का पाठ करें या कराएं।

ग्रहों के देवता
=========
1. सूर्य के देवता विष्णु, चन्द्र के देवता शिव, बुध की देवी दुर्गा, ब्रहस्पति के देवता ब्रह्मा, शुक्र की देवी लक्ष्मी, शनि के देवता शिव, राहु के देवता सर्प और केतु के देवता गणेश। जब भी इन ग्रहों का प्रकोप हो तो इन देवताओं की उपासना करनी चाहिए।
2. मनोकामना की पूर्ती हेतु होली के दिन से शुरू करके प्रतिदिन हनुमान जी को पांच पुष्प चढाएं, मनोकामना शीघ्र पूर्ण होगी।
3. होली की प्रातः बेलपत्र पर सफ़ेद चन्दन की बिंदी लगाकर अपनी मनोकामना बोलते हुए शिवलिंग पर सच्चे मन से अर्पित करें। बाद में सोमवार को किसी मन्दिर में भोलेनाथ को पंचमेवा की खीर अवश्य चढाएं, मनोकामना पूरी होगी।

दुर्घटना से बचाव के लिये
=================
होलिका दहन से पूर्व पांच काली गुंजा लेकर होली की पांच परिक्रमा लगाकर अंत में होलिका की ओर पीठ करके पाँचों गुन्जाओं को सिर के ऊपर से पांच बार उतारकर सिर के ऊपर से होली में फेंक दें।
होली के दिन प्रातः उठते ही किसी ऐसे व्यक्ति से कोई वास्तु न लें, जिससे आप द्वेष रखते हों। सिर ढक कर रखें। किसी को भी अपना पहना वस्त्र या रूमाल नहीं दें। इसके अतिरिक्त इस दिन शत्रु या विरोधी से पान, इलायची, लौंग आदि न लें। ये सारे उपाय सावधानी पूर्वक करें, दुर्घटना से बचाव होगा।

महाकाल भैरव महा मंत्र
==================
साधक मित्रो मैं आज आपको एक ऐसा मन्त्र दे रहा हूँ ..जिसके सिद्ध करने के बाद असफल कुछ भी नहीं रहता ..साधक मित्रो ये एक ऐसा मंत्र है इसे सिद्ध करने के बाद कुछ भी नहीं शेष रहता ....बस आवशकता है तो कठिन अभ्यास और एकाग्रता और दृढ़ इच्छाशक्ति के साधना की ....इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए आप का दैनिक व्यवहार सात्विक न किसी को गलत बोलना न गलत सुन्ना .और विषय भोग का त्याग ..कुछ ही दिनों में आपको पता चल जायेगा क्या परिवर्तन हो रहा है ...! ये सर्व कार्य सिद्धि मंत्र है ..(ये देहात भाषा में साबर मंत्र है इसके व्याकरण को बदलने का प्रयास न करे) ये मूल भाषा में ही मंत्र है ..!

महाकाल भैरव अमोघ मंत्र माला
====================
ॐ गुरूजी काला भैरू कपिला केश ,काना मदरा भगवा भेस मार मार काली पुत्र बरह कोस की मार भूता हाथ कलेजी खुहां गेडिया जहाँ जाऊं भेरुं साथ ,बारह कोस की सिद्धि ल्यावो, चौबीस कोस की सिद्धि ल्यावो सूती होय तो जगाय ल्यावो बैठा होय तो उंय ल्यावो अनंत केसर की भारी ल्यावो गौरा पारवती की बिछिया ल्यावो गेल्यां किरस्तान मोह कुवे की पनिहारी मोह बैठा मनिया मोह घर की बैठी बनियानी मोह ,राजा कीरजवाड मोह ,महिला बैठी रानी मोह, डाकिनी को शाकिनी को भूतनी को पलितनी को ओपरी को पराई को, लाग कूं लापत कूं ,धूम कू, धक्का कूं, पलिया कूं, चौड कूं चौगट कूं, काचा कुण, कालवा कूं भूत कूं पालित कूं जिन कूं, राक्षस कूं ,बैरियो से बरी करदे ,नजरा जड़ दे ताला ..इत्ता भैरव नहीं करे तो ..पिता महादेव की जाता तोड़ तागड़ी करे माता पार्वती का चीर फाड़ लंगोट करे ..चल डाकिनी शाकिनी ..चौडूं मैला बकरा देस्युं मद की धार भरी सभा में द्यूं आने में कहाँ लगाईं बार ,खप्पर में खाय मसान में लोटे ऐसे काल भेरू की कुन पूजा मेंटे राजा मेंटे राज से जाय प्रजा मेंटे दूध पूत से जाये जोगी मेंटे ध्यान से जाये ..शब्द साँचा ब्रम्ह वाचा चलो मन्त्र इश्वरो वाचा ...!
विधि :- इस मन्त्र की साधना शुरू करने से पहले इकत्तीस दिन पहले ब्रम्ह चर्य का पालन और सात्विकता बरते फिर अनुष्टान का प्रारंभ

करे ..इस साधना को घर में न करे ..ये साधना रात्रि कालीन साधना है ..इसेकृष्ण पक्ष के शनिवार से आरंभ करनी है ..एक त्रिकोनी काला पत्थर ले कर उसे स्वच्छ पानी से धोकर उस पर सिन्दूर और तील के तेल से लेपन कर ले ..पश्चात् पान का बीड़ा, लेवे, सात लॉन्ग का जोड़ा धर. लोबान धुप और सरसों के तेल का दिया जल लेवे चमेली के फूल रख लेवे पूजा के समय ...फिर एकश्रीफल की बलि देकर ...गुरुपूजन करके गणेश पूजन कर .बाबा महाकाल यानि (महादेव से मंत्र सिद्धि के लिए आशीर्वाद मांगे) और अनुष्ठान आरम्भ करे ..इकतालीस दिनों तक नित्य इकतालीस पाठ इस मंत्र की करे .....हर रोज जप समाप्ति पर एक विशेष सामग्री से हवंन करले ये हवंन रोज मन्त्र समाप्ति के बाद करना है . .(सामग्री है कपूर केशर लवंग)
प्रथम दिन और अंतिम दिन भोग के लिए ..उड़द के पकोड़े और बेसन के लड्डू भोग में रख लेवे ..दूध और थोडा सा गुड भी रख लेवे ..इनका प्रशाद गरीबो में बाट देवे ....सातवे दिन से ही आपको अनुभव होने लगेगा की आप के सामने कोई खड़ा है .....भैरवजी का रूप डरावना है इसलिए सावधान ..कम्जोर दिल वाले इस साधना को न करे ..अंतिम दिन भैरवजी प्रगट हो जायेंगे ...उनसे फिर आप मनचाहा .वर मांगले

पितृ दोष के साधारण उपाए

हमारे जीवन में हर चीज़ का बहुत महत्व होता है ! इसी कर्म में आते है ! हमारे पितृ , पितरो को देवता तुल्य माना गया है ! हमारे पूर्वज ही हमारे पितृ होते है ! हमारे पूर्वजों कि आत्माओ में कुछ ऐसी, आत्माये होती ही, जिनको किसी न किसी वजह से शांति नहीं मिल पाती ! मृत्यु के बाद भी , उनका स्नेह अपने परिवार के साथ जुड़ा रहता है ! और जब हम, उनकी आत्मा कि शांति के लिए कोई उपाए नहीं करते तो ! वो आत्माये हमको वो कार्य याद दिलाने के लिए ! मुश्किलें उत्पन्न करती रहती है ! जिनमे से मुख्य है !

१. शारीरिक कोई परेशानी न होते हुए भी , संतान का न होना !
२. बार-बार गर्भ का गिर जाना ! या सन्तान उत्पन करने में परेशानी !
३. हर काम में मुश्किलों का सामना करना !
४. घर में हर वक्त, कलह का होते रहना !
५. किसी कन्या या लड़के कि शादी में बार-बार अड़चन आना !
६. बुरे स्वप्न जादा आना !
७. समाज में मान-सम्मान कि कमी !

वैसे तो और भी परेशानी हो सकती है ! मगर ये मुख्य रूप से देखने को मिलती है ! आज कल बहुत ज्यादा लोग पितृ दोष से पीड़ित मिलते है ! क्योंकि आज के बदलते, माहौल कि वजह से हम अपने बड़ों का आदर-सम्मान करना भूल है ! यदि आपको भी इनमें से किसी परेशानी का सामना बार-बार करना पड़ता है तो किसी विद्वान से, पितृ दोष के बारे में दिखावा लेना चाहिए ! यदि आपको इनमें से कोई परेशानी है ! तो आप यहाँ दिए गए, उपाए भी कर सकते है ! ये उपाए बहुत ही सस्ते और सरल है ! लेकिन इनका प्रभाव बहुत होता है ! बस आपको श्रद्धा और नियम के साथ ये उपाए करने है !

१. अपने बढ़ो का आदर-सम्मान करना सीखो !
२. कभी किसी का दिल न दुखाओ !
३. किसी ओरत को गलत नज़र से न देखो !
४. घर कि दक्षिण दीवार पर , अपने पूर्वजों कि तस्वीर लगा कर ! उनको हर रोज़ प्रणाम करो !
५.अपने स्वर्गीय परिजनों की निर्वाण तिथि पर जरूरतमंदों अथवा गुणी ब्राह्मणों को भोजन कराए। भोजन में मृतात्मा की कम से कम एक पसंद की वस्तु अवश्य बनाएं।
६. गर्मी में पानी का नल लगवाये ! राहगीरों को शीतल जल पिलाने से भी पितृदोष से छुटकारा मिलता है।
७. कुंडली में पितृदोष होने से किसी गरीब कन्या का विवाह या उसकी बीमारी में सहायता करने पर भी लाभ मिलता है।
८. प्रतिदिन इष्ट देवता व कुल देवता की पूजा करने से भी पितृ दोष का शमन होता है।
९. पीपल के वृक्ष पर दोपहर में जल, पुष्प, अक्षत, दूध, गंगाजल, काले तिल चढ़ाएं और स्वर्गीय परिजनों का स्मरण कर उनसे आशीर्वादले !
१०. हर अमावस्या को किसी बबूल के पेड़ पर . श्याम के वक़्त रोटी पर कुछ मीठा रख कर, पेड़ पर रोटी रख आयें !

नोट- अपने बड़ो का आदर- सम्मान करने से ही, जीवन कि बह्त सी मुश्किलें आसन हो जाती है ! इसलिए सदा उनका सम्मान करना चाहिए !

आपका कल्याण हो
जय श्री शंभू-यति गुरु गौरक्षनाथ जी को नमो आदेश आदेश।

पितरों की कृपा पाने के लिए के लिए शाबर मंत्र

अपने पितरों की कृपा पाने के लिए अक्षय तृतीया के दिन यह प्रयोग करें सभी रुके काम बनेंगे घर में यदि कोई बीमारी हो बह्त सालों से नहीं पीछा छोड़ रही हो तो यह प्रयोग करने से कैसे निजात मिलती है।

अपने पूर्वजो के नाम सप्त अनाज आटे के पिण्ड बनाकर उतने की घी ज्योत लगाये, पूजन करे, मिटटी के मटके में गंगा जल पंचामृत सन्मुख रखे।

इस मन्त्र का १५१ बार जप करे और शंख द्वारा पिण्डो को ५-५ बार जल चढ़ाये। उन्हें खीर, हलवा, पुरी इत्यादी पंच पकवान का भोग लगाये, यजमान या साधू को भोग प्रसाद देवे, वस्त्र दान करे, पितृ घर, मकान को छोड़कर मुक्ति को जायेंगे तथा पितरों की कृपा दृष्टि सदैव अपने पर बनी रहेगी।

मन्त्र -
सत नमो आदेश | गुरूजी को आदेश | ॐ गुरूजी
ॐ सोंह का सकल पसारा, अक्षय योगी सबसे न्यारा
सद्रांला तोड़ चौदह चौकी यम की तोड़ हंसा ल्याऊ
मोड़ हंसा तो ला कहा धरे अलष पुरुष की सीम,
हंस तो निर्भय भया काल गया सिर फोड़
निराकार के जोत मे रती न खण्डी-खण्डी हो,
कौन कौन साधू भया ब्रम्हा-विष्णु-महेश,
वे साधू ऐसे भये यम ने पकडे केश,
मोक्ष गायत्री जाप सम्पूर्ण भया, श्री माँ कामाख्या आदेश।
श्री नाथजी गुरुजी को आदेश आदेश।
निरशुंन्य से आया बाबा शुंन्य शुंन्य मेरा काम..।
अलख निरंजन मेरा धाम
श्री नाथजी गुरुजी को आदेश आदेश आदेश।

जय श्री शंभू-यति गुरु गौरक्षनाथ जी को नमो आदेश आदेश।

आपका कल्याण हो और आपकी मनोकामना पूर्ण हो॥

पति पत्नी के आपसी रिश्ते कड़वाहट में बदल जाते है !

कई बार पुरुष पराई स्त्री के चंगुल में फंस जाते है और अपनी पत्नी बच्चो तक को भूल जाते है ! इसी प्रकार स्त्रियाँ भी अपने पति को भूल पर-पुरुष के जाल में फंस जाती है ! केवल पति पत्नी ही नहीं पिता पुत्र के रिश्ते में भी विद्वेषण आदि तांत्रिक प्रयोगों द्वारा कडवाहट पैदा हो जाती है ! ऐसे में वशीकरण मंत्र ही इस कडवाहट को खत्म करने का सबसे सरल उपाएँ है ! प्रस्तुत मंत्र द्वारा आप अपनी इस प्रकार की सभी समस्याओं का निवारण कर सकते है ! इतना ही नहीं इस मंत्र द्वारा आप अपने मालिक का वशीकरण कर सकते है और नौकर का भी ! इसके अलावा प्रेमी प्रेमिका और सगे सम्बन्धियों का वशीकरण कर उनसे इच्छित कार्य करवाया जा सकता है ! हम यहाँ वशीकरण से सम्बंधित एक सरल प्रयोग दे रहे है ताकि आपको यह ना लगे कि हम जानबूझकर कठिन प्रयोग देते है जिसका आम आदमी प्रयोग भी ना कर पायें !

|| मंत्र ||

सत नमो आदेश ! गुरूजी को आदेश ! ॐ गुरूजी !
ॐ कौली आई मात की लीजे दो कर जोड़
आगे पांच महेश्वर पीछे देवी देवता तैतीस कोटि
करे कौली मुखे बाला ह्रदय जपो तपो श्री सुंदरी बाला
ॐ कौली आवे कौली जावे कौली गत गंगा में समावे
सगुरा होके कौली चेते इकोत्तर सौ पुरुषा ले उतरे पार,
नगुरा होके कौली चेते गत गंगा के भार
आई लेजा बरसे धर्ती निपजे आकाश
सांधा पार जुठी आद शक्ति महामाई !
श्री नाथजी गुरूजी को आदेश ! आदेश ! आदेश।

विधि : ग्रहण काल में १०८ (108 एक माला) बार जप करे! लाल मूँगे या रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करें। ऐसा करने पर मंत्र सिद्ध हो जायेगा !

प्रयोग विधि : इस मंत्र को २१ बार पढ़कर किसी भी वस्तु को अभिमंत्रित करे और इच्छित व्यक्ति को खिला दे ! आपका कार्य सिद्ध हो जायेगा।

जय श्री बाला सुंदरी माई को नमो आदेश आदेश।
जय श्री शंभू-यति गुरु गोरक्षनाथ जी को नमो आदेश आदेश।

आप सबका कल्याण हो 🙌🙏😌

श्री नवग्रहो का मंत्र

समस्त जीव-जगत् पर सौर-मंडल के नव ग्रह का प्रभाव प्रतिक्षण पड़ता रहता है | मानव के जीवन में जो भी परिस्थितियां और घटनाओं आती है, उनके मूल में नव ग्रहों की स्थिति होती है | खगोल-विज्ञान के मतानुसार उन सभी ग्रहों की किरणें व्यक्ति को प्रभावित करती है | पौराणिक और ज्योतिषीय-मान्यता के अनुसार ग्रह वस्तुतः दैवी-शक्तियों से सम्पन्न है | अतः उनके भौतिक रूप से सामञ्जस्य के लिये रत्न-धारण और दैविक-रूप से अनुकूलन के लिये मंत्र जाप करना चाहिये | यों नव-ग्रहों का पूजन-विधान शास्त्रीय रूप से बहुत विस्तार से वर्णित है, पर वह सामान्य-जन के लिए सहज साध्य नहीं है | अतः यहाँ मात्र श्रद्धा को अवलम्ब बना कर, कुछ ऐसे सरल विधान दिये जा रहे है, ऐसे मंत्र लिखे जा रहे है, जिनके नियमित-जप से बहुत लाभ होता है | लाखों आस्थावान् आज भी इन मंत्रो के जप द्वारा अपने ग्रहों की कृपा प्राप्त कर रहें है |

श्री सूर्य देवता का मंत्र

शारीरिक श्रौज, तेज, यश, कान्ति, विद्या, सम्पति-वैभव, सौभाग्य, वाक्-सिद्धि तथा नेत्रों की ज्योति बढाने में सूर्यदेवता की कृपा परम सहायक होती है | यही नही, भौतिक-जीवन की समस्त समृद्धि -- अन्न, धन, पशु, कृषि, पुत्र, पत्नी, पुरजन-परिजन आद से सम्पन्न रखने मे भी भगवान भास्कर की कृपा का विषेश महत्व है | यदि कोई व्यक्ति नित्य प्रातःकाल भगवान भास्कर को अर्ध्य देकर ईस मंत्रकी ऐक माला जपता रहे, तो उसकी दैनिक-चर्या बहुत ही आनन्दप्रद, निरापद और समृद्धिकारी रहेगी | कुल जप 10000 होना चाहिए |
मंत्र
ॐ ह्रीं घृणिः सूर्यआदित्य श्रीं
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः
ॐ नमः भवे भास्कराय अस्माकं (....नाम...) सर्व ग्रहणं पीडा नाशनं कुरू करू स्वाहा |

श्री चन्द्रदेव का मंत्र

जिस व्यक्ति की कुंडली में चन्द्रदेव की स्थिति कष्टप्रद हो, उसे इस मंत्र का जप (28 हजार) करना चाहिये
सों सोमाय नमः
ॐ श्रां श्रीं श्रूँ श्रौं सः चन्द्राय नमः ।

श्री मंगल मंत्र

मंगल-ग्रह-जनित पीड़ा से त्राण पाने के लिए मंगल का मंत्र (18000) जपने से कष्ट दूर हो जाता है ।
मंत्र
ॐ हां हं सः खं खः
ॐ क्रां क्रीं क्रूँ सः भोमाय नमः ।

श्री बुध मंत्र

बौद्धिक शक्ति के संतुल्न और सम्बर्द्धन में बुघ ग्रह का महत्वपूर्ण योग रहता है । उनकी कृपा पाने के लिए मंत्र का 18000 जाप लाभप्रद होता है ।
मंत्र
ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः ।

श्री बृहस्पति मंत्र

संतान-सुख, ज्ञान, प्रतिष्ठा के लिए गुरूदेव की कृपा ईस मंत्र द्वारा 36000 जाप कर अर्जित की जा सकती है ।
ॐ बृं बृहस्पतये नमः
ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरूवे नमः ।

श्री शुक्र मंत्र

कला, शिल्प-सौन्दर्य, बौद्धिक-समृद्धि, प्रभाव, ज्ञान, राजनीति, समाज-क्षेत्र और मान-प्रतिष्ठा -- यह सभी भौतिक-विधान शुक्र देवता की कृपा से 20000 जाप करके पाया जा सकता है ।
ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः ।
ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ।

श्री शनि मंत्र

शनि देवता का प्रकोप विश्व-विदित है । सामान्य देवता ही नही, बल्कि इन्द्रराज भी उनसे भयभीत रहते है । यदि शनिदेव कृपालु हो जाये तो विश्व की समस्त सुख-सम्पदा भक्त को प्रदान कर सकते है । यद्दपि ऐसा कम ही होता है, तो भी 10000 मंत्र जप के द्वारा उनकी प्रतिकुलता शान्त हो जाती है ।
ॐ शं शनैश्चराय नमः
ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।

राहू मंत्र

21000 जाप शुक्रवार के दिन विरोधी-गति को शान्त करने हेतु
ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः राहवे नमः ।

केतु मंत्र

20000 जाप शुक्रवार के दिन विरोधी-गति को शान्त करने हेतु
ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः

उपाय-टोटके ग्रहस्थ जीवन के लिए
======================

अपने घर-गृहस्थी को बनाएं सुखी

अक्सर हम गृहस्थ जीवन में देखते हैं तो गृहस्थ का सामान टूट-फूट जाता है या सामान चोरी हो जाता है। जो भी आता है असमय ही ख़त्म हो जाता है। रसोई में बरकत नहीं रहती है तो ऐसी स्त्रियाँ भोजन बनाने के बाद शेष अग्नि को न बुझाएं और जब सब जलकर राख हो जाए तो राख को गोबर में मिलाकर रसोई को लीप दें। फर्श हो तो उस राख को पानी में घोलकर उसी पानी से फर्श डालें। यह क्रिया कई बार करें। घर-गृहस्थी का छोटा-मोटा सामान, गिलास, कटोरी, चम्मच आदि सदैव बने रहेंगे।

इच्छा के विरूद्ध कार्य करना पड़ रहा हो तो

अगर आपको किसी कारणवश कोइ कार्य अपनी इच्छा के विपरीत करना पड़ रहा हो तो आप कपूर और एक फूल वाली लौंग एक साथ जलाकर दो-तीन दिन में थोड़ी-थोड़ी खा लें। आपकी इच्छा के विपरीत कार्य होना बंद हो जाएगा।

दाम्पत्य जीवन से झगड़े दूर करें ऐसे

अगर आपका दाम्पत्य जीवन अशांत है तो आप रात्री में शय न करते समय पत्नी अपने पलंग पर देशी कपूर तथा पति के पलंग पर कामिया सिन्दूर रखें. प्रातः सूर्यदे के समय पति देशी कपूर को जला दें और पत्नी सिन्दूर को भवन में छिटका दें। इस टोटके से कुछ ही दिनों में कलह समाप्त हो जाती है।

भाग्योदय करने के लिए करें यह उपाय

अपने सोए भाग्य को जगाने के लिए आप प्रात सुबह उठकर जो भी स्वर चल रहा हो, वही हाथ देखकर तीन बार चूमें, तत्पश्चात वही पांव धरती पर रखें और वही कदम आगे बाधाएं। ऐसा नित्य-प्रतिदिन करने से निश्चित रूप से भाग्योदय होगा।

त्वचा रोग होने पर यह करें

त्वचा संबंधी रोग केतु के दुष्प्रभाव से बढ़ते हैं। यदि त्वचा संबंधी घाव ठीक न हो रहा हो तो सायंकाल मिट्टी के नए पात्र में पानी रखकर उसमें सोने की अंगूठी या एनी कोइ आभूषण दाल दें। कुछ देर बाद उसी पानी से घाव को धोने के बाद अंगूठी निकालकर रख लें तथा पाने किसी चौराहे पर फैंक आएं। ऐसा तीन दिन करें तो रोग शीघ्र ठीक हो जाएगा।

मंदी से छुटकारा पाएं ऐसे

अगर आपके व्यापार में मंदी आ गयी है या नौकरी में मंदी आ गयी है तो यह करें। किसी साफ़ शीशी में सरसों का तेल भरकर उस शीशी को किसी तालाब या बहती नदी के जल में डाल दें। शीघ्र ही मंदी का असर जाता रहेगा और आपके व्यापार में जान आ जाएगी।

भय को दूर करें ऐसे

अगर आपको बिना कारण भय रहता हो या सांप-बिच्छू या वन्य पशुओं का भय रहता हो तो यह करें : बांस की जड़ जलाकर उसे कान पर धारण करने से भय मिट जाता है। निर्गुन्डी की जड़ अथवा मोर पंख घर में रख देने से सर्प कभी भी घर में प्रवेश नहीं करता। रवि-पुष्य योग में प्राप्त सफ़ेद चादर की जड़ लाकर दाईं भुजा पर बाँधने से वन्य पशुओं का भय नहीं रहता है साथ ही अग्नि भय से भी छुटकारा मिल जाता है। केवड़े की जड़ कान पर धारण करने से शत्रु भय मिट जाता है।

अगर आपके परिवार में कोई रोगग्रस्त हो तो यह करें

अगर स्वास्थ्य में सुधर न होता हो तो यह उपाय करें: एक देशी अखंडित पान, गुलाब का फूल और कुछ बताशे रोगी के ऊपर से 31 बार उतारें तथा अंतोक चौराहे पर रख दें। इसके प्रभाव से रोगी की दशा में शीघ्रता से सुधार होगा।

पारिवारिक सुख-शांति के लिए

अगर आपके परिवार में अशांति रहती है और सुख-चैन का अभाव है तो प्रतिदिन प्रथम रोटी के चार भाग करें, जिसका एक गाय को,

दूसरा काले कुत्ते को, तीसरा कौवे को तथा चौथा टुकड़ा किसी चौराहे पर रखवा दें तो इसके प्रभाव से समस्त दोष समाप्त होकर परिवार की शांति तथा सम्रद्धि बढ़ जाती है।

अपनाएं सुखी रहने के कुछ नुस्खे
----

1. ब्रहस्पतिवार या मंगलवार को सात गाँठ हल्दी तथा थोड़ा-सा गुड
इसके साथ पीतल का एक टुकड़ा इन सबको मिलाकर पोटली में
बांधें तथा ससुराल की दिशा में फेंक दें तो वहां हर प्रकार से शांति व
सुख रहता है।
2. कन्या अपनी ससुराल में रहते हुए यह करें। मेहँदी तथा साबुत उरद
जिस दिशा में वधु का घर हो, उसी दिशा में फेंकने से वर-वधु में प्रेम
बढ़ता है।
3. किसी विशेष कार्य के लिए घर के निकलते समय एक साबुत नीबू
लेकर गाय के गोबर में दबा दें तथा उसके ऊपर थोड़ा-सा कामिया
सिन्दूर छिड़क दें तथा कार्य बोलकर चले जाएं तो कार्य निश्चित ही
बन जाता है।
4. सावन के महीने में जब पहली बरसात हो तो बहते पानी में विवाह
करने से दुर्भाग्य दूर हो जाता है।

दस महाविद्या के शाबर मन्त्र :
====================

सत नमो आदेश । गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी ।
ॐ सोऽहं सिद्ध की काया, तीसरा नेत्र त्रिकुटी ठहराया । गगण मण्डल में अनहद बाजा।
वहाँ देखा शिवजी बैठा, गुरु हुकम से भितरी बैठा, शुन्य में ध्यान गोरख दिठा।
यही ध्यान तपे महेशा, यही ध्यान ब्रह्माजी लाग्या, यही ध्यान विष्णु की माया।
ॐ कैलाश गिरि से आई पार्वती देवी, जाकै सन्मुख बैठे गोरक्ष योगी
देवी ने जब किया आदेश । नहीं लिया आदेश, नहीं दिया उपदेश ।
सती मन में क्रोध समाई, देखु गोरख अपने माही,
नौ दरवाजे खुले कपाट, दशवे द्वारे अग्नि प्रजाले, जलने लगी तो पार पछताई।
राखी राखी गोरख राखी, मैं हूँ तेरी चेली, संसार सृष्टि की हूँ मैं माई ।
कहो शिव-शंकर स्वामीजी, गोरख योगी कौन है दिठा ।
यह तो योगी सबमें विरला, तिसका कौन विचार ।
हम नहीं जानत, अपनी करणी आप ही जानी । गोरख देखे सत्य की दृष्टि ।
दृष्टि देख कर मन भया उनमन, तब गोरख कली बिच कहाया ।
हम तो योगी गुरुमुख बोली, सिद्धों का मर्म न जाने कोई ।
कहो पार्वती देवीजी अपनी शक्ति कौन-कौन समाई।
तब सती ने शक्ति की खेल दिखाई, दश महाविध्या की प्रगटली ज्योति।

प्रथम ज्योति महाकाली प्रगटली
=====================

ॐ निरंजन निराकार अवगत पुरुष तत-सार, तत-सार मध्ये ज्योत, ज्योत मध्ये परम-ज्योत, परम-ज्योत मध्ये उत्पन्न भई माता शम्भु शिवानी काली ॐ काली काली महाकाली, कृष्ण वर्णी, शव वाहिनी, रुद्र की पोषणी, हाथ खप्पर खडग धारी, गले मुण्डमाला हंस मुखी । जिह्वा ज्वाला दन्त काली । मद्यमांस कारी श्मशान की राणी । मांस खाये रक्त पीवे । भस्मन्ती माई जहां पाई तहां लगाई। सत की नाती धर्म की बेटी इन्द्र की साली काल की काली जोग की जोगन, नागों की नागन मन माने तो संग रमाई नहीं तो श्मशान

फिरे अकेली चार वीर अष्ट भैरों, घोर काली अघोर काली अजर बजर अमर काली भख जून निर्भय काली बला भख, दुष्ट को भख, काल भख पापी पाखण्डी को भख जती सती को रख, ॐ काली तुम बाला ना वृद्धा, देव ना दानव, नर ना नारी देवीजी तुम तो हो परब्रह्मा काली ।

मंत्र : क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।

द्वितीय ज्योति तारा त्रिकुटा तोतला प्रगटली
===========================
ॐ आदि योग अनादि माया जहाँ पर ब्रह्माण्ड उत्पन्न भया । ब्रह्माण्ड समाया आकाश मण्डल तारा त्रिकुटा तोतला माता तीनों बसै ब्रह्म कापलि, जहाँ पर ब्रह्मा-विष्णु-महेश उत्पत्ति, सूरज मुख तपे चंद मुख अमिरस पीवे, अग्नि मुख जले, आद कुंवारी हाथ खड्ग गल मुण्ड माल, मुर्दा मार ऊपर खड़ी देवी तारा । नीली काया पीली जटा, काली दन्त में जिह्वा दबाया । घोर तारा अघोर तारा, दूध पूत का भण्डार भरा । पंच मुख करे हां हां ऽऽकारा, डाकिनी शाकिनी भूत पलिता सौ सौ कोस दूर भगाया । चण्डी तारा फिरे ब्रह्माण्डी तुम तो हों तीन लोक की जननी ।

मंत्र - ॐ ह्रीं स्त्रीं फट्,
ॐ ऐं ह्रीं स्त्रीं हूँ फट्।

तृतीय ज्योति त्रिपुर सुन्दरी प्रगटली
=======================
ॐ निरञ्जन निराकार अवधू मूल द्वार में बन्ध लगाई पवन पलटे गगन समाई, ज्योति मध्ये ज्योत ले स्थिर हो भई ॐ मध्याः उत्पन्न भई उग्र त्रिपुरा सुन्दरी शक्ति आवो शिवधर बैठो, मन उनमन, बुध सिद्ध चित्त में भया नाद । तीनों एक त्रिपुर सुन्दरी भया प्रकाश । हाथ चाप शर धर एक हाथ अंकुश । त्रिनेत्रा अभय मुद्रा योग भोग की मोक्षदायिनी । इडा पिंगला सुषम्ना देवी नागन जोगन त्रिपुर सुन्दरी । उग्र बाला, रुद्र बाला तीनों ब्रह्मपुरी में भया उजियाला । योगी के घर जोगन बाला, ब्रह्मा विष्णु शिव की माता ।

मंत्र - श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं सोः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ।

चतुर्थ ज्योति भुवनेश्वरी प्रगटली
====================
ॐ आदि ज्योति अनादि ज्योत ज्योत मध्ये परम ज्योत परम ज्योति मध्ये शिव गायत्री भई उत्पन्न, ॐ प्रातः समय उत्पन्न भई देवी भुवनेश्वरी । बाला सुन्दरी कर धर वर पाशांकुश अन्नपूर्णी दूध पूत बल दे बालका ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरे, बालकाना बल दे जोगी को अमर काया । चौदह भुवन का राजपाट संभाला कटे रोग योगी का, दुष्ट को मुष्ट, काल कन्टक मार । योगी बनखण्ड वासा, सदा संग रहे भुवनेश्वरी माता ।

मंत्र - ह्रीं

पञ्चम ज्योति छिन्नमस्ता प्रगटली
=====================
सत का धर्म सत की काया, ब्रह्म अग्नि में योग जमाया । काया तपाये जोगी (शिव गोरख) बैठा, नाभ कमल पर छिन्नमस्ता, चन्द सूर में उपजी सुष्मनी देवी, त्रिकुटी महल में फिरे बाला सुन्दरी, तन का मुन्डा हाथ में लिन्हा, दाहिने हाथ में खप्पर धार्या । पी पी पीवे रक्त, बरसे त्रिकुट मस्तक पर अग्नि प्रजाली, श्वेत वर्णी मुक्त केशा कैची धारी । देवी उमा की शक्ति छाया, प्रलयी खाये सृष्टि सारी । चण्डी, चण्डी फिरे ब्रह्माण्डी भख भख बाला भख दुष्ट को मुष्ट जती, सती को रख, योगी घर जोगन बैठी, श्री शम्भुजती गुरु गोरखनाथजी ने भाखी । छिन्नमस्ता जपो जाप, पाप कन्टन्ते आपो आप, जो जोगी करे सुमिरण पाप पुण्य से न्यारा रहे । काल ना खाये ।

मंत्र : श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा।

षष्टम ज्योति भैरवी प्रगटली
==================
ॐ सती भैरवी भैरो काल यम जाने यम भूपाल तीन नेत्र तारा त्रिकुटा, गले में माला मुण्डन की । अभय मुद्रा पीये रुधिर नाशवन्ती ! काला खप्पर हाथ खंजर कालापीर धर्म धूप खेवन्ते वासना गई सातवें पाताल, सातवें पाताल मध्ये परम-तत्त्व परम-तत्त्व में जोत, जोत में परम जोत, परम जोत में भई उत्पन्न काल-भैरवी, त्रिपुर- भैरवी, समपत-प्रदा-भैरवी, कौलेश- भैरवी, सिद्धा-भैरवी, विध्वंशिनी-

भैरवी, चैतन्य-भैरवी, कमेश्वरी-भैरवी, षटकुटा-भैरवी, नित्या-भैरवी, जपा-अजपा गोरक्ष जपन्ती यही मन्त्र मत्स्येन्द्रनाथजी को सदा शिव ने कहायी । ऋद्ध फूरो सिद्ध फूरो सत श्रीशम्भुजती गुरु गोरखनाथजी अनन्त कोट सिद्धा ले उतरेगी काल के पार, भैरवी भैरवी खड़ी जिन शीश पर, दूर हटे काल जंजाल भैरवी मन्त्र बैकुण्ठ वासा । अमर लोक में हुवा निवासा ।

मंत्र ; ॐ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्त्रौः

सप्तम ज्योति धूमावती प्रगटली
===================
ॐ पाताल निरंजन निराकार, आकाश मण्डल धुन्धुकार, आकाश दिशा से कौन आये, कौन रथ कौन असवार, आकाश दिशा से धूमावन्ती आई, काक ध्वजा का रथ अस्वार आई थरै आकाश, विधवा रुप लम्बे हाथ, लम्बी नाक कुटिल नेत्र दुष्टा स्वभाव, डमरु बाजे भद्रकाली, क्लेश कलह कालरात्रि । डंका डंकनी काल किट किटा हास्य करी । जीव रक्षन्ते जीव भक्षन्ते जाजा जीया आकाश तेरा होये । धूमावन्तीपुरी में वास, न होती देवी न देव तहा न होती पूजा न पाती तहा न होती जात न जाती तब आये श्रीशम्भुजती गुरु गोरखनाथ आप भयी अतीत ।

मंत्र : ॐ धूं धूं धूमावती स्वाहा ।

अष्टम ज्योति बगलामुखी प्रगटली
====================
ॐ सौ सौ सुता समुन्दर टापू, टापू में थापा सिंहासन पीला । संहासन पीले ऊपर कौन बसे । सिंहासन पीला ऊपर बगलामुखी बसे, बगलामुखी के कौन संगी कौन साथी । कच्ची-बच्ची-काक-कूतिया-स्वान-चिड़िया, ॐ बगला बाला हाथ मुद्-गर मार, शत्रु हृदय पर सवार तिसकी जिह्वा खिच्चै बाला । बगलामुखी मरणी करणी उच्चाटण धरणी, अनन्त कोट सिद्धों ने मानी ॐ बगलामुखी रमे ब्रह्माण्डी मण्डे चन्दसुर फिरे खण्डे खण्डे । बाला बगलामुखी नमो नमस्कार ।

मंत्र : ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भन-बाणाय धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात् ।

नवम ज्योति मातंगी प्रगटली
==================
ॐ शून्य शून्य महाशून्य, महाशून्य में ओंकार, ओंकार मे शक्ति, शक्ति अपन्ते उहज आपो आपना, सुभय में धाम कमल में विश्राम, आसन बैठी, सिंहासन बैठी पूजा पूजो मातंगी बाला, शीश पर शशि अमीरस प्याला हाथ खड्ग नीली काया। बल्ला पर अस्वारी उग्र उन्मत्त मुद्राधारी, उद गुग्गल पाण सुपारी, खीरे खाण्डे मद्य मांसे घृत कुण्डे सर्वांगधारी। बूँद मात्रेन कडवा प्याला, मातंगी माता तृप्यन्ते तृप्यन्ते। ॐ मातंगी, सुंदरी, रूपवन्ती, धनवन्ती, धनदाती, अन्नपूर्णी, अन्नदाती, मातंगी जाप मन्त्र जपे काल का तुम काल को खाये । तिसकी रक्षा शम्भुजती गुरु गोरखनाथजी करे ।

मंत्र : ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा ।

दसवीं ज्योति कमला प्रगटली
==================
ॐ अयोनि शंकर ॐकार रूप, कमला देवी सती पार्वती का स्वरुप । हाथ में सोने का कलश, मुख से अभय मुद्रा । श्वेत वर्ण सेवा पूजा करे, नारद इन्द्रा । देवी देवत्या ने किया जय ॐकार। कमला देवी पूजो केशर, पान, सुपारी, चकमक चीनी फतरी तिल गुग्गल सहस्र कमलों का किया हवन । कहे गोरख, मन्त्र जपो जाप जपो ऋद्धि-सिद्धि की पहचान गंगा गौरजा पार्वती जान । जिसकी तीन लोक में भया मान । कमला देवी के चरण कमल को आदेश ।

मंत्र : ॐ ह्रीं क्लीं कमला देवी फट् स्वाहा ।

सुनो पार्वती हम मत्स्येन्द्र पूता, आदिनाथ नाती, हम शिव स्वरुप उलटी थापना थापी योगी का योग, दस विद्या शक्ति जानो, जिसका भेद शिव शंकर ही पायो । सिद्ध योग मर्म जो जाने विरला तिसको प्रसन्न भयी महाकालिका । योगी योग नित्य करे प्रातः उसे वरद भुवनेश्वरी माता । सिद्धासन सिद्ध, भया श्मशानी तिसके संग बैठी बगलामुखी । जोगी खड दर्शन को
कर जानी, खुल गया ताला ब्रह्माण्ड भैरवी । नाभी स्थाने उडीय्यान बांधी मनीपुर चक्र में बैठी, छिन्नमस्ता रानी । ॐकार ध्यान लाग्या त्रिकुटी, प्रगटी तारा बाला सुन्दरी । पाताल जोगन (कुंडलिनी) गगन को चढ़ी, जहां पर बैठी त्रिपुर सुन्दरी । आलस मोड़े, निद्रा तोड़े तिसकी रक्षा देवी धूमावन्ती करें । हंसा जाये दसवें द्वारे देवी मातंगी का आवागमन खोजे । जो कमला देवी की धूनी चेताये तिसकी ऋद्धि सिद्धि से भण्डार भरे । जो दसविद्या का सुमिरण करे । पाप पुण्य से न्यारा रहे । योग अभ्यास से भये सिद्धा आवागमन

निवरते । मन्त्र पढ़े सो नर अमर लोक में जाये । इतना दस महाविद्या मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया । अनन्त कोट सिद्धों में, गोदावरी त्र्यम्बक क्षेत्र अनुपान शिला, अचलगढ़ पर्वत पर बैठ श्रीशम्भुजती गुरु गोरखनाथजी ने पढ़ कथ कर सुनाया श्रीनाथजी गुरुजी को आदेश । आदेश ।।

ये दसों महाविध्याओं के शाबर मंत्र दे रहे है जो सर्व पाप-ताप को हरने की क्षमता रखते है । नीचे दी गई फोटो के सामने घी या तिल के तेल का दीपक जला कर आप इसका एक पाठ रोज 41 दिन तक करने से लाभ मिलेगा। सूखे मिष्टान (लड्डू-बर्फी) या मेवा का भोग प्रसाद माता को अर्पण करें । इस पाठ के बाद गुरु गोरक्ष नाथ जी की गायत्री का जाप करें । आपका समाधान जरूर होगा ।
ॐ शिव गोरक्ष
श्री शंभू यति गुरु गोरक्ष नाथ जी की जय

शनि जयंती और जयेष्ठ अमावश्या
=====================

25-05-2017 वार गुरुवार शनि जयंती और जयेष्ठ अमावश्या दोनों एक ही दिन मे पड़ रहे है । आप लोग जो किसी न किसी कष्टों मे घिरे है उनके लिए हम छोटी सी विधि बता रहे है जिसके करने से आप सभी अपने कष्टों से छुटकारा पा सकेंगे ।

आप किसी भी शनि मंदिर मे जाकर शनि के ऊपर सरसों के तेल से अभिषेक करें और मौली (लाल धागा जो हाथ मे कलावे के रूप मे बांधते है) अपने सिर से पाव के माप का लेकर उसमे एक आम का पत्ता बांध कर अपने ऊपर से वार कर किसी नदी या सरोवर मे प्रवाहित कर दें ।

शनि मंदिर मे 7 माला जाप रुद्राक्ष की माला से निम्नलिखित मंत्र का जाप करें : -

"ॐ श शनैश्चराय नम:" ("OM SH SANSHCHRAYE NAMAH")

आपकी सारी विपदाएं दूर होंगी और आपके पास धन-आगमन का स्रोत बनेगा । कृपा जाप के समय ध्यान केवल जाप मे ही लगाए ताकि आपको उसका पूर्ण लाभ मिल सके ।

जय श्री शनिनाथ महाराज को आदेश आदेश
जय श्री शंभू-जति गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज को आदेश आदेश

आप सबका कल्याण हो एवं आप सब सुखी और सुमृद्ध हो यही कामना शनि जयंती के दिन करते है ।

नौ नाथ का शाबर मंत्र

ॐ गुरु जी

ओंकार आदिनाथ ओंकार ज्योति स्वरूप बोलिए ।
उदयनाथ पार्वती धरती स्वरूप बोलिए ।
सत्यनाथ ब्रह्मा जी जल स्वरूप बोलिए ।
संतोषनाथ विष्णु जी खण्ड-खांडा तेज स्वरूप बोलिए ।
अचल अचंभे नाथ जी शेष / वायु स्वरूप बोलिए ।
गजबेली गज कंथड नाथ गणेश जी गजहस्ति स्वरूप बोलिए ।
ज्ञान पारखी सिद्ध चौरंगी नाथ जी चंद्रमा/ अठारह भार वनस्पति स्वरूप बोलिए । मायास्वरूपी दादा मछेन्दर नाथ जी माया स्वरूप बोलिए ।
घटे-पिंडे नव-निरंतरे सम्पूर्ण रक्षा करन्ते शंभू यति गुरु गौरक्ष नाथ जी शिव बाल स्वरूप बोलिए ।
श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश आदेश ।

उपरोक्त मंत्र का जाप रुद्राक्ष की माला से एक माला निरंतर जाप करने से सभी कष्टो का शमन होता है और सारे बिगड़े कार्य बनाने लगते है । कृपा करके सुबह ब्रह्म महूरत मे उपरोक्त मंत्र का जाप करे ।

श्री नव नाथ गायत्री और मंत्र
==================

(1) औंकार आदिनाथ जी की गायत्री –

ॐ ह्रीं श्रीं एँ आदिनाथाय विद्महे औंकार स्वरूपाय धीमहि तन्नो निरंजनः प्रचोदयात

मंत्र - औंकार आदिनाथाय नम:

(2) उदयनाथ (पार्वती स्वरुपा) का गायत्री –

ॐ ह्रीं श्रीं ॐ उदयनाथाय विद्महे धरती स्वरूपाय धीमहि तन्नो पराशक्ति प्रचोदयात

मंत्र - ॐ श्री उदयनाथाय नम:

(3) सत्यनाथ (ब्रहमा स्वरुपा) का गायत्री –

ॐ ह्रीं श्रीं सँ सत्यनाथाय विद्महे ब्रहमा स्वरूपाय धीमहि तन्नो निरंजनः प्रचोदयात

मंत्र - ॐ श्री सत्यनाथाय नम:

(4) संतोषनाथ (विष्णु स्वरुपा) की गायत्री –

ॐ ह्रीं श्रीं सँ संतोषनाथाय विद्महे विष्णु स्वरूपाय धीमहि तन्नो निरंजनः प्रचोदयात

मंत्र - ॐ श्री संतोषनाथाय नम:

(5) अचल अचम्भेंनाथ (आकश/शेष स्वरुपा) की गायत्री –

ॐ ह्रीं श्रीं एँ अचम्भेंनाथाय विद्महे शेष स्वरूपाय धीमहि तन्नो निरंजनः प्रचोदयात

मंत्र - ॐ श्री अचल अचम्भेंनाथाय नम:

(6) गजबेलि गजकंथडनाथ (गजहस्ती स्वरुपा) की गायत्री –

ॐ ह्रीं श्रीं गँ गजकंथडनाथाय विद्महे गणेश स्वरूपाय धीमहि तन्नो निरंजनः प्रचोदयात

मंत्र - ॐ श्री गजबेलि गजकंथडनाथाय नम:

(7) सिद्ध चौरंगीनाथ (चंद्र/वनस्पति स्वरुपा) की गायत्री –

ॐ ह्रीं श्रीं चौं चौरंगीनाथाय विद्महे चंद्र स्वरूपाय धीमहि तन्नो निरंजनः प्रचोदयात

मंत्र - ॐ श्री सिद्ध योगी चौरंगीनाथाय नम:

(8) दादा गुरु मत्स्येंद्रनाथ (माया स्वरुपा) की गायत्री –

ॐ ह्रीं श्रीं मँ मत्स्येंद्रनाथाय विद्महे माया स्वरूपाय धीमहि तन्नो निरंजनः
प्रचोदयात

मंत्र - ॐ श्री सिद्ध योगी मत्स्येंद्रनाथाय नम:

(9) गुरु गोरक्षनाथ (शिव स्वरुपा) की गायत्री –

ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथाय विद्महे शुन्य पुत्राय स्वरूपाय धीमहि तन्नो गोरक्ष निरंजनः प्रचोदयात

मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं गों हुँ फट स्वाहा
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्ष हुँ फट स्वाहा
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्ष निरंजनात्मने हुँ फट स्वाहा
ॐ शिव गोरक्षनाथाय नम:
ॐ शिव गोरक्ष योगी

सभी पाठकों से अनुरोध है की उपरोक्त गायत्रीयों का पाठ कर अपने जीवन मे आए कष्टों से छुटकारा पाएँ

गुरु गोरक्ष नाथ जी के द्वादश नाम जाप
=========================

ॐ गुरु जी
श्री शंभुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के द्वादश नाम तै कौन-कौन बोलिए ।
ॐ गुरुजी
प्रथमे श्री निरंजननाथ जी,
द्वितीय श्री सुधबुधनाथ जी,
तृतीय श्री कलेश्वरनाथ जी,
चतुर्थ श्री सिद्ध चौरंगीनाथ जी,
पंचमे श्री लालग्वालनाथ जी,
षष्टमे श्री विमलनाथ जी,
सप्तमे श्री सर्वांगनाथ जी,
अष्टमे श्री सत्यनाथ जी,
नवमे श्री गोपालनाथ जी,
दशमे श्री क्षेत्रनाथ जी,
एकादशे श्री भूचरनाथ जी,
द्वादशे श्री गुरु गोरक्षनाथ जी,
ॐ नमो: नमो: गुरुदेव को नमो: नमो: सुखधाम ।
नाम लिए से नर उबरे, कोटी-कोटी प्रणाम ॥
इति श्री शंभुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के द्वादश नाम पठन्ते हरन्ते पाप मोक्ष मुक्ति पदे-पदे ।
नादमुद्रा ज्योति ज्वाला पिण्ड ज्ञान प्रकाशते ॥
श्री नाथजी गुरु जी को आदेश आदेश ।

रोजाना एक पाठ सुबह-शाम करें और ये पाठ करने के बाद नवनाथ स्वरूप का पाठ करें ।

तांत्रिक अभिकर्म से प्रतिरक्षण हेतु उपाय
----

१. पीली सरसों, गुग्गल, लोबान व गौघृत इन सबको मिलाकर इनकी धूप बना लें व सूर्यास्त के 1 घंटे भीतर उपले जलाकर उसमें डाल दें। ऐसा २१ दिन तक करें व इसका धुआं पूरे घर में करें। इससे नकारात्मक शक्तियां दूर भागती हैं।

२. जावित्री, गायत्री व केसर लाकर उनको कूटकर गुग्गल मिलाकर धूप बनाकर सुबह शाम २१ दिन तक घर में जलाएं। धीरे-धीरे तांत्रिक अभिकर्म समाप्त होगा।

३. गऊ, लोचन व तगर थोड़ी सी मात्रा में लाकर लाल कपड़े में बांधकर अपने घर में पूजा स्थान में रख दें। शिव कृपा से तमाम टोने-टोटके का असर समाप्त हो जाएगा।

४. घर में साफ सफाई रखें व पीपल के पत्ते से ७ दिन तक घर में गौमूत्र के छींटे मारें व तत्पश्चात् शुद्ध गुग्गल का धूप जला दें।

५. कई बार ऐसा होता है कि शत्रु आपकी सफलता व तरक्की से चिढ़कर तांत्रिकों द्वारा अभिचार कर्म करा देता है। इससे व्यवसाय बाधा एवं गृह क्लेश होता है अतः इसके दुष्प्रभाव से बचने हेतु सवा 1 किलो काले उड़द, सवा 1 किलो कोयला को सवा 1 मीटर काले कपड़े में बांधकर अपने ऊपर से २१ बार घुमाकर शनिवार के दिन बहते जल में विसर्जित करें व मन में हनुमान जी का ध्यान करें। ऐसा लगातार ७ शनिवार करें। तांत्रिक अभिकर्म पूर्ण रूप से समाप्त हो जाएगा।

६. यदि आपको ऐसा लग रहा हो कि कोई आपको मारना चाहता है तो पपीते के २१ बीज लेकर शिव मंदिर जाएं व शिवलिंग पर कच्चा दूध चढ़ाकर धूप बत्ती करें तथा शिवलिंग के निकट बैठकर पपीते के बीज अपने सामने रखें। अपना नाम, गौत्र उच्चारित करके भगवान् शिव से अपनी रक्षा की गुहार करें व एक माला महामृत्युंजय मंत्र की जपें तथा बीजों को एकत्रित कर तांबे के ताबीज में भरकर गले में धारण कर लें।

७. शत्रु अनावश्यक परेशान कर रहा हो तो नींबू को ४ भागों में काटकर चौराहे पर खड़े होकर अपने इष्ट देव का ध्यान करते हुए चारों दिशाओं में एक-एक भाग को फेंक दें व घर आकर अपने हाथ-पांव धो लें। तांत्रिक अभिकर्म से छुटकारा मिलेगा।

८. शुक्ल पक्ष के बुधवार को ४ गोमती चक्र अपने सिर से घुमाकर चारों दिशाओं में फेंक दें तो व्यक्ति पर किए गए तांत्रिक अभिकर्म का प्रभाव खत्म हो जाता है।

रूद्राक्ष का चमत्कारिक रहस्य

रूद्राक्ष को मनुष्य जाति के लिए चमत्कार पूर्ण तथा वरदान स्वरूप बताया गया है। इसकी उत्पत्ती मानव मात्र के कल्याण के लिए भगवान शंकर ने अपने अश्रुओं से किया है। कहा जाता है कि रूद्राक्ष धारण करने वाला व्यक्ति भगवान शिव को अत्यंत प्रिय होता है।

रूद्राक्ष की माला को तंत्र शास्त्रों में अत्यधिक महत्व पूर्ण एवं चमत्कारिक माना गया है। इसे धारण करने वाले व्यक्ति को दीर्घायु जीवन की प्राप्ति होती है तथा उसकी अकाल मृत्यु कभी नही हो सकती।

जो मनुष्य रूद्राक्ष धारण करता है उसे जीवन में धर्म, अर्थ, काम, तथा मोक्ष की प्राप्ति सहज ही हो जाती है, साथ ही साथ मनुष्य के अनेकों शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक समस्याओं का समाधान होने लगता है तथा मन में असिम शांति का अनुभव होने लगता है।

जो व्यक्ति किसी भी रूप में रूद्राक्ष धारण कर लेता है उसके सारे समस्याओं का निराकरण स्वतः ही होने लगता है, तथा वह समस्त प्रकार के संकटों से बचा रहता है।

ऐसे व्यक्ति की कभी भी आकस्मीक दुर्घटना नहीं होती वह हर प्रकार के अला-बलाओं से मुक्त रहता है। रूद्राक्ष धारण करने वाले व्यक्ति के पापों का क्षय होता है चाहे वह गोहत्या अथवा ब्रह्म हत्या जैसा पाप ही क्यों न हो।

रूद्राक्ष की माला को तंत्र शास्त्रों में अत्यधिक महत्व पूर्ण एवं चमत्कारिक माना गया है। इसे धारण करने वाले व्यक्ति को दीर्घायु जीवन की प्राप्ति होती है तथा उसकी अकाल मृत्यु कभी नही हो सकती। जो मनुष्य रूद्राक्ष धारण करता है उसे जीवन में धर्म, अर्थ, काम, तथा मोक्ष की प्राप्ति सहज ही हो जाती है, साथ ही साथ मनुष्य के अनेकों शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक समस्याओं का समाधान होने लगता है तथा मन में असिम शांति का अनुभव होने लगता है।

रूद्राक्ष धारण करने वाले व्यक्ति के उपर भुत-प्रेत, जादू-टोना, तथा किए-कराए का कोइ आर नही पड़ता। रूद्राक्ष धारण करने वाला व्यक्ति रूद्र तुल्य हो जाता है उसके पाप, ताप, संताप पूर्णतः समाप्त हो जाते हैं। चाहे कोई संयासी हो अथवा गृहस्थ सभी के लिए रूद्राक्ष सामान रूप से उपयोगी माना गया है। जिस घर में नित्य रूद्राक्ष का पूजन किया जाए उस घर में हमेशा सुख शांति बनी रहती है तथा उसके घर में अचल लक्ष्मी का सदा वास होता है।

रूद्राक्ष के मुखों के अनुसार पुराणों मे इसका महत्व तथा उपयोगिता का उल्लेख मिलता है। मुख्यतः एक मुख से लेकर इक्किस मुखी तक रूद्राक्ष प्राप्त होता है तथा प्रत्येक रूद्राक्ष का अपना अलग-अलग महत्व तथा उपयोगिता होती है।

एकमुखी रूद्राक्ष
****

पुराणों मे एकमुखी रूद्राक्ष को साक्षात रूद्र का स्वरूप कहा गया है यह चैतन्य स्वरूप पारब्रह्म का प्रतिक है। एकमुखी रूद्राक्ष को अत्यंत दुर्लभ तथा अद्वितिय माना गया है क्योंकि सौभाग्य शाली मनुष्य को ही एक मुखी रूद्राक्ष प्राप्त होता है।
इसे धारण करने वाले व्यक्ति के जीवन में किसी प्रकार का अभाव नही रहता तथा जीवन में धन, यश, मान-सम्मान, की प्राप्ति होती रहती है तथा लक्ष्मी चिर स्थाई रूप से उसके घर में निवास करती है। एकमुखी रूद्राक्ष को धारण करने से सभी प्रकार के मानसिक एवं शारीरिक रोगों का नाश होने लगता है तथा उसकी समस्त मनोकामनाएं स्वतः पूर्ण होने लगती हैं।
परंतु ध्यान रखें गोलाकार एकमुखी रूद्राक्ष को ही सर्वश्रेष्ठ माना गया है यह अत्यंत दुर्लभ है। काजू दाने की आकार वाली एकमुखी रूद्राक्ष सरलता से प्रप्त होती है परंतु यह कम प्रभावी होता है।

दोमुखी रूद्राक्ष
****

शास्त्रों में दोमुखी रूद्राक्ष को अर्धनारिश्वर का प्रतिक माना गया है। यह शिव भक्तों के लिए उचित एवं उपयोगी माना गया है। इसे धारण करने से मन में शांति तथा चिŸा में एकाग्रता आने से आध्यात्मीक उन्नती तथा सौभाग्य में वृद्धि होती है।

तीनमुखी रूद्राक्ष
****

तीनमुखी रूद्राक्ष को साक्षात अग्नि स्वरूप माना गया है। इस रूद्राक्ष में त्रिगुणात्मक शक्तियाँ समाहित होती हैं। इसे धारण करने वाला व्यक्ति अग्नि के समान तेजस्वी हो जाता है उसके सभी मनोरथ शीघ्र पुरे हो जाते हैं। तथा घर में धन-धान्य, यश, सौभाग्य की वृद्धि होने लगती है।

तीनमुखी रूद्राक्ष धारण करने से परीक्षा, इन्टरव्यु, नौकरी तथा रोजगार के क्षेत्र में पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त होती है।

चारमुखी रूद्राक्ष
****

चारमुखी रूद्राक्ष को ब्रह्म स्वरूप माना जाता है। यह शिक्षा के क्षेत्र में पूर्ण रूप से सफलता दिलाने में समर्थ है। इसे धारण करने वाले व्यक्ति कि वाक शक्ति प्रखर तथा स्मरण शक्ति तीव्र हो जाती है और शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्ति अग्रणी हो जाता है।

पाँचमुखी रूद्राक्ष
****

पाँचमुखी रूद्राक्ष को साक्षात रूद्र स्वरूप है। यह रूद्रावतारी हनुमान का प्रतिनिधित्व करता है। इसे कालाग्नी नाम से भी जाना जाता है, यह प्रयाप्त मात्रा में उपलब्ध होता है।

माला के लिए इसी रूद्राक्ष का उपयोग किया जाता है। पंचमुखी रूद्राक्ष को किसी भी साधना में सिद्धि एवं पूर्ण सफलता दायक माना गया है।

इसे धारण करने से सांप, बिच्छु, भुत-प्रेत जादू-टोने से रक्षा होती है तथा मानसिक शांति और प्रफुल्लता प्रदान करते हुए मनुष्य के समस्त प्रकार के पापों तथा रोगों को नष्ट करने में समर्थ है।

छःमुखी रूद्राक्ष
****

इसे भगवान कार्तिकेय का स्वरूप माना गया है। छःमुखी रूद्राक्ष को धारण करने से मनुष्य की खोई हुई शक्तियाँ पुनः जागृत होने लगती हैं।

स्मरण शक्ति प्रबल तथा बुद्धि तीव्र होती है। छःमुखी रूद्राक्ष धारण करने से ब्रह्महत्या से भी बड़ा पाप नष्ट हो जाता है। तथा धर्म, यश तथा पुण्य प्राप्त होता है।

इसे धारण करने से हृदय रोग, चर्मरोग, नेत्ररोग, हिस्टिरीया तथा प्रदर रोग जैसे विकार नष्ट हो जाते हैं।

सातमुखी रूद्राक्ष
****

सातमुखी रूद्राक्ष सप्तऋषियों के स्वरूप है। इसे धारण करने से धन, संपति, कीर्ति और विजय की प्राप्ति होती है तथा कार्य व्यापार में निरंतर बढ़ोतरी होती है।

सप्तमुखी रूद्राक्ष को दुर्घटना तथा अकाल मृत्यु को हरण करने वाला तथा पूर्ण संसारिक सुख प्रदान करने वाला बताया गया है।

अष्टमुखी रूद्राक्ष
****

इसे अष्टभुजी देवी माँ दुर्गा का स्वरूप माना गया है। इसे धारण करने से दिव्य ज्ञान की प्राप्ति, चित्त में एकाग्रता तथा केश मुकदमों में सफलता प्राप्त होती है।

अष्टमुखी रूद्राक्ष को धारणा करने से आँखों मे अजीब सा सम्मोहन शक्ति आ जाती है जिससे सामने वाले व्यक्ति को प्रभावित किया जा सकता है।

इसके माध्यम से कुण्डलिनी शक्ति को भी जागृत किया जा सकता है।

नौमुखी रूद्राक्ष
****

नौमुखी रूद्राक्ष नवदुर्गा, नवग्रह, तथा नवनाथों का प्रतिक माना जाता है। इसे धारण करने से समस्त प्रकार की साधनाओं में सफलता प्राप्त होती है।

यह अकाल मृत्यु निवारक, शत्रुओं को परास्त करने, मुकदमों में सफलता प्रदान करने तथा धन, यश तथा कीर्ति प्रदान करने में समर्थ है।

दसमुखी रूद्राक्ष
****
दसमुखी रूद्राक्ष को दसो दिशाओं का सुचक तथा दिग्पाल का प्रतिक है। इसे धारण करने से सभी प्रकार के लौकिक तथा पारलौकिक कामनाओं की पूति होती है।
समस्त प्रकार के विघ्न बाधाओं तथा तांत्रिक बाधाओं से रक्षा करते हुए सुख-सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

ग्यारहमुखी रूद्राक्ष
****
ग्यारहमुखी रूद्राक्ष को हनुमान स्वरूप माना गया है। इसे धारण करने पर किसी भी चीज का अभाव नही रहता तथा सभी प्रकार के संकट और कष्ट दुर हो जाते हैं।
इसे धारण करने से संक्रामक रोगों का नाश होता है। यदि बंध्या स्त्री को भी इसे धारण कराया जाए तो निश्चय ही उसकी संताने पैदा हो जाती है।

बारहमुखी रूद्राक्ष
****
बारह मुखी रूद्राक्ष को आदित्य स्वरूप माना गया है। इसे धारण करने वाला व्यक्ति तेजस्वी तथा शक्तिशाली बनता है ।
उसके चेहरे पर हमेशा ओज और तेज झलकता रहता है साथ ही सभी प्रकार के शारीरिक तथा मानसिक व्याधियों से मुक्ति मिल जाती है।
इसे धरण करने से आँखों की रोशनी बढ़ जाती है तथा आँखों में सम्मोहन शक्ति बढ़ती है।

तेरहमुखी रूद्राक्ष
****
इसे इन्द्र स्वरूप माना गया है। इसे धारण करने से समस्त प्रकार के सिद्धियों मे सफलता प्राप्त होती है।
शारीरिक सौन्दर्य मे वृद्धि तथा जीवन में यश, मान सम्मान, पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

चैदहमुखी रूद्राक्ष
****
इसे साक्षात त्रिपुरारी स्वरूप माना गया है। इसे धारण करने से स्वास्थ्य लाभ शारीरिक, मानसिक तथा व्यापारिक उन्नती मे सहायक होता है।
यह स्मस्त प्रकार के आध्यात्मीक तथा भौतिक सुखों को प्रदान करने में समर्थ है।

गौरीशंकर रूद्राक्ष
****
इसे शिव तथा शक्ति का मिश्रीत स्वरूप माना गया है। यह प्राकृतिक रूप से वृक्ष पर ही जुड़ा हूआ उत्पन्न होता है। इसे धारण करने पर शिव तथा शक्ति की संयुक्त कृपा प्राप्त होती है ।
यह आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सफलता दायक होता है। पारिवारिक सामंजस्य आकर्षण तथा मंगल कामनाओं की सिद्धि में सहायक होने के साथ-साथ लड़का-लड़की के विवाह में आ रही बाधाओं को समाप्त कर वर अथवा बधू की प्राप्ति मे भी सहायक है।

दुर्भाग्य नाशक यन्त्र

यदपि सौभाग्य और दुर्भाग्य मनुष्य को उसके पूर्व कर्म के अनुसार प्राप्त होता है, तो भी उसमे अनेक बाह्य-कारक, जैसे - ग्रहदशा, पारिवारिक- स्तिथि और सामाजिक- परिवेश, देश-काल-वातावरण आदि भी प्रभावशाली रहते है | ऐसे बाह्य-कारकों को प्रभावित करने (उन्हें शशक्त और निर्मल बनाने)
में यंत्र साधना निश्चित रूप से प्रभाव डालती है | नीचे लिखा यंत्र ऐसा ही है | इसकी रचना और साधना के प्रभाव से मनुष्य के दुर्भाग्य क्षीण हो कर सौभाग्य में बदल जाता है | दुष्ट और दुखद परिस्थितियों को नष्ट करके, वह सुख-सुविधा और शांति का वातावरण प्रस्तुत कर देता है |

यंत्र को बनाने की विधि

किसी अच्छे ब्रह्म मुर्हत में केले के पत्ते या भोजपत्र पर इस यंत्र की रचना करें कपूर, कुमकुम और गोरोचन की स्याही तथा जायफल की लकड़ी की कलम से लिखे | समरण रहे की लिखते समय पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण होना चाहिए | (ध्यान रहे की यंत्रो का दिशा निर्देश भूगोल के मानचित्रों
के क्रम से न होकर इस प्रकार होते है, ऊपर का भाग पूर्व - नीचे का पश्चिम - बाई और उत्तर और दाहिनी और दक्षिण, अतः यंत्र को इसी अनुसार ही
रचना करें |

इस यंत्र का प्रभाव अनेक प्रकार के विघ्नों, संकटों को दूर करके सौभाग्य को वृद्धि करता है | बाँझ स्त्री को इसके प्रभाव से संतान उत्पति होती है, पारवारिक और दांपत्य जीवन सुखमय होता है |

यंत्र का चित्र

॥ गायत्रीमन्त्राः ॥

1 सूर्य ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

2 ॐ आदित्याय विद्महे सहस्रकिरणाय धीमहि तन्नो भानुः प्रचोदयात् ॥

3 ॐ प्रभाकराय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥

4 ॐ अश्वध्वजाय विद्महे पाशहस्ताय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥

5 ॐ भास्कराय विद्महे महद्द्युतिकराय धीमहि तन्न आदित्यः प्रचोदयात् ॥

6 ॐ आदित्याय विद्महे सहस्रकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥

7 ॐ भास्कराय विद्महे महातेजाय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥

8 ॐ भास्कराय विद्महे महाद्द्युतिकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥

9 चन्द्र ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे महाकालाय धीमहि तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ॥

10 ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे अमृतत्वाय धीमहि तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ॥

11 ॐ निशाकराय विद्महे कलानाथाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात् ॥

12 अङ्गारक, भौम, मङ्गल, कुज ॐ वीरध्वजाय विद्महे विघ्नहस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात् ॥

13 ॐ अङ्गारकाय विद्महे भूमिपालाय धीमहि तन्नः कुजः प्रचोदयात् ॥

14 ॐ चित्रिपुत्राय विद्महे लोहिताङ्गाय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात् ॥

15 ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात् ॥

16 बुध ॐ गजध्वजाय विद्महे सुखहस्ताय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात् ॥

17 ॐ चन्द्रपुत्राय विद्महे रोहिणी प्रियाय धीमहि तन्नो बुधः
प्रचोदयात् ॥

18 ॐ सौम्यरूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात् ॥

19 गुरु ॐ वृषभध्वजाय विद्महे क्रुनिहस्ताय धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ॥

20 ॐ सुराचार्याय विद्महे सुरश्रेष्ठाय धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ॥

21 शुक्र ॐ अश्वध्वजाय विद्महे धनुर्हस्ताय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात् ॥

22 ॐ रजदाभाय विद्महे भृगुसुताय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात् ॥

23 ॐ भृगुसुताय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात् ॥

24 शनीश्वर, शनैश्चर, शनी ॐ काकध्वजाय विद्महे खड्गहस्ताय धीमहि तन्नो मन्दः प्रचोदयात् ॥

25 ॐ शनैश्चराय विद्महे सूर्यपुत्राय धीमहि तन्नो मन्दः प्रचोदयात् ॥

26 ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नः सौरिः प्रचोदयात् ॥

27 राहु ॐ नाकध्वजाय विद्महे पद्महस्ताय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात् ॥

28 ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात् ॥

29 केतु ॐ अश्वध्वजाय विद्महे शूलहस्ताय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात् ॥

30 ॐ चित्रवर्णाय विद्महे सर्परूपाय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात् ॥

31 ॐ गदाहस्ताय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात् ॥

32 पृथ्वी ॐ पृथ्वी देव्यै विद्महे सहस्रमर्त्यै च धीमहि तन्नः पृथ्वी प्रचोदयात् ॥

33 ब्रह्मा ॐ चतुर्मुखाय विद्महे हंसारूढाय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ॥

34 ॐ वेदात्मनाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ॥

35 ॐ चतुर्मुखाय विद्महे कमण्डलुधराय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ॥

36 ॐ परमेश्वराय विद्महे परमतत्त्वाय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ॥

37 विष्णु ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥

38 नारायण ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥

39 वेङ्कटेश्वर ॐ निरञ्जनाय विद्महे निरपाशाय (?) धीमहि तन्नः श्रीनिवासः प्रचोदयात् ॥

40 राम ॐ रघुवंश्याय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात् ॥

41 ॐ दाशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात् ॥

42 ॐ भरताग्रजाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात् ॥

43 ॐ भरताग्रजाय विद्महे रघुनन्दनाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात् ॥

44 कृष्ण ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ॥

45 ॐ दामोदराय विद्महे रुक्मिणीवल्लभाय धीमहि तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ॥

46 ॐ गोविन्दाय विद्महे गोपीवल्लभाय धीमहि तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ।

47 गोपाल ॐ गोपालाय विद्महे गोपीजनवल्लभाय धीमहि तन्नो गोपालः प्रचोदयात् ॥

48 पाण्डुरङ्ग ॐ भक्तवरदाय विद्महे पाण्डुरङ्गाय धीमहि तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ॥

49 नृसिंह ॐ वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि तन्नो नारसि हः प्रचोदयात् ॥

50 ॐ नृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय धीमहि तन्नः सिंहः प्रचोदयात् ॥

51 परशुराम ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि तन्नः परशुरामः प्रचोदयात् ॥

52 इन्द्र ॐ सहस्रनेत्राय विद्महे वज्रहस्ताय धीमहि तन्न इन्द्रः प्रचोदयात् ॥

53 हनुमान ॐ आञ्जनेयाय विद्महे महाबलाय धीमहि तन्नो हनूमान् प्रचोदयात् ॥

54 ॐ आञ्जनेयाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि तन्नो हनूमान् प्रचोदयात् ॥

55 मारुती ॐ मरुत्पुत्राय विद्महे आञ्जनेयाय धीमहि तन्नो मारुतिः प्रचोदयात् ॥

56 दुर्गा ॐ कात्यायनाय विद्महे कन्यकुमारी च धीमहि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात् ॥

57 ॐ महाशूलिन्यै विद्महे महादुर्गायै धीमहि तन्नो भगवती प्रचोदयात् ॥

58 ॐ गिरिजायै च विद्महे शिवप्रियायै च धीमहि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात् ॥

59 शक्ति ॐ सर्वसंमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै च धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥

60 काली ॐ कालिकायै च विद्महे श्मशानवासिन्यै च धीमहि तन्न अघोरा प्रचोदयात् ॥

61 ॐ आद्यायै च विद्महे परमेश्वर्यै च धीमहि तन्नः कालीः प्रचोदयात् ॥

62 देवी ॐ महाशूलिन्यै च विद्महे महादुर्गायै धीमहि तन्नो भगवती प्रचोदयात् ॥

63 ॐ वाग्देव्यै च विद्महे कामराज्ञै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

64 गौरी ॐ सुभगायै च विद्महे काममालिन्यै च धीमहि तन्नो गौरी प्रचोदयात् ॥

65 लक्ष्मी ॐ महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नीश्च धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥

66 ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥

67 सरस्वती ॐ वाग्देव्यै च विद्महे विरिञ्चिपत्न्यै च धीमहि तन्नो वाणी प्रचोदयात् ॥

68 सीता ॐ जनकनन्दिन्यै विद्महे भूमिजायै च धीमहि तन्नः सीता प्रचोदयात् ॥

69 राधा ॐ वृषभानुजायै विद्महे कृष्णप्रियायै धीमहि तन्नो राधा प्रचोदयात् ॥

70 अन्नपूर्णा ॐ भगवत्यै च विद्महे माहेश्वर्यै च धीमहि तन्न अन्नपूर्णा प्रचोदयात् ॥

71 तुलसी ॐ तुलसीदेव्यै च विद्महे विष्णुप्रियायै च धीमहि तन्नो बृन्दः प्रचोदयात् ॥

72 महादेव ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

73 रुद्र ॐ पुरुषस्य विद्महे सहस्राक्षस्य धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

74 ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

75 शङ्कर ॐ सदाशिवाय विद्महे सहस्राक्ष्याय धीमहि तन्नः साम्बः प्रचोदयात् ॥

76 नन्दिकेश्वर ॐ तत्पुरुषाय विद्महे नन्दिकेश्वराय धीमहि तन्नो वृषभः प्रचोदयात् ॥

77 गणेश ॐ तत्कराटाय विद्महे हस्तिमुखाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥

78 ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥

79 ॐ तत्पुरुषाय विद्महे हस्तिमुखाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥

80 ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥

81 ॐ लम्बोदराय विद्महे महोदराय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥

82 षण्मुख ॐ षण्मुखाय विद्महे महासेनाय धीमहि तन्नः स्कन्दः प्रचोदयात्॥

83 ॐ षण्मुखाय विद्महे महासेनाय धीमहि तन्नः षष्ठः प्रचोदयात् ॥

84 सुब्रह्मण्य ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात् ॥

85 ॐ ॐ ॐकाराय विद्महे डमरुजातस्य धीमहि! तन्नः प्रणवः प्रचोदयात् ॥

86 अजपा ॐ हंस हंसाय विद्महे सोऽहं हंसाय धीमहि तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥

87 दक्षिणामूर्ति ॐ दक्षिणामूर्तये विद्महे ध्यानस्थाय धीमहि तन्नो धीशः प्रचोदयात् ॥

88 गुरु ॐ गुरुदेवाय विद्महे परब्रह्मणे धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ॥

89 हयग्रीव ॐ वागीश्वराय विद्महे हयग्रीवाय धीमहि तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥

90 अग्नि ॐ सप्तजिह्वाय विद्महे अग्निदेवाय धीमहि तन्न अग्निः प्रचोदयात् ॥

91 ॐ वैश्वानराय विद्महे लालीलाय धीमहि तन्न अग्निः प्रचोदयात् ॥

92 ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्निदेवाय धीमहि तन्नो अग्निः प्रचोदयात् ॥

93 यम ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे महाकालाय धीमहि तन्नो यमः प्रचोदयात् ॥

94 वरुण ॐ जलबिम्बाय विद्महे नीलपुरुषाय धीमहि तन्नो वरुणः प्रचोदयात् ॥

95 वैश्वानर ॐ पावकाय विद्महे सप्तजिह्वाय धीमहि तन्नो वैश्वानरः प्रचोदयात् ॥

96 मन्मथ ॐ कामदेवाय विद्महे पुष्पवनाय धीमहि तन्नः कामः प्रचोदयात् ॥

97 हंस ॐ हंस हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥

98 ॐ परमहंसाय विद्महे महत्ततत्त्वाय धीमहि तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥

99 नन्दी ॐ तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो नन्दिः प्रचोदयात् ॥

100 गरुड ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपक्षाय धीमहि तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥

101 सर्प ॐ नवकुलाय विद्महे विषदन्ताय धीमहि तन्नः सर्पः प्रचोदयात् ॥

102 पाञ्चजन्य ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि तन्नः शङ्खः प्रचोदयात् ॥

103 सुदर्शन ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि तन्नश्चक्रः प्रचोदयात् ॥

104 अग्नि ॐ रुद्रनेत्राय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि तन्नो वह्निः प्रचोदयात् ॥

105 ॐ वैश्वानराय विद्महे लाललीलाय धीमहि तन्नोऽग्निः प्रचोदयात् ॥

106 ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्निमथनाय धीमहि तन्नोऽग्निः प्रचोदयात् ॥

107 आकाश ॐ आकाशाय च विद्महे नभोदेवाय धीमहि तन्नो गगनं प्रचोदयात् ॥

108 अन्नपूर्णा ॐ भगवत्यै च विद्महे माहेश्वर्यै च धीमहि तन्नोऽन्नपूर्णा प्रचोदयात् ॥

109 बगलामुखी ॐ बगलामुख्यै च विद्महे स्तम्भिन्यै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

110 बटुकभैरव ॐ तत्पुरुषाय विद्महे आपदुद्धारणाय धीमहि तन्नो बटुकः प्रचोदयात् ॥

111 भैरवी ॐ त्रिपुरायै च विद्महे भैरव्यै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

112 भुवनेश्वरी ॐ नारायण्यै च विद्महे भुवनेश्वर्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

113 ब्रह्मा ॐ पद्मोद्भवाय विद्महे देववक्त्राय धीमहि तन्नः स्रष्टा प्रचोदयात् ॥

114 ॐ वेदात्मने च विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ॥

115 ॐ परमेश्वराय विद्महे परतत्त्वाय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ॥

116 चन्द्र ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे अमृततत्त्वाय धीमहि तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ॥

117 छिन्नमस्ता ॐ वैरोचन्यै च विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

118 दक्षिणामूर्ति ॐ दक्षिणामूर्तये विद्महे ध्यानस्थाय धीमहि तन्नो धीशः प्रचोदयात् ॥

119 देवी ॐ देव्यैब्रह्माण्यै विद्महे महाशक्त्यै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

120 धूमावती ॐ धूमावत्यै च विद्महे संहारिण्यै च धीमहि तन्नो धूमा प्रचोदयात् ॥

121 दुर्गा ॐ कात्यायन्यै विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात् ॥

122 ॐ महादेव्यै च विद्महे दुर्गायै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

123 गणेश ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥

124 ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥

125 गरुड ॐ वैनतेयाय विद्महे सुवर्णपक्षाय धीमहि तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥

126 ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपर्णाय (सुवर्णपक्षाय) धीमहि तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥

127 गौरी ॐ गणाम्बिकायै विद्महे कर्मसिद्ध्यै च धीमहि तन्नो गौरी प्रचोदयात् ॥

128 ॐ सुभगायै च विद्महे काममालायै धीमहि तन्नो गौरी प्रचोदयात् ॥

129 गोपाल ॐ गोपालाय विद्महे गोपीजनवल्लभाय धीमहि तन्नो गोपालः प्रचोदयात् ॥

130 गुरु ॐ गुरुदेवाय विद्महे परब्रह्माय धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ॥

131 हनुमत् ॐ रामदूताय विद्महे कपिराजाय धीमहि तन्नो हनुमान् प्रचोदयात् ॥

132 ॐ अञ्जनीजाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि तन्नो हनुमान् प्रचोदयात् ॥

133 हयग्रीव ॐ वागीश्वराय विद्महे हयग्रीवाय धीमहि तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥

134 इन्द्र, शक्र ॐ देवराजाय विद्महे वज्रहस्ताय धीमहि तन्नः शक्रः प्रचोदयात् ॥

135 ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सहस्राक्षाय धीमहि तन्न इन्द्रः प्रचोदयात् ॥

136 जल ॐ ह्रीं जलबिम्बाय विद्महे मीनपुरुषाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥

137 ॐ जलबिम्बाय विद्महे नीलपुरुषाय धीमहि तन्नस्त्वम्बु प्रचोदयात् ॥

138 जानकी ॐ जनकजायै विद्महे रामप्रियायै धीमहि तन्नः सीता प्रचोदयात् ॥

139 जयदुर्गा ॐ नारायण्यै विद्महे दुर्गायै च धीमहि तन्नो गौरी प्रचोदयात् ॥

140 काली ॐ कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि तन्नोऽघोरा प्रचोदयात् ॥

141 काम ॐ मनोभवाय विद्महे कन्दर्पाय धीमहि तन्नः कामः प्रचोदयात् ॥

142 ॐ मन्मथेशाय विद्महे कामदेवाय धीमहि तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात् ॥

143 ॐ कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात् ॥

144 कामकलाकाली ॐ अनङ्गाकुलायै विद्महे

145 ॐ दामोदराय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ॥

146 ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नः कृष्ण: प्रचोदयात्।

शांतिः

Maa Kali Sadhak

2 ଜୁଲାଇ ତାରିଖ 10:14 PM ସମୟରେ

तंत्र की मान्यता है इस ब्रह्मांड में कई लोक हैं। सभी लोकों के अलग-अलग देवी देवता हैं जो इन लोकों में रहते हैं । पृथ्वी से इन सभी लोकों की दूरी अलग-अलग है। मान्यता है नजदीकि लोक में रहने वाले देवी-देवता जल्दी प्रसन्न होते हैं, क्योंकि लगातार ठीक दिशा और समय पर किसी मंत्र विशेष की साधना करने पर उन तक तरंगे जल्दी पहुंचती हैं। यही कारण कि यक्ष, अप्सरा, किन्नरी आदि की साधना जल्दी पूरी होती है, क्योंकि इनके लोक पृथ्वी से पास हैं। आदिकाल में प्रमुख रूप से ये रहस्यमय जातियां थीं। देव,दैत्य,दानव, राक्षस,यक्ष,गंधर्व,अप्सराएं, पिशाच,किन्नर, वानर, रीझ,भल्ल, किरात, नाग आदि। ये सभी मानवों से कुछ अलग थे। इन सभी के पास रहस्यमय ताकत होती थी और ये सभी मानवों की किसी न किसी रूप में मदद करते थे। देवताओं के बाद देवीय शक्तियों के मामले में यक्ष का ही नंबर आता है।
जिस तरह प्रमुख 33 देवता होते हैं, उसी तरह 64 यक्ष और यक्षिणियां भी होते हैं। इनमे से निम्न 8 यक्षिणियां प्रमुख मानी जाती है

1.सुर सुन्दरी यक्षिणी
2.मनोहारिणी यक्षिणी
3.कनकावती यक्षिणी
4.कामेश्वरी यक्षिणी

5.रतिप्रिया यक्षिणी
6.पद्मिनी यक्षिणी
7.नटी यक्षिणी
8.अनुरागिणी यक्षिणी

Maa Kali Sadhak

2 ଜୁଲାଇ ତାରିଖ 09:50 PM ସମୟରେ

yakshini & yakshas are celestial beings of beings of hindu beileves as well as buddh & jain believs. yakshini (yakshi) is the female counterpart of the male yaksha, and they are attendees of kubera, the god of wealth. yakshinis are often depicted as beautiful and voluptuous, with wide hips, narrow waists, broad shoulders, and exaggerated, spherical breasts. in uddamareshvara tantra, thirty-six yakshinis are described, including their mantras and ritual prescriptions. a similar list of yakshas and yakshinis are given in the tantraraja tantra, where it says that these beings are givers of whatever is desired.

Yakshini और **yakshas** हिन्दू **beileves** के रूप में बुद्ध और बौद्ध धर्म के रूप में है । Yakshini (यक्षी) पुरुष के रूप में यक्ष-ऊण्श्छष्-यक्ष होते हैं और वे कुबेर की उपस्थिति हैं. **yakshinis** को प्राय: सुंदर और voluptuous के रूप में चित्रित किया जाता है और विस्तृत waists के साथ, संकीर्ण waists और अतिरंजित सीने है. **uddamareshvara** तन्त्र में तीस तथा अनुष्ठान प्रेस्क्रिप्शंज सहित-छह **yakshinis** का वर्णन किया जाता है. **tantraraja** तंत्र में **yakshas** और **yakshinis** की एक समान सूची दी जाती है, जहाँ यह कहते हैं कि ये लोग जो भी चाहते हैं, वह देनेवाले है.

Aum jay mata. Bhagavati. Kali.

Muladhara vasini.

Tantra sadhana me. Ma. Kali ka sthan pratham avem sarvopari hai
Yani mahatwa purna hai.

Mata muladhara vasini hai.

Dasha maha vidyaa. Ke antargat

----panditji

Jyotishacharya. (gold medalist.)

Hasta rekha shastri

Vedic jyotisha shastra ke aadhar par marg darshan

Mob. 09933116909. // 08337856577
Kharagpur town
West bengal
India near calcutta
Yaha rahane ke liye lodge hai
Mandir hai. Havan kund hai
Aap swagat ho

एड करने के लिये बहोत बहोत धन्यवाद् मे लाल किताब और वैदिक ज्योतिश का विद्यार्थि हु और जो भि मेने शिखा है ,जाना है वो लोग सरल तरिके से जाने और समज मे आये एसि भाशा मे रखने का पर्यांश किया है उसमे कोइ भुल हो तो जरुर बताये,जो भि पोस्ट किया है वो शेर जरुर करे एसा करने से ये ग्यान लोगो मे पहुचे और लोगो उसका लाभ उठा शके जय माता दी. लाल किताब मे सब के लिये जनरल नियम है,उसका पालन करने से ८०% समस्या का हल हो जाता है.तो कीसी भी इलाज शरु करने से पहले ये परहेज का पालन करे.बाद मे किसी भि लालकीताब ज्योतिष से परामर्श ले और उन्का हि उपाय करे जो आपका बिना कहे जिवन का आज तक का विवरण ` घर ` ` गिलि लकदी ` ` ` किल् बोल्ट् बन्ध इलेकट्रिक

इलेकट्रोनीक्स साधन,कोइ भि इलेकट्रिक साधन या इलेकट्रोनीक्स साधन का उपयोग हप्ते मे एक्बार जरुर करे लगातार बन्ध ना रखा करे,घ्रर कि छत या सिडी उपर और नीचे साफ सुथरा रखे,कोइ भि कबाड य़ा बिल्डीन्ग मटीरीयल्स ना रखे,तुटी हुइ चारपाई या मेज-कुर्शी -रोटी बेलने का चट्टा ना रखे,कुन्डालि अनुसार वास्तु कराये ,बिना परामर्श घ्रर मे तोड्-फोड य़ा मरामत ना करे या मकान ना ले,पुजा-पाठ या हवन -मन्गल कार्य ना करे क्योकी एसा करने से समस्या हो शकती है, पराई औरत से या मर्द से शारीरीक सम्बध ना बनाये, शादी शुदा कपल दिन मे शारिरिक सम्बध ना बनाये,निला -काला-हरा रन्ग से परहेज करे,शराब-मिट-अन्डा क़ा सेवन ना करे,घ्रर साफ्-शुथरा रखे,घ्रर मे फटा वस्त्र या बेडशिट ना रखे,उतरे कपडे को मुफ्त ना दे,घ्रर मे खुस्बु वाला माहोल रखे खासकर परफ़ुम का उपयोग करे,दान कोइ भि करे अपनी कून्डली अनुसार सलाह लेकर करे,घ्रर कि पहेली रोटी गौ-कुते-कौए को दे,अपने कुम्बे मे और पडोसी से अच्छे रिस्ते रखे,किसि कि मजाक मस्करी ना करे,किसि का बुरा ना करे या ना सोचे,अपने पुर्वजो के देवि देवता ब्राहमन को ना बदले,अपने पुर्वजो के पित्रु निमित जो विधान है वो बन्ध ना करे,जय माता दी JAY MATA DI KI लोगो को जानकारि मिले इसलिये मेरा पेज लाईक करे और उस्मे जो पोस्ट दि है वो लोगो मे शेर करे जिस्कि वजह से लोग बिना इलाज के सिर्फ परहेज का पालन करके सुख पा शकते है जय माता दि

52 वीर एवम वीर कंगन साधना
****
वीर मूल रूप से भैरवी के अनुयायी होते है और भगवान भैरव की उपासना करके उनके गण कहलाते है जैसे भगवान भैरव महादेव महाकाल के गण है उसी प्रकार वीर भैरव के गण कहलाते है।भैरव भगवती काली के पुत्र है इसी कारण वीर देवी महाकाली के दूत भी कहलाते है ,जब भी आप शत्रु के सर्वनाश के लिए महाकाली का कोई अनुष्ठान करते है तो सर्वप्रथम शत्रु पर वीर चलाकर एक बार चेतावनी देने का विधान है इस चेतावनी के बाद ही काली की शक्ति शत्रु पे कार्य करती है।
वीर साधना का विधान बह्त ही गुप्त है वीर साधना 61 दिन तक एक कमरे में बंद हो कर करनी पड़ती है जहां साधक का मुख 61 दिन तक गुरु के अलावा कोई नही देख सकता ,साधना काल मे महाकाली एवं भैरव-हनुमान की प्रतिमा के अलावा 52 पुतलियों की आवश्यकता होती है।काला वस्त्र एवं आसान का उपयोग होता है इस साधना काल ने 61 दिन ,दाँतो को साफ करना,बाल काटना,बालो में तेल लगाना,नहाना,खाना खाने के बाद मुख शोधन करना,कपडे बदलना या धोना,नाखून-बाल काटना,नाक-कान साफ करना,झूठे बर्तनों को धोना,जिन बर्तनों में भोजन सामग्री बनाई जाती है उस बर्तन को धोना इत्यादि सब मना होता है।यह साधना स्मशान में ज्यादा फलीभूत होती है किंतु स्मशान में 61 दिन निरंतर साधना करना सामान्य साधको के लिए सुलभ नही होता ऐसे में साधको को स्मशान से मिट्टी या भस्म (नियम विधि)पूर्वक लाकर कमरे में स्थापित कर ,कमरे को स्मशान समझते हुए 61 दिन करनी होती है।इस साधना का एक गुप्त मंत्र है जिसमे 52 विरो के नाम का सम्बोधन किया जाता है उनका आह्वाहन किया जाता है ये साधना बह्त दुष्कर है सभी विरो का भोजन अलग अलग होता है और साधक को ये भोग स्वंय बनाकर देवताओ को अर्पित करना होता है।1994 में गुरुदेव के शिव शंकर नाथ जी के सानिध्य में इस साधना को मैंने किया था किंतु ये साधना उस समय सम्पूर्ण नही हो पाई थी जिस कमरे पे साधना की जा रही थी उस स्थान कमरे के पास रहने वाली दो कन्याओं पे अचानक देवियो का आवेश आ गया था और वो दोनों कन्याये पूजा स्थान पे पहुँच जाती थी और गालियां देती हुई कमरे के दरवाजों पे पत्थर इटे मारना शुरू कर देती थी इससे स्थानीय लोग भयभीत हो गए थे जिससे 43 दिन की साधना के उपरांत साधना को ठंडा करना पड़ा था कालांतर में गुरुदेव के समाधि लेने के बाद ,स्वप्न में गुरुदेव का आदेश मिलने पर 2007 में यह साधना भिलाई से 43 किलोमीटर दूर शिवनाथ नदी के तट पर सम्पन्न की गई थी।जिसमे सफलता प्राप्त हुई थी किन्तु बार-बार विरो को कार्य देने में सक्षम ना होने के कारण मैंने उनका विसर्जन इस वचन के साथ कर दिया था कि जब भी मैं उनका आह्वाहन करू उनको आना होगा ।
कुछ लोग इस साधना द्वारा वीर कंगन एवं वीर मुद्रिका का निर्माण कर विरो को कंगन या मुद्रिका में स्थान दे देते है किंतु इस कंगन को सम्हालना सबके बस की बात नही होती है।इन साधनाओ को करने के बाद मैंने जाना कि इन साधनाओ से लाभ कम समाज की हानि ज्यादा है क्योंकि यहां सहायता के लिए साधना कौन करता है सभी का कोई ना कोई स्वार्थ ही होता है।
चामुंडा जी के सेवक इस साधना को आसानी से कर सकते है।
ये पूर्ण रूप से तांत्रिक शाक्त मत की साधना है तांत्रिको को इसमे सफलता प्राप्त होती है।इस साधना को करने के पूर्व साधक को गुरु के शरण मे रहकर शक्तिशाली शरीर रक्षा मंत्र को सिद्ध करना होता है इस शरीर रक्षा कि सिद्धि पहले ही 43 दिन में कर लेनी चाहिए ,शरीर रक्षा के लिए मैंने गुरु मुख से प्राप्त "साबर लक्ष्मण रेखा मंत्र" का प्रयोग किया था जो लक्ष्मण जी ने सीता जी की सुरक्षा के लिए उपयोग किया था जिसको तोड़ पाना महाप्रतापी रावण के बस में भी नही था।इस साधना को एक बार सिद्ध करने के बाद समाज के कल्याणार्थ बह्त से वीर कंगन या मुद्रिका बनाई जा सकती है इसमें सामग्री कोई ज्यादा मूल्यवान नही होती किन्तु मूल्य 61 दिन के समय एवं जोखिम का हो सकता है।
साधक चाहे तो गुरु आदेश से एक-एक वीर की 7 दिवसीय साधना भी कर के भी सिद्धि प्राप्त कर सकता है किंतु ऐसे में सवा वर्ष का समय लगता है और सवा वर्ष नियम पालन करना सबके बस की बात नही होती।

52 विरो के नाम
****
स्थान एवं जाती भेद के अनुसार इनके नामो में भेद हो सकता है।
01. क्षेत्रपाल वीर
02. कपिल वीर
03. बटुक वीर
04. नृसिंह वीर
05. गोपाल वीर
06. भैरव वीर
07. गरूढ़ वीर
08. महाकाल वीर
09. काल वीर
10. स्वर्ण वीर
11. रक्तस्वर्ण वीर
12. देवसेन वीर
13. घंटापथ वीर
14....रुद्रवीर
15. तेरासंघ वीर
16. वरुण वीर
17. कंधर्व वीर
18. हंस वीर
19. लौन्कडिया वीर
20. वहि वीर
21. प्रियमित्र वीर
22. कारु वीर
23. अदृश्य वीर
24. वल्लभ वीर
25. वज्र वीर
26. महाकाली वीर
27. महालाभ वीर
28. तुंगभद्र वीर
29. विद्याधर वीर
30. घंटाकर्ण वीर
31. बैद्यनाथ वीर
32. विभीषण वीर
33. फाहेतक वीर
34. पितृ वीर
35. खड्ग वीर
36. नाघस्ट वीर
37. प्रदुम्न वीर
38. श्मशान वीर
39...भरुदग वीर
40. काकेलेकर वीर
41. कंफिलाभ वीर
42. अस्थिमुख वीर
43. रेतोवेद्य वीर
44. नकुल वीर
45. शौनक वीर
46. कालमुख
47. भूतबैरव वीर
48. पैशाच वीर

49. त्रिमुख वीर
50. डचक वीर
51. अट्टलाद वीर
52. वासमित्र वीर
(इस पोस्ट में 52 विरो का नामो का संकलन किया गया है)

व्यक्तिगत अनुभूति एवं।विचार©2017
।। महाकाल राहुलनाथ।।™
भिलाई,छत्तीसगढ़,भारत
पेज लिंक:-https://www.facebook.com/rahulnathosgybhilai/
🚩🚩🚩JSM OSGY🚩🚩🚩

सृष्टिस्थितसंहार मेलन रूपेयं तुरीया संविद्भट्टारीका
तत्तत्श्रिष्टियादयादिभेदनुदवमंती सहरन्ती च सदा पूर्णा च कृशा
चोभयरूपा चानुभय रूपा चाक्रममेव सफुरन्ति स्थिता

विधः पुरुष परम् हंस अवस्था मे शिशु भाव धारण कर इस महाशक्ति को मातृ रूप में मानते है

स्वामी राम कृष्ण परमहंस ,बाम गुरु वामा,स्वामी विवेकानन्द ,कविराज गोपीनाथ ,स्वामी भावानन्द ,आदि माता को करुणामयी बत्सल्य से भरपूर मानते है ।

😊((हृदय पयोधि भरे स्वामी जी यहा कहते है माता आपके हृदय में अमृत भरा है))

वह महामाया इतना विस्तार लेती है परम् शक्ति की माया से मोहित संसार के प्राणी उस परम परमेश्वरी की माया को समझ ही नही पाते ।

सदा सर्वदा उनके सिवा पूजन फलदायक सरल अन्य कोई है ही नही ।

जोप्राणी जिस भाव से महा शक्ति को पूजन करता है वह उसी भाव से फल को प्राप्त करता है ।

वह भिन्न स्थानों पर भिन्न नामो से जानी जाती है वह परमा शक्ति

कांची कामकोटी में कामाक्षी ,केरल में कुमारिका ,गुजरात मव अम्बा ,कामरूप में कामाख्या ,प्रयाग में ललिता,विंध्याचल में विंध्यवासिनी, वाराणसी में विशालाक्षी ,गया में मंगलावती,बंगाल में सुंदरी ,नेपाल गुह्येश्वरी,आदिभिन्न भिन्नस्थानो पर वह महामाई सर्व मंगल करने वाली सर्वार्थ भट्टारिका वह महभगवती साधको एवम भक्तो का कल्याण करने हेतु विराजमान है ।।

क्रमशः

समर्पित श्री गुरुदेव ।

दस महाविदानुसन्धान व प्रसार केंद्र.
साकेत धाम श्री अयोध्या जी

Aum jay mata bhagavati KALI
One should follow puja system. Step by step
It is called as. " kram "
It is by sanskrit sacred mantra
In the long. Run
.by samhar mudra
Puja will be. Ended

Nb (i will explained what is samhar mudraa. Later on.)

After puja ending

I pray to mother from my heart.

Aavahanam na. Janaami. Na jaanami pujanam visarjanam na janaami. Kshamashwa parameshwaree. ""

To pranaam to mata kali
It is modesty. No feel proud in my puja..
Pujaaree should think he or. She. Is. Child
Ma kali is mother of us

We should surrender to mother
Just as. Chiild

"" sharaana gati. "

-------panditji

Jyotishacharya. (Gold. Medalist.)

Hasta rekha shastri.

Mob. 09933116909. // 08337856577
Kharagpur town

West bengal

India
Aum tat. Sat

अनुवाद देखें

ॐ।

श्री राधे

जय माँ तारा।।

जय माँ कामख्या की।

1. प्रत्येक शनिवार को पीपल के वृक्ष पर जल, कच्चा दूध थोड़ा चढ़ाकर, सात परिक्रमा करके सूर्य, शंकर, पीपल- इन तीनों की सविधि पूजा करें तथा चढ़े जल को नेत्रों में लगाएं और पितृ देवाय नम: भी 4 बार बोलें तो राहु+केतु, शनि+पितृ दोष का निवारण होता है.
2. प्रात:काल उठते ही माता-पिता, गुरु एवं वृद्धजनों को प्रणाम करें और उनका आत्मिक आशीर्वाद प्राप्त करके दिन को सफल बनाएं. इसके साथ ही 5 सुगंधित अगरबत्ती लगाकर दिन की शुरूआत करें.
3. नित्य प्रति गाय को गुड़-रोटी दें. हो सके तो गाय का पूजन करके 'आज के दिन यह कामधेनु वांछित कार्य करेगी' ऐसी प्रार्थना मन में करें.
4. नित्य प्रति कुत्तों को रोटी खिलानी चाहिए और पक्षियों को दाना भी डालें तो शुभ है. 5. घर आए मेहमानों की सेवा निष्काम भाव से करनी चाहिए क्योंकि अतिथि को भगवान तुल्य माना गया है.
6. हमेशा प्रात:काल भोजन बनाते समय माताएं-बहनें एक रोटी अग्निदेव के नाम से बनाकर घी तथा गुड़ से बृहस्पति भगवान को अर्पित करें तो घर में वास्तु पुरुष को भोग लग जाता है. इससे अन्नपूर्णा भी प्रसन्न रहती हैं.
7. प्रात: स्नान करके भगवान शंकर के शिवलिंग पर जल चढ़ाकर 108 बार 'ॐ नम: शिवाय मंत्र की पूजा से युक्त दंडवत नमस्कार करना चाहिए।।श्री राधे ।गुरु कृपा ।।

ॐ

श्री राधे

जय माँ तारा

जय माँ कामख्या की।

वैदिक रक्षा सूत्र हेल्थ के लिए बहुत बढ़िया है आजमाकर देखे लाभ मिलेगा जिसको लगता हो मेरे परिवार में किसी ने कुछ किया है तो किसी भी दिन यह कार्य कर सकते है इस से आप के जीवन में आने वाली मुसीबत टल जायेगी यह तांत्रोक्त प्रयोग है :इसके लिए 5 वस्तुओं की आवश्यकता होती है –(१) दूर्वा (घास) (२)अक्षत (चावल) (३) केसर (४) चन्दन (५) सरसों के दाने ।

इन ५ वस्तुओं को रेशम के कपड़े में लेकर उसे बांधदें या सिलाई कर दें, फिर उसे

कलावा में पिरो दें, इन पांच वस्तुओंका महत्त्व –(१) दूर्वा - जिसप्रकार दूर्वा का एक अंकुर बो देने पर तेज़ी से फैलता है और

हज़ारों की संख्या में उग जाता है, उसीप्रकार मेरे बेटे या पति का वंश और उसमे सदगुणों

का विकास तेज़ी से हो । सदाचार, मन कीपवित्रता तीव्रता से बदता जाए । दूर्वा

गणेश जी को प्रिय है अर्थात हम जिसे हमबाँधरहे हैं, उनके जीवन में विघ्नों

का नाश हो जाए ।(२) अक्षत - हमारीगुरुदेव के प्रति श्रद्धा कभी क्षत-विक्षत ना हो सदा अक्षत

रहे ।(३) केसर - केसर कीप्रकृति तेज़ होती है अर्थात हम जिसे हम सूत्र बाँध रहे हैं, वह

तेजस्वी हो । उनके जीवन में आध्यात्मिकता का तेज, भक्ति कातेज कभी कम ना हो ।(४) चन्दन - चन्दनकी प्रकृति तेज होती है और यह सुगंध देता है । उसी प्रकार

उनके जीवन में शीतलता बनी रहे, कभीमानसिक तनाव ना हो । साथ ही उनके जीवन में परोपकार, सदाचार और संयम की सुगंध

फैलती रहे ।(५) सरसों के दाने- सरसों की प्रकृति तीक्ष्ण होती है अर्थात इससे यह संकेत

मिलता है कि समाज के दुर्गुणों को, कंटकों कोसमाप्त करने में हम तीक्ष्ण बनें

येन बद्धो बलि राजा, दानवेन्द्रोमहाबलः ।तेन त्वाम रक्षबध्नामि, रक्षे माचल माचल: ।।।श्री राधे।। गुरु कृपा केवलं।।

ब्रह्म मुहूर्त में उठने की परंपरा क्यों?

ब्रह्म मुहूर्त क्या है ? ब्रह्म मुहूर्त में उठने के वैज्ञानिक लाभ क्या हैं ? ब्रह्म मुहूर्त का ही विशेष महत्व क्यों ? रात्रि के अंतिम प्रहर को ब्रह्म मुहूर्त कहते हैं। हमारे ऋषि मुनियों ने इस मुहूर्त का विशेष महत्व बताया है। उनके अनुसार यह समय निद्रा त्याग के लिए सर्वोत्तम है। ब्रह्म मुहूर्त में उठने से सौंदर्य, बल, विद्या, बुद्धि और स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। सूर्योदय से चार घड़ी (लगभग डेढ़ घण्टे) पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में ही जग जाना चाहिये। इस समय सोना शास्त्र निषिद्ध है। ब्रह्म का मतलब परम तत्व या परमात्मा। मुहूर्त यानी अनुकूल समय। रात्रि का अंतिम प्रहर अर्थात प्रात: 4 से 5.30 बजे का समय ब्रह्म मुहूर्त कहा गया है।

“ब्रह्ममुहूर्ते या निद्रा सा पुण्यक्षयकारिणी”।

(ब्रह्ममुहूर्त की निद्रा पुण्य का नाश करने वाली होती है।) सिख धर्म में इस समय के लिए बेहद सुन्दर नाम है-’अमृत वेला , जिसके द्वारा इस समय का महत्व स्वयं ही साबित हो जाता है। ईश्वर भक्ति के लिए यह महत्व स्वयं ही साबित हो जाता है। ईवर भक्ति के लिए यह सर्वश्रेष्ठ समय है। इस समय उठने से मनुष्य को सौंदर्य, लक्ष्मी, बुद्धि, स्वास्थ्य आदि की प्राप्ति होती है। उसका मन शांत और तन पवित्र होता है। ब्रह्म मुहूर्त में उठना हमारे जीवन के लिए बहुत लाभकारी है। इससे हमारा शरीर स्वस्थ होता है और दिनभर स्फूर्ति बनी रहती है। स्वस्थ रहने और सफल

होने का यह ऐसा फार्मूला है जिसमें खर्च कुछ नहीं होता। केवल आलस्य छोड़ने की जरूरत है। प्रात: काल उठने के पश्चात हस्त दर्शन का भी शास्त्रीय विधान है । कराग्रे वसति लक्ष्मी, करमध्ये सरस्वती । कर मूले स्थितों ब्रह्मा, प्रभाते कर दर्शनम् ॥

भगवान के स्मरण के बाद दही, घी, आईना, सफेद सरसों, बैल, फूलमाला के दर्शन भी इस काल में बहुत पुण्य देते हैं।

पौराणिक महत्व - वाल्मीकि रामायण के मुताबिक माता सीता को ढूंढते हुए श्रीहनुमान ब्रह्ममुहूर्त में ही अशोक वाटिका पहुंचे। जहां उन्होंने वेद व यज्ञ के ज्ञाताओं के मंत्र उच्चारण की आवाज सुनी। शास्त्रों में भी इसका उल्लेख है-

वर्ण कीर्तिं मतिं लक्ष्मीं स्वास्थ्यमायुश्च विदन्ति।

ब्राह्मे मुहूर्ते संजाग्रच्छि वा पंकज यथा॥

- भाव प्रकाश सार-93

अर्थात- ब्रह्म मुहूर्त में उठने से व्यक्ति को सुंदरता, लक्ष्मी, बुद्धि, स्वास्थ्य, आयु आदि की प्राप्ति होती है। ऐसा करने से शरीर कमल की तरह सुंदर हो जाता है।

अच्छे स्वास्थ्य का रहस्य

हमारे धर्मग्रंथों में ब्रह्म मुहूर्त में उठने का सबसे बड़ा लाभ अच्छा स्वास्थ्य बताया गया है। क्या है इसका रहस्य? दरअसल सुबह चार बजे से साढ़े पांच बजे तक वायुमंडल में यानी हमारे चारों ओर आक्सीजन अधिक होती है। वैज्ञानिक खोजों से पता चला है कि इस समय आक्सीजन 41 प्रतिशत, करीब 55 प्रतिशत नाइट्रोजन और 4 प्रतिशत कार्बन डाईआक्साइड गैस रहती है। सूर्योदय के बाद वायुमंडल में आक्सीजन कम

और कार्बन डाईआक्साइड बढ़ती है। आक्सीजन हमारे जीवन का आधार है। शास्त्रों में इसे प्राणवायु कहा

गया है। ज्यादा आक्सीजन मिलने से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है। ब्रह्म मुहूर्त और प्रकृति ब्रह्म मुहूर्त और प्रकृति का गहरा नाता है। इस समय में

पशु-पक्षी जाग जाते हैं। उनका मधुर कलरव शुरू हो जाता है। कमल का फूल भी खिल उठता है। मुर्गे बांग
देने लगते हैं। एक तरह से प्रकृति भी ब्रह्म मुहूर्त में चैतन्य हो जाती है। यह प्रतीक है उठने, जागने का। प्रकृति
हमें संदेश देती है ब्रह्म मुहूर्त में उठने के लिए। इसलिए मिलती है सफलता व समृद्धि आयुर्वेद के अनुसार ब्रह्म मुहूर्त में उठकर टहलने से शरीर में
संजीवनी शक्ति का संचार होता है। यही कारण है कि इस समय बहने वाली वायु को अमृततुल्य कहा गया
है। इसके अलावा यह समय अध्ययन के लिए भी सर्वोत्तम बताया गया है क्योंकि रात को आराम करने के बाद सुबह जब हम उठते हैं तो शरीर तथा
मस्तिष्क में भी स्फूर्ति व ताजगी बनी रहती है।

प्रमुख मंदिरों के पट भी ब्रह्म मुहूर्त में खोल दिए जाते हैं तथा भगवान का श्रृंगार व पूजन भी ब्रह्म मुहूर्त में
किए जाने का विधान है। ब्रह्ममुहूर्त के धार्मिक, पौराणिक व व्यावहारिक
पहलुओं और लाभ को जानकर हर रोज इस शुभ घड़ी में जागना शुरू करें तो बेहतर नतीजे मिलेंगे। ब्रह्म मुहूर्त में उठने वाला व्यक्ति सफल, सुखी और
समृद्ध होता है, क्यों? क्योंकि जल्दी उठने से दिनभर के कार्यों और योजनाओं को बनाने के लिए पर्याप्त
समय मिल जाता है। इसलिए न केवल जीवन सफल होता है। शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने
वाला हर व्यक्ति सुखी और समृद्ध हो सकता है। कारण वह जो काम करता है उसमें उसकी प्रगति होती है।

जय हो प्रभु,

आज बृहममुहर्त में आपकी नींद खराब हुई तो दूसरों की क्यों जान लेने पर तुले हो,

जो रात को 1 बजे सोयेगा, उसका बृहममुहर्त ? बताने का कष्ट करें.

जय हो प्रभु,

रात को 1 बजे सोयेगा, उसका बृहममुहर्त समय ? बताने का कष्ट करें।

किन्तु मजबुरी हैं, मेरी मुझसे मुलाकात ही 9 बजे के बाद होती हैं, उससे पहले तो जिन्दगी पशु समान यंत्रवत चलती रहती हैं, अब मैं अपने से भी मुलाकात के लिये समय ना निकाल पांऊ तो जीवन तो व्यर्थ ही हुआ ना ?

दिन भर के अपने कार्य कलापों का आंकलन मानव यदि चाहे तो रात्री में ही कर सकता हैं और अपने आज के आंकलन से आने वाला कल में अपने कार्यकलाप में सुधार कर सकता हैं ।

ये एक बार उठने का ज्ञान आपको मुबारक, कई बार उठकर देखा, कोई मतलब नही निकलता, सब कहते सुनने की बाते हैं कुछ हासिल नहीं होता हम कर्म करने वाले लोग हैं और हमारी दिनचर्या कर्म पर आधारीत होती हैं, ना की पोथी पुराणों के उस समय के आंकलन के अनुसार.

और जहां तक मेरा विचार हैं बृहममुहर्त की परीकल्पना उस परीस्थिति में सार्थक थी जब रात्री के प्रकाश के समस्या थी, वर्तमान परीस्थिति के परीपेक्ष्य में शहरों में रात्री 9 बजे से दिनचर्या प्रारंभ होती हैं, क्या कहेंगे आप ?

आलसीपनः-हमारी और आपसी आलसी की परीभाषा अलग अलग हैं, सुबह उठने से आपकी परीभाषा में आलसी होना हैं हमारी परीभाषा में जल्दी सोना आलसी की परीभाषा हैं.

झुठः- अब यह बृहममुहर्त में झुठ कहां से आ गया ? प्रात: पाँच बजे, मठार देव बाबा पर गैंग पायी जाती थी उसमें हमारा भी नाम था ।

वैसे सर एक बात तो आप भी मानेंगे जैसे जैसे सेवानिवृति का समय करीब आने लगता हैं मानव कुछ ज्यादा ही बच्चों को ज्ञान देनें लगता हैं, यह ज्ञान उसके जीवन भर का निचोड भले ही ना हो, किन्तु जीवन में जो उसने खोया कोई दूसरा उसका अपना उस चीज को ना खो पाये यही उसकी मंशा रहती हैं, यह गलत भी नहीं कहा जा सकता क्योकिं यही संस्कार वह अपने बच्चों में देखना चाहता हैं, जो शायद उचित भी हैं किन्तु उस बुजुर्ग के संस्कार उसकी उस समय की तात्कालिक परीस्थिति के मान से तो सही थे किन्तु वर्तमान में उनमें से कई चीजों में परिस्थिति के अनुसार मेरी नजर में कुछ मौलिक परिवर्तन आवश्यक हैं, इसमें हम अपनी अगली पिढी ऐसे संस्कारों से विमुख हैं यह भी नहीं कह सकते, संस्कारों में परिस्थिति अनुसार परिवर्तन का तो मैं पक्षधर हूं किन्तु घर, परीवार, समाज को गर्त में ले जाने तक के परीवर्तन का भी पक्षधर नही, मैंने बैरागी कुल में पैदा होकर कई गलत संस्कारों, परीपाटियों का विरोध किया हैं, किन्तु ऐसा कोई कार्य मैने या मेरे बच्चों ने नहीं किया जिससे घर, परीवार पर कोई उंगली उठा कर नीचा दिखा सके, यही मैं अपने जीवन की बडी उपलब्धि मानता हूं, यह सोच और अपनी सोच को क्रियान्वित करने के लिये मुझे अपने आप से कुछ सवाल जवाब करने होते हैं जिसके लिये मेरे पास समय नहीं हैं, जाने क्यों बचपन से एक आदत हैं दिन भर के विचारों पर मंथन और आने वाले कल की राह तय करने का समय रात्री 9:00 बजे के बाद ही मिलता हैं, जहां सवाल भी मेरे होते हैं और जवाब भी मेरे, उस समय जब मैं अपनी अंतरात्मा के साथ विचार विमर्श कर रहा होता हूं तो मुझे अपने स्वयं के भलो बुरे के आंकलन के लिये किसी तीसरे की आवश्यकता नहीं होती, और यह विचार मंथन से निकला अमृत मेरे जीवन का सार बन जाता हैं, वही यदि मैं ब्रह्ममुहर्त में उठता हूं तो विचार शून्य रहता हूं और इस अवस्था में स्वयं का आकलन बहुत कठीन हो जाता हैं किन्तु यह मैं भी मानता हूं कि बृहममुहर्त में मानव परमात्मा की पूजा का कर्मकांड कर सकता हैं किन्तु अंतरात्मा से स्वयं का साक्षात्कार जब तक ना हो कोई भी पूजा का कर्मकांड सफल नहीं माना जा सकता, सर्वप्रथम स्वयं की आत्मा से साक्षात्कार जरूरी हैं, मैं भगवान का विरोधी नहीं किन्तु उसे किसी ने नहीं देखा, महसूस जरूर किया हैं कई रूपों में किन्तु सर यह आत्मा तो मैं जब से अस्तित्व में आया तब से मेरे साथ हैं मुझे भगवान से ज्यादा अच्छी तरह महसुस होती हैं, यह मेरा मार्ग प्रशस्त करती रही हैं रनींग 60 तक तो किया हैं और आगे भी करती रहेगी यही मेरा विश्वास हैं, क्यों जब तक आत्मा हैं शरीर में तब तक इस शरीर का अस्तित्व हैं उसी आत्मा ने उत्तम कर्म हेतू इस शरीर में अपना घर बनाया हैं, जब वह चली जायेगी तो यह शरीर तो वैसे भी मिट्टी हैं और मिट्टी में ही मिल जायेगा, फिर मैं कहां रह गया जो अंदर हैं वही बाहर हैं यह मेरी सोच हैं, मैं वैसा नहीं हूं कि अंदर कुछ बाहर कुछ और इसी तालमेल को उचित रूप से संमपन्न करने के लिये मुझे मेरे लिये समय चाहिये अतः आपके निर्देश का नकारने की घृष्टता कर रहा हूं, हां यह सही हैं कि बृहम मुहर्त में उठना चाहिये किन्तु नौकरी से मुक्ति के पश्चात यह प्रयास पुनः प्रारंभ करूंगा, यह दिनचर्या का छोटा सा बदलाव हैं, जो कोई मुश्किल कार्य नहीं हैं, किन्तु वर्तमान समय में दिनचर्या का यह परीवर्तन मुझे अपनी कार्यशैली में बदलाव की अनुमति नहीं देता, किन्तु भविष्य में, मैं आवश्य इस धारणा को सत्य साबित करूंगा कि, बृहममुहर्त में उठना मानव को नये रास्ते पर ले जाने का उत्तम मार्ग हैं।